NOT FOR SALE

श्री लक्ष्मी सिद्धि विशेषांक

अक्टूबर 2002

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

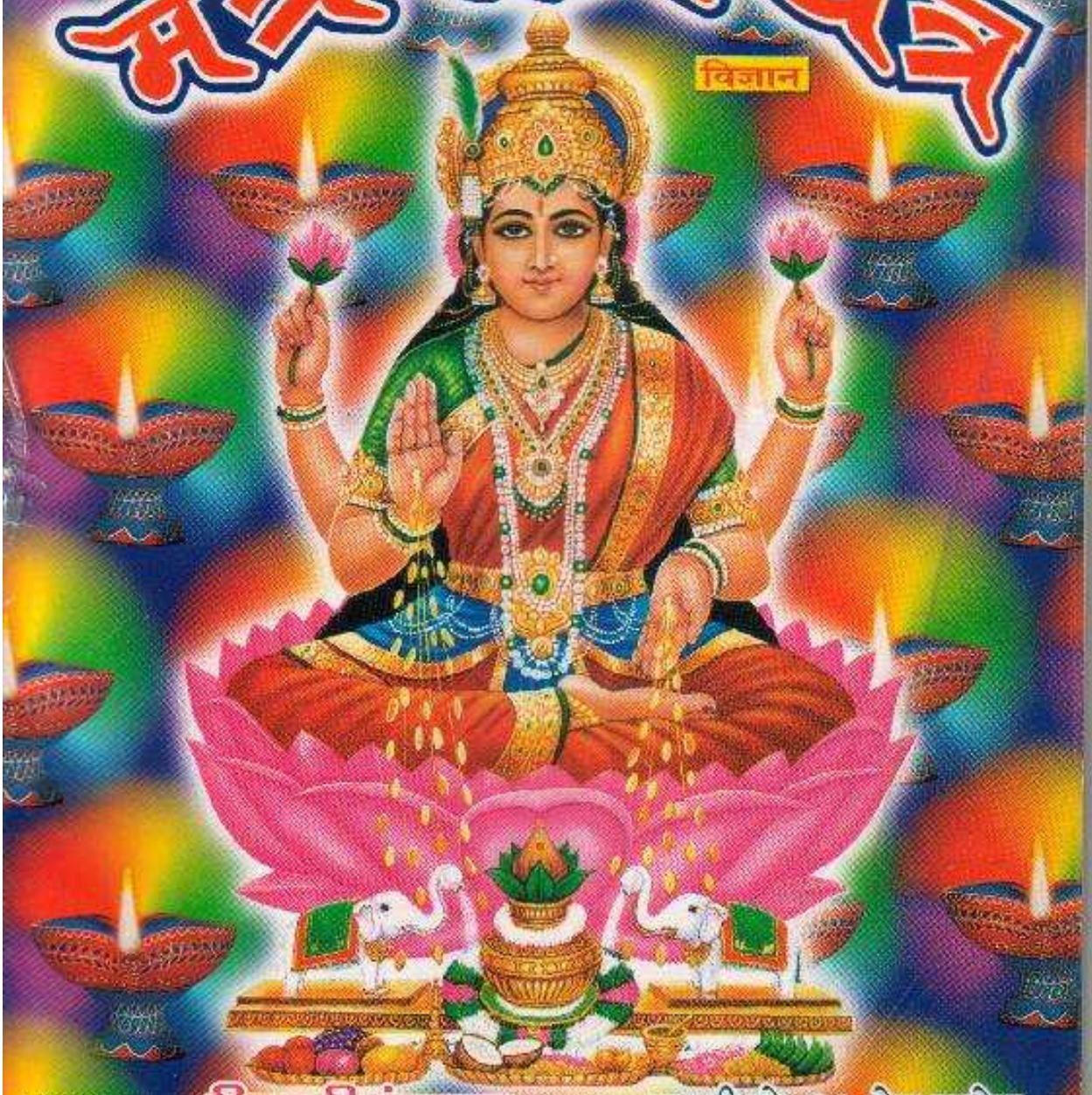

A Monthly Journal

दीपावली पंचकल्प

धनवन्तरी आरोग्य साधना

लक्ष्मी के २१ श्रेष्ठ प्रयोग

श्री गणेश स्तोत्र

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of hinduism server]
KAPWING

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5

गुरु वाणी 44

स्तम्भ

नक्षत्रों की वाणी 61

मैं समय हूं 63

वराहमहीर 64

जीवन सरिता 59

इस मास दिल्ली में 80

एक दृष्टि में 86

वर्ष 22 अंक 10

अक्टूबर 2002 पृष्ठ 88

साधना

धन्वन्तरी साधना 46

रूप अनंग साधना 50

महालक्ष्मी साधना 55

अग्निविद्या साधना 65

लक्ष्मी प्रयोग

दरिद्रता निवारक प्रयोग 69

सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग 69

ऋण बाधा निवारण के लिए 70

धनदा साधना 71

दरिद्रता नाश हेतु प्रयोग 71

वसुधा लक्ष्मी प्रयोग 72

व्यापार उन्नति के लिए 72

अटूट धन लाभ के लिए 73

दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग 73

लक्ष्मी दोष निवारण हेतु 73

गड़े हुए धन प्राप्ति हेतु 74

खोए हुए धन की प्राप्ति 75

आकस्मिक धन प्राप्ति 75

अष्ट लक्ष्मी प्रयोग 75

अन्नपूर्णा प्रयोग 76

अपार संपदा प्राप्ति 76

रोजगार प्राप्ति 77

लक्ष्मी गणेश प्रयोग 78

विवेचन

लक्ष्मी साधना क्यों 22

दीपावली पंच कल्प 30

स्तोत्र

श्रीगणेश स्तोत्र 82

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक

श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक

श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक

श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नीरू आर्ट प्रिन्टर्स C-178, नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया फेस 2, नई दिल्ली से मुद्रित तथा मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक गुमनाम साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवावें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में १६५/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या सन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर अपना वर आचरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही वे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

ब्रह्मानन्द परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥

ब्रह्मानन्द स्वरूप, शिष्यों को परमानन्द देने वाले, साक्षात ज्ञान की मूर्ति, सुख-दुःखादि द्वन्द्वों से रहित, आकाश के समान निर्मल, 'तत्वमसि' आदि वेद वाक्यों के द्वारा ज्ञेय, एकात्मरूप, सदैव सर्वत्र रहने वाले, परम-पावन माया से विचलित, न सभी जीवों के मन के साक्षीभूत रूप, मन के विचारों से न जानने योग्य, सत्व, रज और तमोगुण से परे श्री सद्गुरुदेव को मैं प्रणाम करता हूं।

★ श्रद्धा के बिना सिद्धि नहीं ★

एक बाबूजी थे। अंग्रेजी पढ़े-लिखे, कोट-बूट हैट-पतलून पहनने वाले। वे सदा अंग्रेजी ही बोलते थे। नौकर पर बिगड़ते तो अंग्रेजी में गाली देते और कुत्ते पर प्रसन्न होते तो अंग्रेजी में आशीर्वाद देते। बाबू जी को एक लड़का था। दुर्भाग्य से वह बीमार हो गया। डॉक्टर आये। एक, दो, चार डॉक्टर आये और लड़के की भुजा में सुई चुभाकर चले गये। वैद्य आये, हकीम आये, वटिका दी और दवा खिलायी, पर लड़का अच्छा नहीं हुआ। उसकी बीमारी बढ़ती गई। एक दिन एक साधु आये। साधु ने कहा -'हनुमान्‌जी को सिन्दूर चढ़ा दो और सवा सेर लड्डू, तो लड़का अच्छा हो जायेगा।

बाबू जी ने कहा - मैं पत्थर को पत्थर ही मानता हूं, पर तुम कहते हो तो सिन्दूर पोतकर लड्डू दिखा आऊंगा, लड़के के अच्छे होने की लालच में इतना कर आये।

परंतु लड़के की बीमारी वैसी ही रही। सवेरे बाबूजी साधु के पास गये और बोले कि 'लड़का अच्छा नहीं हुआ'। साधु ने कहा- लाओ मुझे दो सिन्दूर, घी, मिठाई, फूल और धूपबत्ती।

साधु ने हनुमान जी की पूजा की और प्रसाद का सिन्दूर लड़के के पर लाकर लगा दिया। लड़का उठकर बैठ गया। उसका ज्वर उतर गया। बाबूजी ने आश्चर्य से पूछा- 'तुम्हारी पूजा से यह अच्छा हो गया, मेरी पूजा से क्यों नहीं अच्छा हुआ?'

'तुमने पूजा ही कहाँ की? साधु ने कहा-

'बिना श्रद्धा के पूजा कैसी और बिना पूजा के बीमारी कैसे मिटती? वास्तव में श्रद्धा और विश्वास से ही पूजा सफल होती है।

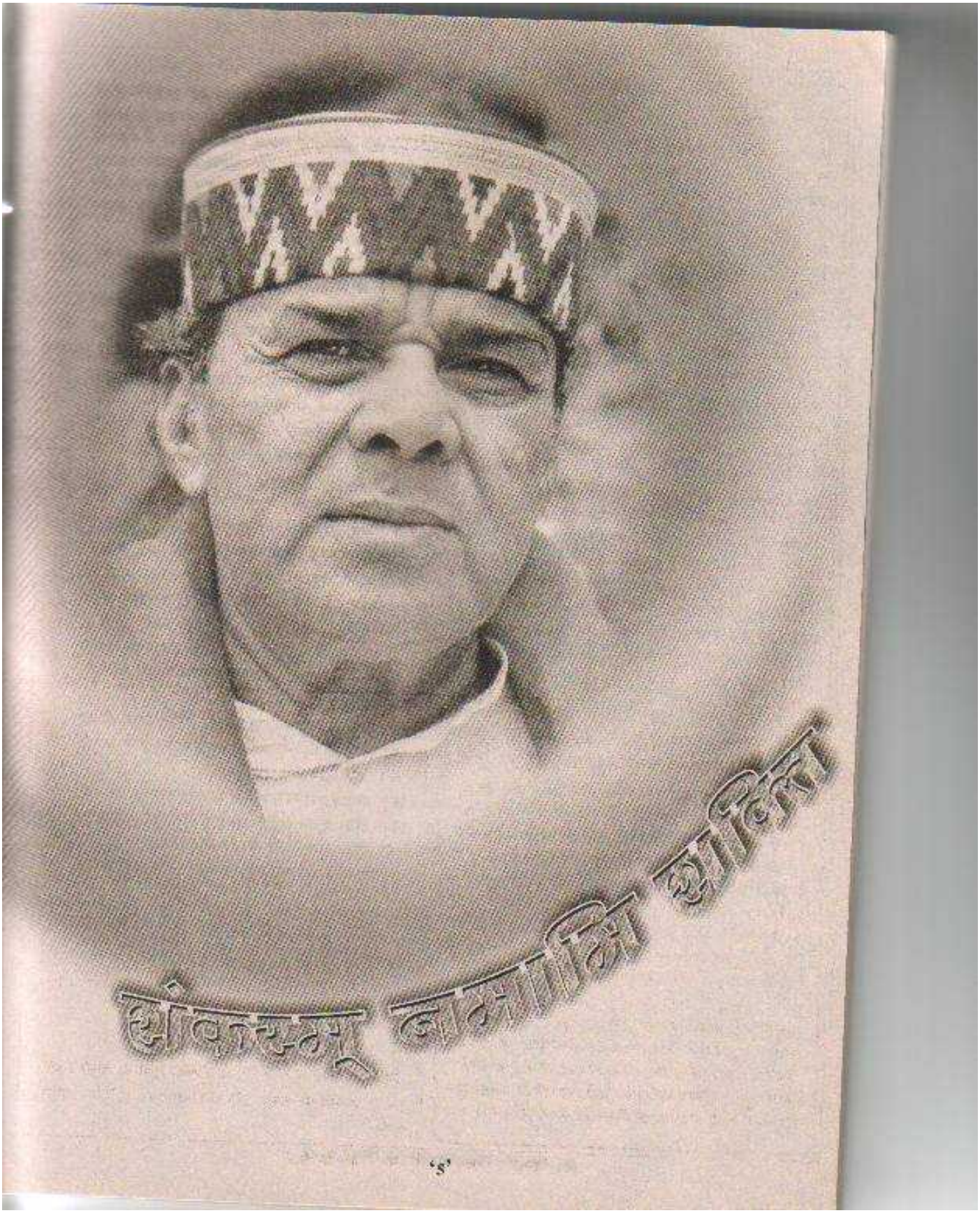
श्रीवसन्त बामाजि शिंदे

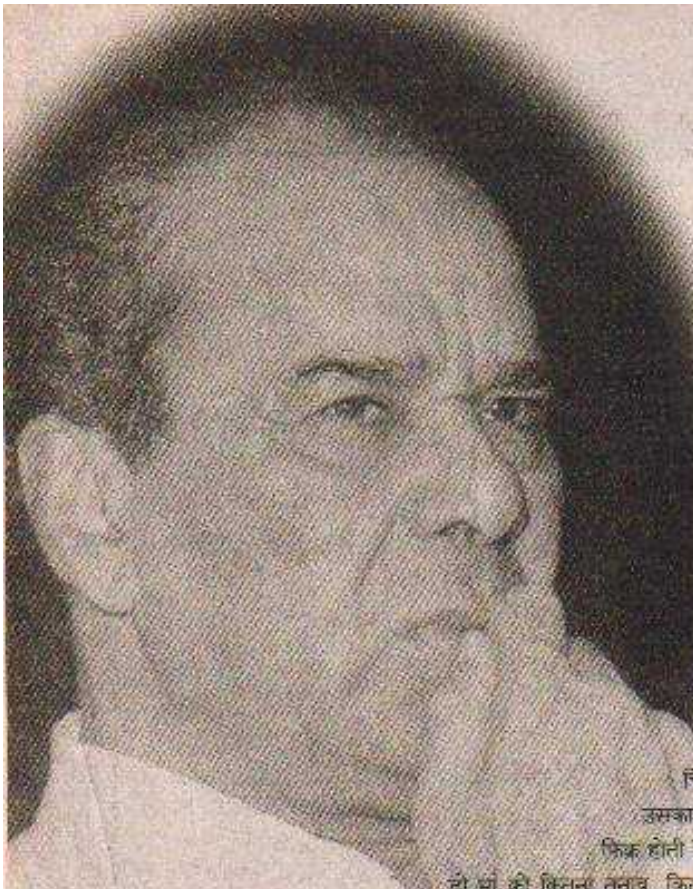

सेवा त्याग और जीवन को उचित रूप से जीने का क्या भाव है गुरु गोरखनाथ के शब्दों को गुरुदेव ने सहज भाव से दिया है जिससे समझा जा सके कि समाज में रहकर समाज से परे होकर कैसे अद्वितीय बन सकते हैं। सद्गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में एक महान कथन-

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तेश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

भगवति जगदम्बा सकल विश्व की मातृ स्वरूपा आध्यात्मिक देवी हैं, जो अपने भक्तों और साधकों की उसी प्रकार से रक्षा करती है जिस प्रकार से एक मां अपने अबोध बालक की रक्षा और पालन करती है। वह छोटा बच्चा तो कुछ भी नहीं जानता, न उसे इस बात का ज्ञान होता है कि मां का ममत्व क्या होता है, न उसे इस बात की चिन्ता होती है कि मां कितने कष्ट और दुःख झेल कर उसका पालन पोषण कर रही है और न उसे इस बात की फिक्र होती है कि यदि कोई विपत्ति बाधा या परेशानी आ जाएगी तो मां को कितना तनाव, कितनी वेदना और कितना दुःख सहन करना पड़ेगा। इसीलिए तो बालक निश्चिंत होता है, इसीलिए तो मां की गोद में निर्भिक होकर वह विश्राम करता है, और मां सभी दृष्टियों से उस बालक की रक्षा करती है, उसका मार्ग दर्शन करती है, उसका पालन पोषण करती है, और उसके जीवन में आने वाली बाधाओं को, दूर करने में सदैव तत्पर रहती है।

भगवती जगदम्बा का भी ऐसा ही स्वरूप है। वह केवल देवी ही नहीं वह केवल मातृ स्वरूपा ही नहीं, अपितु उसके तो कई रूप, कई स्वरूप, कई चिन्तन कई विचार, कई धारणाएं हैं। वह देवताओं का पुंज है क्योंकि भगवती जगदम्बा का तो जन्म हुआ ही नहीं।

जब देवताओं पर विपत्ति आई जब राक्षसों ने देवताओं पर प्रहार किए जब देवताओं के लिए कोई भी आश्रय स्थल नहीं रहा, जब देवताओं ने अनुभव किया कि इन राक्षसों से छुटकारा पाना अत्यंत कठिन है तब समस्त देवताओं के शरीर से तेज पुंज निकला, ब्रह्मा के शरीर से भी, विष्णु और रुद्र के शरीर से भी इन्द्र और वरुण के शरीर से भी। जितने भी देवता थे उन सभी के शरीर से तेज पुंज निकल कर जो मूर्ति बनी, जो चित्र बना, जो अवतरण हुआ उसे जगदम्बा, कहा गया- जो अठ भुजाओं

वाली, जिनके हाथों में शस्त्र, जिनके चेहरे पर अद्भुत तेज जो युद्ध में हुंकार करने वाली और जो शेर पर आरूढ़ शत्रुओं का दमन करने में तत्पर निरंतर अग्रसर, होने वाली और देवताओं की सभी प्रकार से रक्षा करने वाली एक जीवन्त मूर्ति देवताओं के सामने प्रकट हुई।

देवताओं ने देखा कि यह स्वरूप तो अपने आप में अद्भुत है, विलक्षण है, इसकी तेजस्विता तो अपने आप समस्त संसार में प्रकाशित हो रही है। इसकी हुंकार से सारा विश्व चलायमान होने लगा है, इसकी आवाज से दैत्यों के हृदय कांपने लगे हैं, जो प्रहार करने में वज्र की तरह समर्थ है। मगर साथ ही साथ मातृ स्वरूपा भी है जो अपने भक्तों की सदैव रक्षा करने में तत्पर रहती है। जो एक साथ ही महाकाली बनकर शत्रुओं का प्रचण्ड दमन करने में समर्थ है, महालक्ष्मी बनकर शिष्यों और साधकों को संपन्नता देने में समर्थ है, मां सरस्वती बनकर जो मनुष्यों को बुद्धि और चेतना देने में समर्थ है। ऐसी त्रिगुणात्मक स्वरूपा भगवती जगदम्बा का देवता लोग शत्-शत् वंदन करने लगे।

भगवती जगदम्बा कोई देवी ही नहीं अपितु, समस्त विश्व की अधिष्ठात्री है जो निन्द्रा रूप में भी विद्यमान है, क्षुधा रूप में भी विद्यमान है, पालन पोषण करने में भी विद्यमान है, बुद्धि की क्षेत्र में भी श्रेष्ठता और अद्वितीयता देने में समर्थ है जिसके सैकड़ों नाम हैं, सैकड़ों स्वरूप हैं, जिसके हाथ में अक्ष, परशु गदा, कलश, धनु, दण्ड और विविध आयुध हैं जिनके द्वारा वह शत्रुओं पर प्रहार करती है, आने वाली परेशानियों और तनावों को दूर करने में समर्थ है, जो अपने आप में ही श्रेष्ठ और अद्वितीय है, ऐसी मूर्ति, ऐसे विग्रह को देखकर देवताओं ने हर्ष तो अनुभव किया ही उन्हें यह भी विश्वास हुआ कि आने वाले समय में मानव जाति के कल्याण के लिए भक्तों और साधकों की समस्याओं को दूर करने के लिए इससे श्रेष्ठ कोई विग्रह नहीं हो सकता।

क्योंकि यह एक मात्र ऐसा विग्रह है जो प्रहार करने में भी समर्थ है, जो उत्पत्ति करने में भी समर्थ है, जो पालन करने में भी समर्थ है। जो शत्रुओं का संहार करने में काल स्वरूप है, तो भक्तों की रक्षा और सहयोग करने में मातृ स्वरूप है। इसकी आराधना इसका चिंतन, इसकी धारणा, और इसका विचार अपने आप में जीवन का एक सौभाग्य है, जीवन की एक पूंजी है।

मार्कण्डेय एक अद्भुत और अद्वितीय ऋषि हुए हैं। उन्होंने अपने मार्कण्डेय पुराण में जगदम्बा के संपूर्ण स्वरूप का चिन्तन किया, विचार किया। उनकी उत्पत्ति उनके कार्य और किस प्रकार से भगवति जगदम्बा को प्रसन्न किया जाए, साधा जाए,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

उससे सहयोग लेने के लिए प्रयत्न किया जाए इसका विस्तृत विवेचन मार्कण्डेय ने अपने ग्रंथ में किया और उन्होंने स्पष्ट किया कि भगवति जगदम्बा तो भगवान शिव मृत्युंजय का साक्षात विग्रह है, क्योंकि शिव अर्थात कल्याण वही हो सकता है जहां शक्ति है।

शिव और शक्ति का अद्भुत समन्वय है। जो मनुष्य कायर है, दुर्बल है, जो हताश परेशान और चिन्तित है वह कल्याणमय नहीं बन सकता। वह न तो अपना कल्याण कर सकता है और न समाज, देश और विश्व का कल्याण कर सकता है। यह तभी हो सकता है जब उसमें शक्ति का संचरण हो, जब उसमें निर्भीकता आए जब उसमें प्रहार करने की क्षमता आए। और यह स्थितियां-बलवान होना क्षमता प्राप्त करना, निर्भीकता होना, प्रहार होना और कल्याणमय होना यह जीवन की पूर्णता है।

इसीलिए इसे शिव और शक्ति का सायुज्य रूप माना गया है। जो शिव भक्त हैं उन्हें तो शक्ति की साधना करनी ही चाहिए क्योंकि बिना शक्ति के शिव की आराधना हो ही नहीं सकती। और जो शक्ति के उपासक हैं, उनके लिए तो भगवान शिव आराध्य है ही जो मृत्यु पर विजय प्राप्त करने में जो आने वाली बाधाओं को दूर करने में, जो काल को दूर धकेलने में समर्थ हैं।

इसीलिए शिव और शक्ति का समन्वय उनकी साधना और आराधना जीवन की पूर्णता मानी गई। मार्कण्डेय पुराण में बताया गया कि जो साधक पूर्ण स्वरूप के साथ भगवति जगदम्बा को स्पष्ट कर लेता है, साध लेता है उसकी आराधना करता है उसे अपने हृदय में स्थापित करता है वह निश्चय ही शिव का प्रिय बन जाता है।

ऐसा व्यक्ति त्रैलोक्य विजय प्राप्त करने में भी समर्थ होता है। उसके जीवन में किसी प्रकार का अभाव या परेशानी, चिन्ता या तकलीफ हो ही नहीं सकती। वह निर्भीक होकर विचरण करने में समर्थ होता है।

सैकड़ों देवताओं की साधना या आराधना करने की अपेक्षा मात्र जगदम्बा की साधना करने से भी समस्त देवताओं की साधना संपन्न हो जाती है क्योंकि भगवति जगदम्बा तो समस्त देवताओं के तेज स्वरूप का पुंज है। और इसीलिए शास्त्रों में जगदम्बा को श्रेष्ठतम आराध्या मानी गई, जीवन की पूर्णता माना गया, जीवन की श्रेष्ठता और अद्वितीयता माना गया।

जो साधक जगदम्बा को छोड़कर अन्य

देवताओं की साधनाओं में समय व्यतीत करता है वह वैसा ही है जैसे जड़ में पानी न देकर पत्तों और डालियों को सींचता है। जीवन की पूर्णता और पौधे का लहलहाना तो जड़ में पानी देने से ही संभव है। ठीक इसी प्रकारसे जीवन को निर्भीक और निश्चिन्त बना देने की कला और क्रिया तो जगदम्बा साधना से ही संभव है। और जो इसकी साधना सीख लेता है, समझ लेता है, जो जगदम्बा की साधना संपन्न कर लेता है, जिसे जगदम्बा को प्रसन्न करने की कला ज्ञात है उसके जीवन में किसी प्रकार का अभाव रह ही कैसे सकता है।

फिर जगदम्बा की साधना का कहीं कोई निषेध है ही नहीं, चाहे वह शैव हो, चाहे वैष्णव हो, विष्णु की आराधना करने वाला हो, चाहे तांत्रिक हो, चाहे योगी हो, चाहे संन्यासी हो, चाहे गृहस्थ हो, चाहे किसी भी धर्म को मानने वाला हो, चाहे किसी भी चिन्तन या विचार का प्रणेता हो, जगदम्बा की साधना तो सबके लिए सर्व सुलभ है। किसी भी युक्ति से, किसी भी स्थिति में जगदम्बा की साधना संपन्न की जा सकती है।

सैकड़ों प्रकार हैं, जगदम्बा की साधना संपन्न करने के मंत्रों के माध्यम से, स्तुति-आराधना के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से, योग के माध्यम से, रुद्रायमल के माध्यम से, श्मशान साधना के माध्यम से, वैष्णव साधना के माध्यम से वैदिक क्रिया साधना के माध्यम से, अघोर पंथ से, नाथ पंथ से, और जितने भी पंथ, जितने भी संप्रदाय उन सभी संप्रदायों में भगवति जगदम्बा की साधना का चिन्तन है विचार है।

बड़े आश्चर्य की बात है कि एक मात्र जगदम्बा की ही ऐसी साधना है जो प्रत्येक पंथ और प्रत्येक संप्रदाय में विद्यमान है। प्रत्येक प्रकार का व्यक्ति, साधक, संन्यासी, योगी इस प्रकार की साधना को संपन्न करने में गौरव अनुभव करता है।

और फिर कलियुग में तो **काली चण्डी विनायकी**

कलियुग में तो केवल गणपति और जगदम्बा ही शीघ्र सिद्धि देने वाले देवता माने गए हैं। अन्य देवताओं की साधना जहां कठिन है, लंबी है, वहां जगदम्बा की साधना सरल है, सामान्य है स्पष्ट है, जो शीघ्र सिद्धि दायक है, जिसकी साधना करने से हाथों हाथ फल मिलता है। वह चाहे रक्षा करने की साधना हो, वह चाहे धन प्राप्त करने की साधना हो, वह चाहे व्यापार वृद्धि की साधना हो, वह चाहे परिवार की सुरक्षा और

परिवार की उन्नति की साधना हो, वह चाहे स्वास्थ्य कामना की साधना हो और चाहे अन्य फल इच्छा की साधना हो। सभी प्रकार की इच्छाओं का परिपालन जगदम्बा की साधना में निहित है।

और साधक जब साधना संपन्न करता है तो साधना संपन्न होते-होते ही उसको फल अनुभव होने लग जाता है उसका कार्य संपन्न हो जाता है। इसीलिए तो कलियुग में जगदम्बा की साधना को सर्वश्रेष्ठ, साधना कही गई है, इसीलिए तो कलियुग में समस्त साधकों को स्पष्ट किया गया कि जो जगदम्बा साधना नहीं कर सकता या नहीं करता वह अपने आप में ही नुकसान प्राप्त करता है क्योंकि इस साधना से जीवन की संपूर्णता का बोध स्वतः होने लगता है, क्योंकि इस साधना के माध्यम से साधक वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जो उसका अभीष्ट लक्ष्य है। चाहे मुकदमें में विजय प्राप्त करनी हो या चाहे आर्थिक उन्नति की इच्छा हो।

यह अलग बात है कि इस साधना को समझना और सीखना आवश्यक है। पर इस साधना में जटिलता नहीं है। विशेष क्रिया कलाप नहीं है। किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। जगदम्बा की साधना तो अत्यंत सरल और सामान्य है जिसे कोई भी बालक या वृद्ध साधक या साधिका, सधवा या विधवा, मजदूर या मालिक कर सकता है। चाहे शैव हो, चाहे वैष्णव हो चाहे किसी भी जाति का हो, वर्ण का हो, रंग का हो· जगदम्बा की साधना के द्वार तो सबके लिए खुले हैं।

यह एक ऐसी साधना है जो कम से कम उपकरणों के द्वारा संपन्न की जा सकती है। इसमें कोई लंबा-चौड़ा मंत्र नहीं होता, लंबी चौड़ी क्रिया कलाप नहीं होती, किसी प्रकार का नुकसान नहीं हो सकता। मार्कण्डेय ने स्पष्ट कहा है कि यदि कोई साधक जगदम्बा की साधना संपन्न करता है और साधना बीच में ही छूट जाए साधना अधूरी रह जाए अनुष्ठान किसी कारण से पूरा न हो सके या अनुष्ठान में कोई त्रुटि रह जाए तब भी उसे कोई विपरीत

प्रभाव देखने को नहीं मिलता, तब भी उस साधक का किसी प्रकार से अहित नहीं होता।

यह अलग बात है कि अगर साधना को बीच में ही छोड़ दिया जाता है तो उसका जितना फल मिलना चाहिए उसका उतना फल न मिले उसका कुछ आंशिक फल ही मिले पर यह स्पष्ट है कि फल अवश्य मिलता है। साधक को किसी प्रकार का विपरीत फल नहीं प्राप्त होता, साधक का अहित नहीं होता।

इसी लिए तो शास्त्रों ने जगदम्बा की साधना को जीवन की श्रेष्ठतम साधना मानी गई है। इसीलिए तो मानव जाति के कल्याण के लिए इस साधना को प्राथमिकता दी गई। इसीलिए तो जीवन के सारे अभावों को दूर करने वाली यह साधना बताई गई। इसीलिए तो वेद, उपनिषद, पुराण आदि प्रत्येक ने जगदम्बा की साधना को महत्व दिया है, उन्होंने अनुभव किया, विचार किया कि इस साधना के द्वारा हम अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, समाधान ही नहीं कर सकते उन बाधाओं और रुकावटों से पीछा छुड़ा सकते हैं। और जीवन को ज्यादा सुगम, ज्यादा सरल, ज्यादा सुखमय बना सकते हैं।

जगदम्बा साधना अपने आपमें ही एक परिपूर्ण और पूर्ण साधना है वह चाहे नवार्ण मंत्र साधना हो वह चाहे स्तोत्र साधना हो वह चाहे स्तुति हो और वह चाहे चण्डी प्रयोग हो। श्मशान प्रयोग से भी चण्डी को सिद्ध किया जा सकता है और घर में बैठ कर भी भगवति की साधना संपन्न की जा सकती है। दिन को या रात्रि को, सुबह या शाम किसी भी समय जब साधक मनोयोग पूर्वक साधना करने की इच्छा प्रकट करे उस समय इस साधना को किया जा सकता है। यही तो इसकी विशेषता है। इसीलिए इसे जीवन का एक अद्भुत प्रयोग कहा गया है। मैंने अपने जीवन में स्वयं अनुभव किया है कि जो कार्य अन्य प्रकार से या अन्य देवताओं की साधना से संपन्न नहीं होता वह भगवति जगदम्बा की साधना से शीघ्र, सहज, और सामान्य तरीके से भी संपन्न हो जाता है। मैंने कई बार इस साधना के

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान किया है, और उन स्थितियों को प्राप्त किया है जो अपने आप में अपराजेय हैं, अप्रतिम हैं, अद्वितीय हैं। जो श्रेष्ठता और उच्चता अन्य साधनाओं के माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती वह इस साधना के द्वारा सहज संभव है, शरीर को किसी भी परिस्थिती में अनुकूल बना लेना, कहीं पर किसी भी प्रकार से विचरण कर लेना, शत्रुओं के बीच भी निर्भय प्रसन्न बने रहना और शरीर के चक्रों को जाग्रत कर लेना, कुण्डलिनी और सहस्रार के रहस्यों को प्राप्त कर लेना, ब्रह्माण्ड में रह कर ब्रह्माण्ड के रहस्यों को ज्ञात कर लेना भी इस साधना के द्वारा संभव है तो भौतिक जीवन की कामनाओं की पूर्ति भी इस साधना के द्वारा सहज संभव है।

चाहे किसी भी प्रकार की इच्छा हो, चाहे किसी भी प्रकार का चिंतन हो, ऐसा हो ही नहीं सकता कि हम इस साधना को संपन्न करें, और उसका फल प्राप्त न हो। और इसके साथ-साथ संन्यास जीवन की उच्चता को भी प्राप्त करना और श्रेष्ठतम गुरु को प्राप्त कर लेना इस साधना के द्वारा ही संभव है। गुरु की प्रसन्नता और गुरु की निकटता प्राप्त कर लेना केवल जगदंबा साधना के द्वारा संभव है। समस्त विद्याओं ज्ञान और साधनाओं में निष्णात हो जाना, उच्चतम भाव भूमि पर स्थापित हो जाना, कंठ में सरस्वती को स्थापित कर हजारों-हजारों, श्लोकों और ग्रंथों को स्मरण कर लेना केवल मात्र जगदम्बा साधना के द्वारा सहज संभव है और साथ ही इस साधना के द्वारा वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो हमारा अभीष्ट है। मैं कुछ ऐसी ही साधनाएं स्पष्ट कर रहा हूं जो प्रत्येक साधक या व्यक्ति के लिए आवश्यक, उपयोगी और अनिवार्य है।

भगवति जगदम्बा की साधना और पूजा अर्चना अपने आप में एक अनिर्वचनीय जीवन का सोपान है, जब जीवन का सौभाग्य उदय होता है तब साधक भगवति जगदम्बा की साधना, पूजा विधिवत कर पाता है। यह आवश्यक नहीं है कि यह साधना नवरात्रि में ही हो, यह वर्ष में किसी भी दिन किसी भी समय कर सकते हैं, और साल के सारे ३६५ दिन भगवति जगदम्बा के ही दिन कहे जाते हैं वे चाहे नवरात्री के दिन हो और चाहे किसी भी प्रकार का अन्य पर्व, त्यौहार और उत्सव हो।

जीवन में समस्त प्रकार के दुख ताप, कष्ट, पीड़ा, अभाव और शत्रुओं के नाश के लिए भगवति जगदम्बा की साधना से ज्यादा उत्तम और कोई साधना विधि नहीं है। यदि मंत्र जप न भी किया जाए और विधिवत पूजन अर्चन कर दिया जाए तब भी अपने आप में श्रेष्ठतम उपलब्धि प्राप्त होती। इसके लिए किसी विशेष मुहूर्त या विशेष समय की भी आवश्यकता नहीं होती। तथ्यों का यदि ध्यान साधक रखे तो ज्यादा अच्छा रहता है। प्रथम तो साधक स्नान करके पीले वस्त्र पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठे। सामने भगवति जगदम्बा का चित्र स्थापित हो। कुछ साधना सामग्री

को हो जिसमें **जलपात्र, कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य** और **घी** का दीपक हो। साधक पूर्ण शांतचित्त से साधना करे। प्रातः काल सूर्योदय से पहले का समय ज्यादा उचित रहता है और रात्रि को यदि साधना की जाए तो रात्रि को दस बजे के बाद समय ज्यादा उचित रहता है। साधक को चाहिए कि पूर्ण क्षमता और भावना के साथ इस साधना को संपन्न करें।

जगदम्बा साधना के कई स्वरूप हैं। मैं इनमें से कुछ स्वरूपों की साधना यहां स्पष्ट कर रहा हूं। एक तो नवार्ण मंत्र साधना है। नवार्ण मंत्र साधना का तात्पर्य अपने जीवन की समस्त आध्यात्मिक इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति करना है, ज्ञान प्राप्त करना, कंठ में वाग्देवी सरस्वती को स्थापित करना, सहस्रार जाग्रत कर कुण्डलिनी के माध्यम से ब्रह्माण्ड की चेतना को प्राप्त करना यह सभी नवार्ण मंत्र की साधना से सहज संभव है। या फिर ध्यान की गहराइयों में उतरना, सूक्ष्म शरीर और सारे सातों शरीरों को जाग्रत करना, सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त करना, यह सब भी नवार्ण मंत्र साधना द्वारा संभव हो सकता है। परंतु आवश्यक है कि साधक पूर्ण श्रद्धा और एकाग्रता से साधना संपन्न करे, मंत्र जप पूर्ण करे।

इसके लिए नवार्ण **यंत्र** की आवश्यकता होती है जो अपने आपमें ही सिद्ध हो, चेतना युक्त हो, प्राण प्रतिष्ठित एवं दिव्य हो क्योंकि यंत्र का सीधा संबंध साधक के चित्त पर और उसकी क्रिया पर होता है जिसकी वजह से उसे साधनाओं में सिद्धि प्राप्त होती है। इस नवार्ण मंत्र के नौ अक्षर हैं इसीलिए यह नववर्ण या नवार्ण मंत्र कहा गया।

हकीकमाला से या **स्फटिक माला** से रात्रि को इस साधना को संपन्न करें और नौ लाख मंत्र जप इक्कीस दिन में संपन्न कर लें। इसके लिए समय अवधि और मंत्र जप संख्या निश्चित है। अनुष्ठान के रूप में साधना करने से ही तो सिद्धि प्राप्त होती है। इससे साधक स्वयं हिसाब लगा ले कि उसे रोज कितना मंत्र जप संपन्न कर सकता है। वह चाहे तो एक ही बैठक में मंत्र जप संपन्न कर सकता है और चाहे तो दिन में दो बार या तीन बार बैठ कर भी मंत्र जप संपन्न कर सकता है।

उच्च कोटि के योगी और संन्यासी जो ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने के लिए प्रेरित होते हैं वे नवार्ण मंत्र को साधना से श्रेष्ठता देते हैं। वे चाहे अन्य साधनाएं संपन्न करें या नहीं करें नवार्ण साधना तो संपन्न करते ही हैं। और यह बात भी निश्चित है कि जब तक नवार्ण सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती तब तक हृदय कमल विकसित नहीं हो सकता, तब तक मूलाधार जाग्रत नहीं हो सकता, तब तक चेतना पुंज स्पष्ट नहीं हो सकता, तब तक कुण्डलिनी जागरण नहीं हो सकता, तब तक ब्रह्माण्ड भेदन नहीं हो सकता, तब तक सातों शरीरों को जाग्रत नहीं किया जा सकता, तब तक सहस्रार भेदन नहीं हो सकता। यह सब कुछ तो नवार्ण साधना के द्वारा ही संभव है क्योंकि इसका प्रत्येक बीज अपने आप में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के प्रतीक है।

यह मंत्र अपने आपमें अहंकार को समाप्त करने वाला है, यह व्यक्ति को

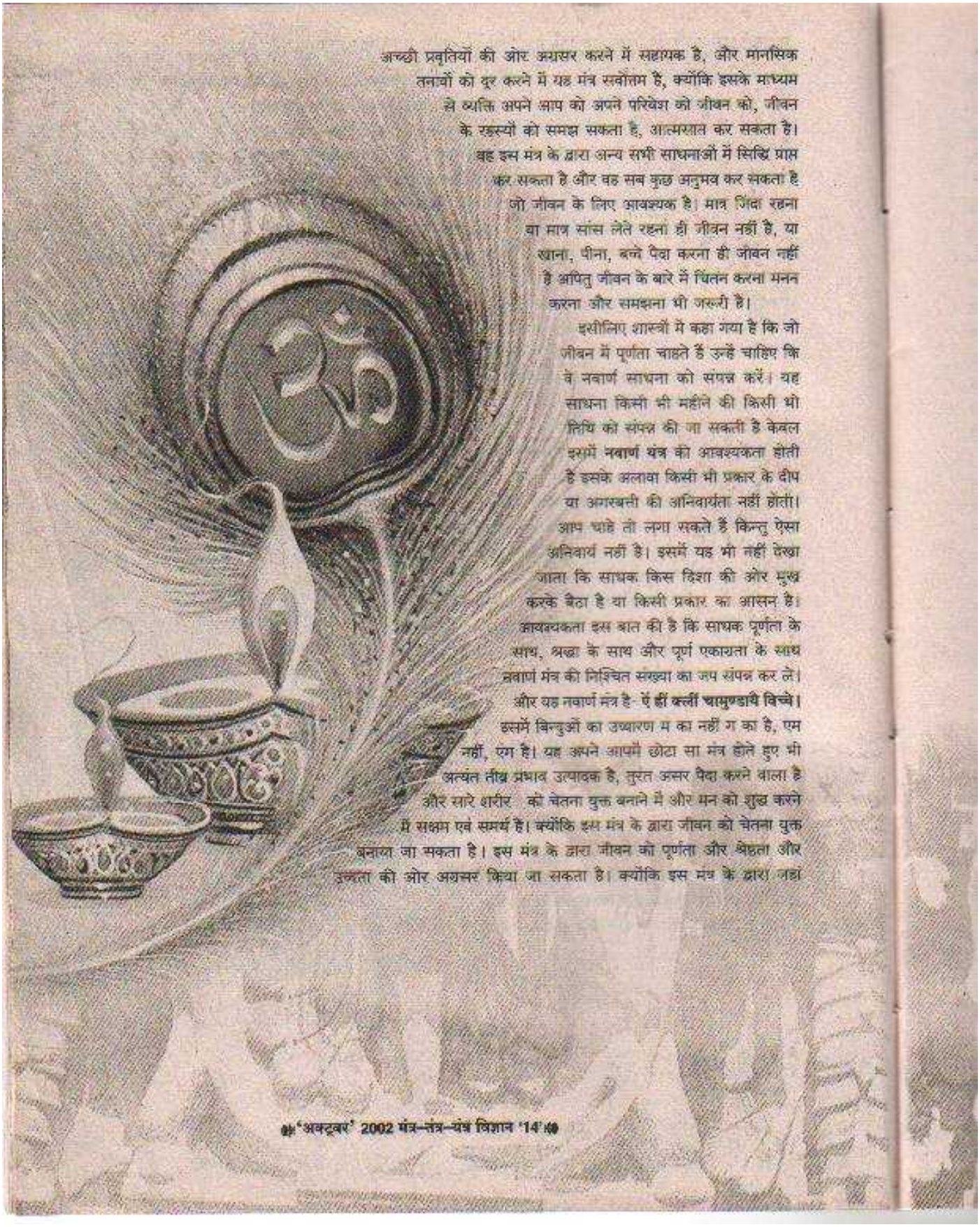

अच्छी प्रवृतियों की ओर अग्रसर करने में सहायक है, और मानसिक तनावों को दूर करने में यह मंत्र सर्वोत्तम है, क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने आप को अपने परिवेश को जीवन को, जीवन के रहस्यों को समझ सकता है, आत्मसात कर सकता है। वह इस मंत्र के द्वारा अन्य सभी साधनाओं में सिद्धि प्राप्त कर सकता है और वह सब कुछ अनुभव कर सकता है जो जीवन के लिए आवश्यक है। मात्र जिंदा रहना या मात्र सांस लेते रहना ही जीवन नहीं है, या खाना, पीना, बच्चे पैदा करना ही जीवन नहीं है अपितु जीवन के बारे में चिंतन करना मनन करना और समझना भी जरूरी है।

इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि जो जीवन में पूर्णता चाहते हैं उन्हें चाहिए कि वे नवार्ण साधना को संपन्न करें। यह साधना किसी भी महीने की किसी भी तिथि को संपन्न की जा सकती है केवल इसमें **नवार्ण यंत्र** की आवश्यकता होती है इसके अलावा किसी भी प्रकार के दीप या अगरबत्ती की अनिवार्यता नहीं होती। आप चाहें तो लगा सकते हैं किन्तु ऐसा अनिवार्य नहीं है। इसमें यह भी नहीं देखा जाता कि साधक किस दिशा की ओर मुख करके बैठा है या किसी प्रकार का आसन है। आवश्यकता इस बात की है कि साधक पूर्णता के साथ, श्रद्धा के साथ और पूर्ण एकाग्रता के साथ नवार्ण मंत्र की निश्चित संख्या का जप संपन्न कर ले। और यह नवार्ण मंत्र है- **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।** इसमें बिन्दुओं का उच्चारण म का नहीं ग का है, एम नहीं, एग है। यह अपने आपमें छोटा सा मंत्र होते हुए भी अत्यंत तीव्र प्रभाव उत्पादक है, तुरंत असर पैदा करने वाला है और सारे शरीर को चेतना युक्त बनाने में और मन को शुद्ध करने में सक्षम एवं समर्थ है। क्योंकि इस मंत्र के द्वारा जीवन को चेतना युक्त बनाया जा सकता है। इस मंत्र के द्वारा जीवन को पूर्णता और श्रेष्ठता और उच्चता की ओर अग्रसर किया जा सकता है। क्योंकि इस मंत्र के द्वारा जहां

महालक्ष्मी को प्रसन्न कर अपार धन वैभव प्राप्त किया जा सकता है वहीं महाकाली का आशीर्वाद प्राप्त कर शत्रुओं, चिंताओं, कष्टों एवं समस्याओं से मुक्त हुआ जा सकता है। क्योंकि इस मंत्र के द्वारा ही महासरस्वती को भी सिद्ध कर ज्ञान एवं बुद्धि को प्राप्त किया जा सकता है। और साथ ही साथ भगवति जगदम्बा को प्रसन्न कर उनके साक्षात दर्शन करने के लिए यह मंत्र अद्वितीय एवं सर्वोत्तम है।

यह जरूरी है कि इस साधना को संपन्न करने से पूर्व यदि साधक या साधिका किसी योग्य गुरु से **नवार्ण दीक्षा** प्राप्त कर लेता है तो उत्तम रहता है, या दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उसे नवार्ण दीक्षा प्राप्त करनी ही चाहिए क्योंकि इससे नवार्ण मंत्र अपने आप में ही साधक के शरीर, मन और आत्मा में स्थापित कर दिया जाता है। और सारा रोम-रोम, शरीर का एक एक कण नवार्ण मंत्र उच्चरित करने लग जाता है।

यह दीक्षा अपने आपमें जटिल है और किसी सामान्य गुरु के बस की बात नहीं है कि वह इस प्रकार की दीक्षा प्रदान कर सके। यह तो एक तेजस्वी दीक्षा है। एक दिव्य दीक्षा है, एक सर्वश्रेष्ठ दीक्षा है और जो स्वयं समर्थ गुरु हैं, जिन्होंने जगदम्बा, साधना को पूर्णता के साथ संपन्न कर रखा है, जिन्होंने भगवती जगदम्बा को प्रत्यक्ष प्रकट किया है, जिन्होंने जगदम्बा के पूर्ण बिंब को अपने हृदय में जाग्रत कर स्थापित किया वही इस साधना का प्रामाणिक ज्ञान प्रदान कर सकता है। यदि साधक को या शिष्य को या किसी भी व्यक्ति को ऐसे समर्थ और क्षमतावान गुरु प्राप्त हो जाएं और चाहे उसने अन्य किसी भी प्रकार की दीक्षा प्राप्त की हो, उसे चाहिए कि उस गुरु से प्रार्थना कर इस प्रकार की दीक्षा को प्राप्त करें। अपने शरीर में नवार्ण मंत्र को स्थापित करें, अपने भीतर भगवती जगदम्बा की चेतना को आत्मसात करें और फिर उनकी बताई हुई विधि के अनुसार नवार्ण मंत्र का जप कर अनुष्ठान संपन्न करें। ऐसा करने पर नवार्ण सिद्धि प्राप्त होती ही है।

यदि साधक चाहे, या उसकी इच्छा हो तो यह अनुष्ठान संपन्न होते होते भगवति जगदम्बा

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

के साक्षात स्वरूप दर्शन हो जाते हैं। यही तो इस मंत्र की विशेषता है, उच्चता है, दिव्यता है और जीवन में चाहिए ही क्योंकि हम साधना संपन्न करें, और मां भगवती जगदम्बा हमारे सामने साक्षात जाज्वल्यमान स्वरूप में उपस्थित हो, हम, गदगद कंठ, से उनकी स्तुति करें, उनके चरणों में बैठें, उनका वरद हस्त अपने सिर पर अनुभव करें, उनके दर्शन करें, उनका आशीर्वाद प्राप्त करें और अपने जीवन को धन्य कर के उस जीवन को पूर्णता दे सकें।

यह सब कुछ इस मंत्र जप और इस अनुष्ठान के द्वारा संभव है। जगदम्बा की साधना के एक दूसरे प्रकार का अनुष्ठान भी है जो समस्त भौतिक इच्छाओं की पूर्ति करने में सहायक है। हमारे जीवन में कई प्रकार की इच्छाएं, चाहे या न चाहें होती ही हैं- धन की इच्छा व्यापार वृद्धि की इच्छा, नौकरी में प्रमोशन की इच्छा, शरीर को स्वस्थ बनाए रखने की इच्छा, धन की रक्षा करने की इच्छा, राज्य की तरफ से किसी प्रकार की अड़चन या बाधा न आए इस प्रकार की इच्छा सुखी परिवार या कुटुंब की इच्छा, पुत्र प्राप्ति की इच्छा, परीक्षा में सफलता प्राप्त करने की इच्छा, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने की या मुकदमे में सफलता प्राप्त करने की इच्छा, एक मकान बनाने की इच्छा, शीघ्र एवं अनुकूल विवाह संपन्न होने की इच्छा परिवार में प्रसन्नता और शांति की इच्छा परिवार में प्रसन्नता और शांति की इच्छा ऐसी कई इच्छाएं हो सकती हैं।

और इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए कोई अलग अलग विधान नहीं है, अलग अलग मंत्र नहीं है, एक विशिष्ट मंत्र के माध्यम से इन समस्त इच्छाओं की पूर्ति सहज संभव है। यह विधि अपने आप में गोपनीय और दुर्लभ रही है। उच्चकोटि के एक सिद्धाश्रम के योगी से यह साधना प्राप्त हुई थी जिन्हें जगदम्बा का अभीष्ट ज्ञान और सिद्धि प्राप्त थी, जो सही अर्थों में जगदम्बा में लीन हो चुके थे, जिनके सामने जगदम्बा प्रत्यक्ष प्रकट होती ही थी, और स्वयं भगवती जगदम्बा ने इस मंत्र विग्रह और इस अनुष्ठान को स्पष्ट किया था।

इसीलिए जो मैं प्रयोग बताने जा रहा हूं वह अपने आप में दुर्लभ और अप्रतिम है जिसके माध्यम से हम अपने जीवन की सारी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, जिसके माध्यम से हम सभी कष्टों का निवारण कर सकते हैं जिसके माध्यम से हम अपने जीवन की सभी इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं। जिसके माध्यम से हमारे जीवन में जो न्यूनता हो, जो कमी है, जिसकी वजह से हम परेशान हों, जो अभाव, बाधा और पीड़ा हो उन सबको इस साधना के द्वारा दूर किया जा

सकता है।

एक प्रकार से देखा जाए तो यह मंत्र दो तरीके से सहयोग देता है। रचनात्मक जो हमारी इच्छाओं की पूर्ति करता है, निषेधात्मक जो हमारे अभावों को दूर करता है। किसी भी प्रकार की इच्छा की पूर्ति होना इस साधना की विशेषता है और प्रत्येक साधक या शिष्य या व्यक्ति को इस प्रकार की साधना जीवन में संपन्न करनी ही चाहिए।

यदि व्यक्ति नवरात्रि के दिनों में भगवती जगदम्बा की साधना करता है तो यह श्रेष्ठतम होता है। नवरात्रि के सारे दिन पूर्ण पर्व कहे जाते हैं। ये सारे दिन अपने आप में तेजस्विता युक्त होते हैं, और साधक जो इन दिनों में साधना करना चाहता है वह, इन्हें दिवसों पर गुरु से **चामुण्डा दीक्षा** प्राप्त कर सभी साधनाओं में पूर्णता प्राप्त कर सकता है। चामुण्डा दीक्षा का तात्पर्य है कि अपने आप में पूर्ण पवित्र और दिव्य बनकर अपने आप को दक्ष बनाते हुए योग्य बनाते हुए उस तेजस्विता युक्त भगवती जगदम्बा की साधना को संपन्न करने के लिए अपने आपको प्रेरित करता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि साधक नवरात्रि के एक दिन पूर्व यथा संभव मौन रहकर अपनी शक्ति का संचय करे और उसके बाद सद्गुरु से चामुण्डा दीक्षा प्राप्त करें और यदि सद्गुरु कहीं और हों, शरीर उपस्थित नहीं हों तो फोटो भेजकर उसके माध्यम से दीक्षा प्राप्त करें।

वास्तव में यह सौभाग्य होता है कि व्यक्ति भगवती जगदंबा के सान्निध्य में उनके चरणों में पूर्ण तेजस्विता युक्त, ऋषि तुल्य जीवन जीते हुए निरंतर गुरु मंत्र और नवार्ण मंत्र का जप करते हुए अपने शरीर के सभी चक्रों की जागरण क्रिया की ओर अग्रसर होते हुए जगदम्बा साधना संपन्न करता है। यह साधना संपन्न करना अत्यंत है आह्लाद और प्रसन्नता का सोपान है।

जीवन में प्रत्येक प्रकार के रागरंग भोग, यश मान पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य इनकी इच्छा रहनी ही चाहिए और इन सबकी प्राप्ति केवल और केवल शक्ति साधना के द्वारा संभव है या भगवति जगदम्बा की साधना के द्वारा संभव है।

मार्कण्डेय ने एक अद्वितीय ग्रंथ, मार्कण्डेय पुराण की रचना की जो शिव के ऊपर पूर्ण ग्रंथ है तो उसके शक्ति के ऊपर भी पूर्ण ग्रंथ है। और उनके द्वारा लिखा गया शक्ति का ग्रंथ ही कई वर्षों से मान्य है क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में भगवती जगदम्बा को साक्षात किया, और उनके कई रूपों को साक्षात प्रत्यक्ष करके दिखाया और उन्होंने कहा-

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी

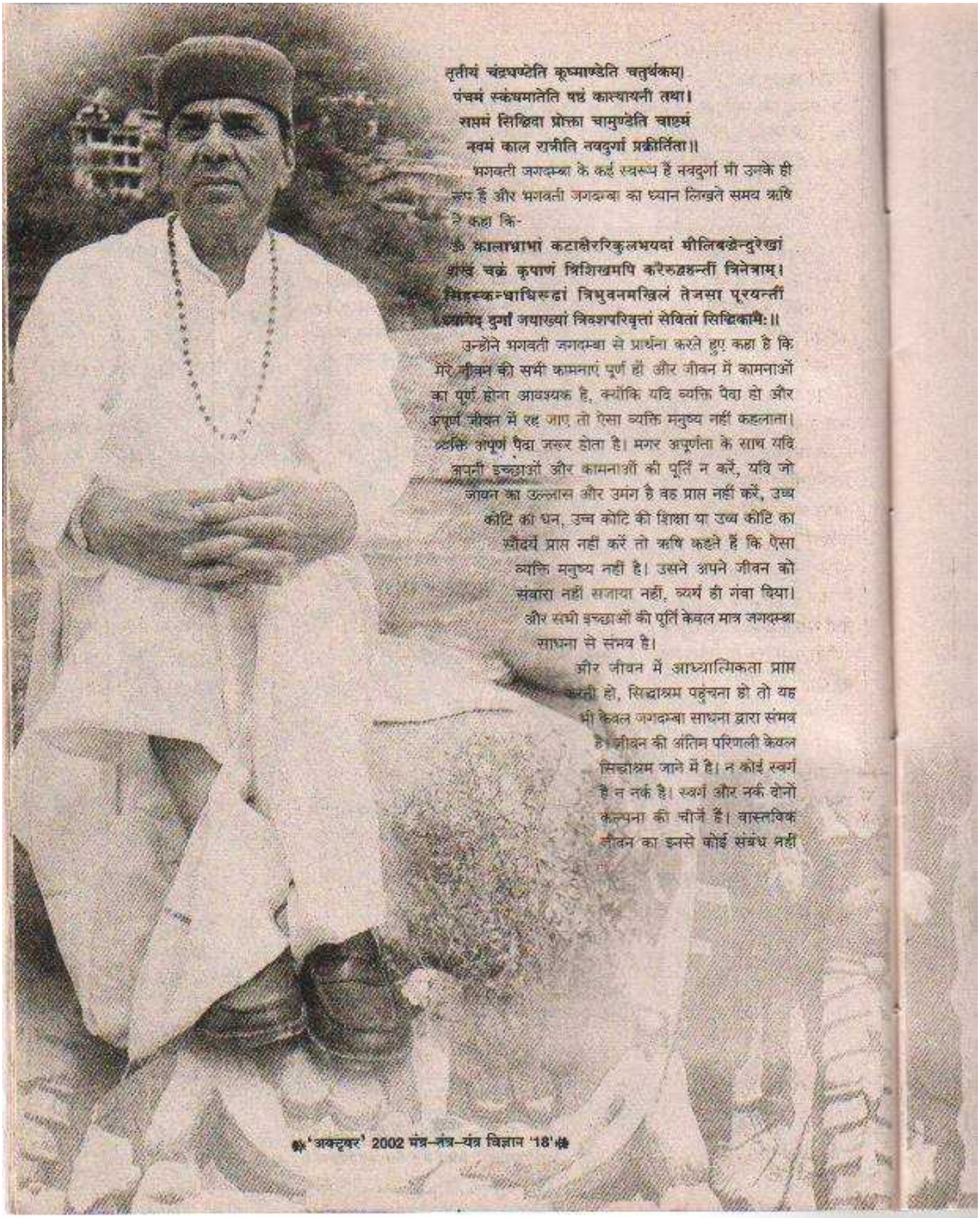

तृतीयं चंद्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।
पंचमं स्कंधमातेति षष्ठं कात्यायनी तथा।
सप्तमं सिद्धिदा प्रोक्ता चामुण्डेति चाष्टमं
नवमं काल रात्रीति नवदुर्गा प्रकीर्तिता॥

भगवती जगदम्बा के कई स्वरूप हैं नवदुर्गा भी उनके ही रूप हैं और भगवती जगदम्बा का ध्यान लिखते समय ऋषि ने कहा कि-

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

उन्होंने भगवती जगदम्बा से प्रार्थना करते हुए कहा है कि मेरे जीवन की सभी कामनाएं पूर्ण हों और जीवन में कामनाओं का पूर्ण होना आवश्यक है, क्योंकि यदि व्यक्ति पैदा हो और अपूर्ण जीवन में रह जाए तो ऐसा व्यक्ति मनुष्य नहीं कहलाता। व्यक्ति अपूर्ण पैदा जरूर होता है। मगर अपूर्णता के साथ यदि अपनी इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति न करें, यदि जो जीवन का उल्लास और उमंग है वह प्राप्त नहीं करें, उच्च कोटि का धन, उच्च कोटि की शिक्षा या उच्च कोटि का सौंदर्य प्राप्त नहीं करें तो ऋषि कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति मनुष्य नहीं है। उसने अपने जीवन को संवारा नहीं सजाया नहीं, व्यर्थ ही गंवा दिया। और सभी इच्छाओं की पूर्ति केवल मात्र जगदम्बा साधना से संभव है।

और जीवन में आध्यात्मिकता प्राप्त करनी हो, सिद्धाश्रम पहुंचना हो तो यह भी केवल जगदम्बा साधना द्वारा संभव है। जीवन की अंतिम परिणती केवल सिद्धाश्रम जाने में है। न कोई स्वर्ग है न नर्क है। स्वर्ग और नर्क दोनों कल्पना की चीजें हैं। वास्तविक जीवन का इनसे कोई संबंध नहीं

डर बनाने के लिए कि हम गलत रास्ते पर न चले इसलिए नर्क की व्याख्या की गई है। नर्क जैसी कोई चीज नहीं है। जीवन का सार सिद्धाश्रम प्राप्ति है और यह भी इच्छा भगवति साधना द्वारा शीघ्र, सहज संभव है। परन्तु आवश्यक है कि व्यक्ति पूर्ण विश्वास के साथ, श्रद्धा के साथ अनुष्ठान करें।

इसलिए जगदम्बा साधना द्वारा न केवल भौतिक उन्नति अपितु आध्यात्मिक उन्नति भी संभव है। जीवन में भौतिकता भी उतनी ही आवश्यक और महत्वपूर्ण है जितनी आध्यात्मिकता। आप चाहे कितने भी विद्वान बन जाएं, कितने भी योग्य बन जाएं, चाहे कितने भी सौंदर्यवान बन जाएं मगर जब तक धन की पूर्ण प्राप्ति हमारे जीवन में नहीं है तब तक जीवन आगे अग्रसर नहीं हो सकता। गुरुदेव के पास जाने के लिए रेल के टिकट के लिए धन आवश्यक है ही। बहुत कोई स्त्री सुंदर है, अच्छे वस्त्र पहनना चाहती है, तो नहीं पहन सकती बिना धन के। आप तीर्थ यात्रा करना चाहें तो नहीं कर सकते बिना धन के।

अर्थ तो जीवन में महत्वपूर्ण है ही और पूर्ण सपन्नता के लिए भी कोई श्रेष्ठतम साधना है तो वह भगवती जगदम्बा की ही साधना है। जीवन में धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों आवश्यक है, परंतु ऋषि भी कहते हैं कि मोक्ष या आध्यात्मिकता से पहले अर्थ की आवश्यकता है क्योंकि अर्थ से ८० प्रतिशत काम तो आपके पूर्ण हो जाएंगे। आज का युग ऐसा ही है जहां धन के आधार पर पूरा समाज टिका हुआ है। यह बात हमारे ऋषि जानते थे इसलिए उन्होंने मोक्ष से पहले अर्थ को महत्ता दी और परिश्रम से धन प्राप्त नहीं हो सकता, उतना धन प्राप्त नहीं हो सकता जितना हम चाहें, आपको पांच हजार की नौकरी है तो आप पांच हजार ही कमा सकते हैं, थोड़ा और काम किया तो सात हजार रुपये हो जाएंगे, मगर उससे धन का प्रवाह नहीं बन सकता कि जितना खर्च करें, कम नहीं हो, बढ़ता ही रहे। ऐसा जीवन में तभी संभव हो सकता है, जितना चाहे धन प्राप्त हो सकता है, धन का प्रवाह बन सकता है यदि हम पूर्णता के साथ अपने जीवन में जगदम्बा साधना को संपन्न कर लें।

और हमारे ऋषियों ने कहा है कि श्रेष्ठ और

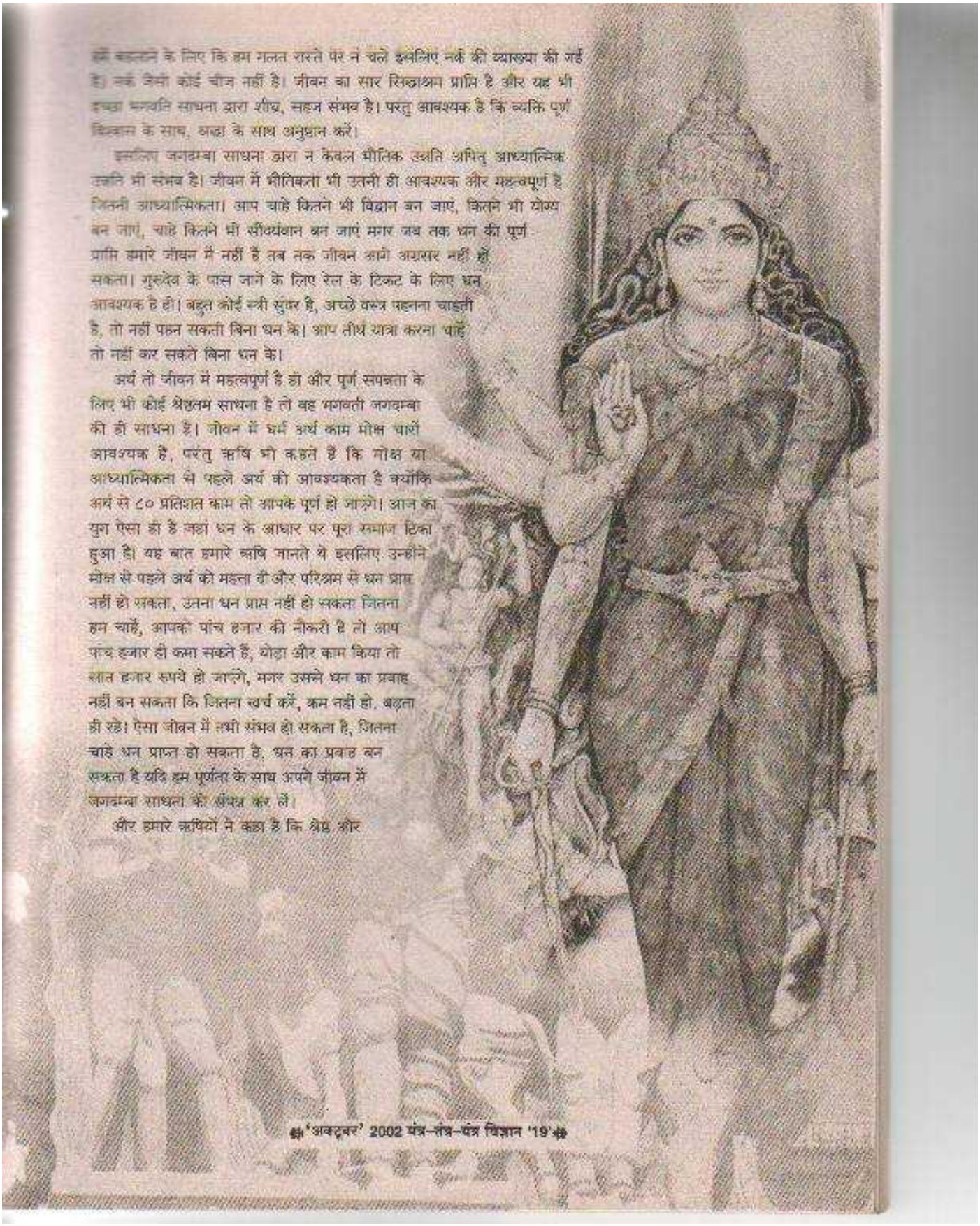

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

बुद्धिमान व्यक्ति इस जीवन का पूर्ण आनन्द लेते हैं और इसके बाद सिद्धाश्रम में प्रवेश करके उस अद्वितीय वातावरण का आनन्द लेते हैं तो आत्मिकम है। और इन सभी इच्छाओं, उन्नतम कामनाओं को पूर्ण करने का यानि कोई उपाय है तो वह है जगदम्बा साधना। और जीवन में सभी रंग हों, स्वास्थ्य भी हों, अच्छा वातावरण हो, शिक्षा हो, पढ़ाई, सुंदर भवन हो, प्रेम हो, सौंदर्य हो, और वह सब कुछ हो जो हम जीवन में चाहें। और यही नहीं हम इस जीवन को ही नहीं सुधारें, अपने आगे के जीवन को भी सुधारें कोई ऐसी क्रिया हो कि जो हम चाहें वह हो जाए यह बहुत बड़ी घटना है। यह विस्फोटकीय घटना है, उपलब्धि है कि हम जो चाहें वह हो जाए।

और इस उपलब्धि का अगर कोई आधार है तो वह है भगवती जगदम्बा साधना। और इच्छाएं धन की भी हो सकती है सिद्धाश्रम प्राप्ति की भी हो सकती हैं। हम सिद्धाश्रम जाने की क्षमता प्राप्त कर सकें। और हमारी ग्रंथ में सिद्धाश्रम के बारे में इतना अधिक वर्णन है कि वहां सभी देवता आने के लिए तरसते हैं, वहां अप्सराएं नृत्य करती हैं, वहां सिद्धयोगी लीन है, वहां दो हजार साल आयु के योगी हैं, संन्यासी हैं भगवान श्री कृष्ण वहां है, और इतना अद्वितीय है वह सिद्धाश्रम जहां न बुढ़ापा आ सकती है, न रोग हो सकता है, न मृत्यु हो सकती है, कल्पवृक्ष वहां है और कामधेनु वहां है। तो ऐसा अद्वितीय दृश्य भी हम अपने जीवन में देख सकें, ऐसा भी केवल संभव है भगवति जगदंबा की साधना के द्वारा।

यही जीवन की श्रेष्ठता है यही जीवन की पूर्णता है। इस जीवन को भी भोगें, इस शरीर का भी आनन्द लें, और फिर उस जीवन में चले जाएं जो अपने आप अद्वितीय है। और दोनों का, भौतिकता का भी, और सिद्धाश्रम का भी, रास्ता एक ही है जिसे जगदम्बा साधना कहा है। सभी रंग जीवन के हम भोगें। आकस्मिक धन प्राप्ति के कोई तरीका हो और आकस्मिक धन प्राप्ति पाप नहीं है, चोरी करना पाप है, किसी को धोखा देना पाप है लेकिन यदि हम भगवति जगदंबा

से या किसी महाविद्या से कोई चीज प्राप्त करते हैं तो वह पाप नहीं है। हम किसी से छीन नहीं रहे हैं।

जीवन में सिद्धाश्रम प्राप्ति, या आकस्मिक धन प्राप्ति, या पूर्ण रूप से गुरुत्व को हृदय में स्थापित करना ये उपलब्धि और ये कार्य केवल नवरात्रि में ही संभव है। इसलिए संभव हो सकते हैं क्योंकि नवरात्रि का वातावरण नवरात्रि के दिन दिव्यता लिए हुए है, अद्वितीय है। आप किसी भी दिन दीवाली नहीं मना सकते कि घर के आगे दिये लगा दें तो लोग आकर कहेंगे पागल है, यह क्या हो रहा है।

आज दिवाली का मुहूर्त ही नहीं तो आप नहीं मना सकते आज दिवाली आज आप होली भी नहीं मना सकते, क्योंकि होली का दिन एक निश्चित है, एक वातावरण है एक उमंग है। दिवाली का अलग दिन है, रक्षा बंधन का अलग दिन है। ठीक इसी प्रकार से नवरात्री के भी अपने आप में अलग दिन है। और प्रत्येक दिन का अपना एक अलग महत्व है।

यदि आपके पास जगदंबा साधना का ज्ञान है और आप उसको संपन्न नहीं करते, नवरात्रि के दिनों में इस साधना को नहीं कर पाते तो वास्तव में ही आपसे अधिक दुर्भाग्यशाली कोई नहीं है और यदि आप जगदम्बा की साधना को पूर्णता के साथ नवरात्रि में संपन्न कर लेते हैं तो फिर आपसे अधिक सौभाग्यशाली कोई नहीं है, क्योंकि इस साधना के द्वारा हम सभी इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं, हम जीवन में उच्चता और श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं।

और आप अपने जीवन में ऐसा कर पाएं, आप जगदंबा, साधना को संपन्न कर अपने जीवन को ऊर्ध्वमुखी बना पाएं ऐसा ही मैं आपको आशीर्वाद देता हूं, कल्याण कामना करता हूं।

-सद्गुरुदेवनिखिलेश्वरानन्द जी महाराज

यह जगत् हमारा है, हम इस जगत् के पालक हैं

तो जानिये-समझिये-अपनाइये

'श्री' अर्थात् 'लक्ष्मी'

को पूर्ण रूप से

लक्ष्मी के सम्बन्ध में इस संसार में अत्यधिक भ्रान्ति फैली हुई है। सामान्य रुप से लक्ष्मी का तात्पर्य धन और ऐश्वर्य से जोड़ दिया जाता है, लेकिन चंद रुपयों को, कुछ भोग-विलास को लक्ष्मी नहीं कहा जा सकता। लक्ष्मी तो अपने आप में एक सम्पूर्ण महामाया है, जो जगत् के संचालन में विष्णु की सहयोगी है, अर्थात् यह संसार लक्ष्मी को आधारभूत शक्ति के माध्यम से ही चल सकता है। जिस समय संसार से लक्ष्मी चली जायेगी तो इस जगत का पालन की क्रिया भी पूर्णरुप से रुक जायेगी, इसके लिए लक्ष्मी के सम्पूर्ण स्वरुप को समझना आवश्यक है।

लक्ष्मी इस विराट् जगत् की महादेवी है, लक्ष्मी शब्द संस्कृत के शब्द 'लक्ष्' से बना है, अर्थात् लक्ष्मी इस जगत् के लक्ष्य को प्रगट करती है, और यह लक्ष्य केवल भौतिक पूर्णता न होकर आध्यात्मिक पूर्णता का भी स्वरूप है। उसी व्यक्ति को हम जीवन में पूर्ण रूप से पुरुष कह सकते है जिसने अपने जीवन में भौतिकता के लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त कर लिया है, और आध्यात्मिकता के लक्ष्य को भी पूर्णरूप से प्राप्त कर लिया है। लक्ष्मी को स्त्री रूप में परिभाषित किया गया है, क्योंकि शक्ति मूलरूप से स्त्री तत्व से युक्त होती है, और वह सुन्दरता तथा प्रेम से परिपूर्ण होती है। इसका सीधा तात्पर्य है कि जो लक्ष्मी को आराध्य मानकर साधना करता है, वह प्रेम और सुन्दरता से परिपूर्ण हो जाता है।

ऋग्वेद में लक्ष्मी का वर्णन करते हुए उसे 'चंचला' कहा गया है जो कि एक स्थान पर स्थित नहीं रहेती, इसी प्रकार महाभारत में लक्ष्मी का विवरण सर्वोन्त एवं इच्छाधारिणी बताया गया है, जो कि अपनी इच्छा के अनुसार ही विचरण करती है, और जहाँ भी निवास करती है, पूर्ण गर्व के साथ निवास करती है, किसी के बन्धन में अथवा अंकुश में नहीं रह सकती है।

अब लक्ष्मी के स्वरूप को देखते है तो सामान्यरूप से लक्ष्मी को स्त्रीरूप में चतुर्भुज अर्थात् चार हाथों से युक्त स्पष्ट किया गया है, उसके साथ ही वेशभूषा में लक्ष्मी में लाल वस्त्र जोकि स्वर्ण रेखा से युक्त है उन्हें धारण किये हुआ है, उसके एक हाथ से स्वर्णमुद्राएँ नीचे गिरती हुई स्पष्ट की गई हुई है और कमल का पुष्प धारण किये हुए है, तथा वह कमल के पुष्प पर जो कि पूर्ण रूप से विकसित है, उस पर कहीं बैठी मुद्रा में और कहीं खड़ी मुद्रामें दिखाई देती है। कमल के पुष्प को धारण करने और इसके आसन पर बैठने के कारण लक्ष्मी को 'कमला' कहा गया है।

कमल पुष्प जिसे पूर्ण शुद्धता का स्वरूप कहा गया है। जो कि भगवान विष्णु का प्रतीक है अर्थात् जगत् के प्रतिपालन का स्वरूप है। उस पर लक्ष्मी आधारित है, इसके साथ ही लक्ष्मी के दोनों ओर दो हाथी अपनी सूंड उठाये हुए

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

दिखाई देते है, इसकी भी अत्यन्त गहरी व्याख्या है।

लक्ष्मी के चार हाथ जो चारों दिशाओं में है, ब्रह्माण्ड कि चारो दिशाओं को प्रगट करते है, और यह स्पष्ट करते है कि लक्ष्मी चारों दिशाओं में तथा आकाश, पाताल में भी विद्यमान है, और चारों दिशाओं में भी उसका पूर्ण महत्व है।

लक्ष्मी के लाल वस्त्र 'क्रिया' को परिभाषित करते है, क्योंकि लाल रंग तीव्रता का प्रतीक है, रक्त का रंग भी लाल है, और जब तक यह शरीर में प्रवाहित रहता है, तब तक शरीर क्रिया करता है, उसी प्रकार बाह्य रूप में भी रक्त के समान लक्ष्मी के लाल वस्त्र जगत की क्रिया को स्पष्ट करते है, जब तक यह तत्व विद्यमान रहता है, तब तक संसार में क्रियायें चलती रहती है और प्रत्येक प्राणी चाहे वह मनुष्य हो अथवा पशु-पक्षी जगत में क्रियाशील रहता है।

लक्ष्मी के वस्त्रों में सोने के रंग जैसी किनारी स्पष्ट कि गई है, यह स्वर्ण रंग उन्नति का और प्रगति का परिचायक स्वरूप है, अतः इन दोनों रंगो के पीछे यही उद्देश्य है कि भगवती लक्ष्मी जगत को प्रगति, उन्नति और वैभव प्रदान करती है, और सदैव यही क्रिया करने के लिए लक्ष्मी सदैव तत्पर रहती है। लक्ष्मी के जिस हाथ में मुद्रा आभूषण दिखाये गये है वह हाथ नीचे की ओर है, अर्थात् लक्ष्मी सदैव प्रदान करने वाली ही देवी है, और वह जगत को धन प्रदान करती है, अपने पास संग्रह करके रखने वाली देवी नही है।

लक्ष्मी सदैव कमल के आसन पर खड़ी है और यह कमल का पुष्प कैसे भी जल में खिल जाता है, उसके उपरांत भी उसके ऊपर पानी की एक बूंद नही ठहरती। अर्थात् लक्ष्मी सदैव क्रियाशील है, और जो क्रियाशील रहता है वही लक्ष्मी का अधिकारी बनता है। कमल पुष्प आसन से तात्पर्य यह है कि इस माया मोह भरे संसार में जो कि कीचड़ के समान है, जिसमें आकर मनुष्य की भावनायें, विचार, क्रियायें अशुद्ध हो सकती है, लेकिन यदि वह अपने जीवन को कमलवत रखने के लिए क्रियाशील है तो लक्ष्मी उसकी सहयोगी बनती है, संसार जो कि चारों ओर फैला हुआ है, उसमें मनुष्य रहे लेकिन उस संसार में डूबे नहीं, कमल की भांति उस संसार में पूर्ण रूप से खिलते हुए ही संसार से अलग ही रहे।

लक्ष्मी का चतुर्भुज स्वरूप अर्थात् चार हाथ इस जगत् के चार ध्रुव सत्यों को धर्म अर्थात् जो कार्य सही और सत्य हो, अर्थ अर्थात् आवश्यकता के अनुसार धन हो, काम अर्थात् जीवन की सकारात्मक शुद्ध और सही इच्छायें तथा मोक्ष अर्थात् संसार चक्र के बार-बार जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति पाकर पूर्णत्व प्राप्त करना, इन स्थितियों को लक्ष्मी के चार हाथ स्पष्ट करते है।

इसी प्रकार लक्ष्मी के आगे के दो हाथ भौतिक जगत् की क्रिया को स्पष्ट करते है और पीछे के दोनों हाथ आध्यात्मिक क्रिया का संकेत देते है, जिससे व्यक्ति पूर्ण आध्यात्मिक आत्म सुख की ओर अग्रसर हो सके।

जिस प्रकार मनुष्य के देह में दायां भाग क्रिया को स्पष्ट करता है उसी प्रकार लक्ष्मी के दायें हाथ का अग्र भाग क्रिया को स्पष्ट करता है, और पिछला हाथ जिसमें कमल पुष्प लिये हुए है, वह इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति धर्म के अनुसार अपने जीवन में सारी क्रियाएं करे और धर्म अर्थात् धारण करने योग्य विचार, क्रिया से ही व्यक्ति मोक्ष की ओर अग्रसर हो सकता है, और यह मोक्ष कमल की भांति है, जो भगवती लक्ष्मी ने अपने पिछले दाहिने हाथ में ले रखा है।

लक्ष्मी के बायें हाथ से स्वर्ण मुद्रायें गिरती हुई दिखाई देती है जो इस बात को प्रगट करती है कि वह अपने भक्तो को धन, ऐश्वर्य, सम्मान प्रदान करती है। इसी प्रकार दाहिने हाथ में आशीर्वाद मुद्रा भी है और एक प्रकार से मनुष्य को बार-बार रोक कर सोचने के लिए भी संकेत करता है, कि तुम इस जीवन में धन में ही नहीं खो जाओ, लक्ष्मी आशीर्वाद देते हुए यह संकेत देती है कि हर बार थोड़ा ठहर कर सोचो की जीवन का लक्ष्य क्या है? पिछले बायें हाथ में भी कमल का पुष्प है, वह भी मोक्ष का ही संकेत देता है।

लक्ष्मी के दोनों ओर दो हाथी खड़े दिखाई देते है जो कि जल धारा की वर्षा करते दिखाई देते है। यह दोनों हाथी व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी के साथ नाम और सम्मान को प्रगट करते है। इसके पीछे यह संकेत है कि सच्चा लक्ष्मी का साधक केवल नाम और सम्मान प्राप्त करने के लिए ही जीवन में क्रिया नही करे और न ही वह इस लिए क्रिया करे कि उसकी सारी सांसारिक इच्छाएं प्राप्त करने के लिए ही जीवन मिटा दे अपितु अपने धन, नाम और गुणो को दूसरों में भी वितरीत करें, दोनों अथवा कहीं-कहीं चार हाथियों द्वारा कि

यह जल वर्षा निरन्तर क्रिया शक्ति को स्पष्ट करती है, और जो स्वर्णिम कुम्भ हाथीयों द्वारा अपनी सूंड में धारण किया हुआ है वह ज्ञान और पवित्रता को स्पष्ट करता है, क्योंकि जल ही जीवन का प्रतीक है, और यह वर्षा अविरल हो रही है, इसका तात्पर्य यह है कि निरंतर स्व प्रयास से अपने धर्म के अनुसार जीवन जीते हुए जो कि ज्ञान और शुद्धता से परिचालित होता हो वह व्यक्ति को सांसारिक सफलता और आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करता है।

अतः यह स्पष्ट है कि मनुष्य के जीवन में निरन्तर क्रिया, धर्म, ज्ञान और आचरण में पवित्रता आवश्यक है, यही लक्ष्मी अपनी मुद्रा से स्पष्ट करती है। सामान्य रूप से लक्ष्मी के आठ रूप पूजित है, और इन अष्ट रूपो की प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आवश्यकता पड़ती ही है, लक्ष्मी के यह आठ स्वरूप है –

१. आदि लक्ष्मी – अर्थात् उत्पत्ति

२. संतान लक्ष्मी – अर्थात् जीवन में निरन्तरता

३. गज लक्ष्मी–अर्थात् शान्त भाव से जीवन में निरन्तर क्रिया

४. धन लक्ष्मी–अर्थात् जीवन में अर्थ प्राप्ति और आवश्यकता की पूर्ति के लिए धन का अभाव नहीं रहे।

५. धान्य लक्ष्मी–शरीर को पूर्ण निरोग रखने के लिए अन्न और वनस्पति तत्व आवश्यक है, और उसका स्वरूप धान्य लक्ष्मी है।

६. विजय लक्ष्मी–बाधाओं से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष करने की क्षमता और संघर्ष में जीतने की इच्छा विजय लक्ष्मी का स्वरूप है।

७. वीर लक्ष्मी – जीवन से डर का भाव, भय का भाव दूर कर निर्भय होकर जीवन जीने की शक्ति का स्वरूप वीर लक्ष्मी है।

८. ऐश्वर्य लक्ष्मी–संसार में चारों ओर हजारों सुख बिखरे पड़े है, उन्हें अपनी इच्छानुसार प्राप्त कर, सम्मान के साथ पूर्ण जीवन जीना ऐश्वर्य लक्ष्मी को स्पष्ट करता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो रहा है कि लक्ष्मी का तात्पर्य केवल रुपए, वस्त्र, आभूषण ही नहीं है, अपितु लक्ष्मी का पूर्ण तात्पर्य धन,धान्य, वीरता, ऐश्वर्य, सम्मान, क्रिया, निरन्तर प्रगति, जीवन में उत्पादकता एवं निरन्तरता, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील और क्रियाशील रहने को स्पष्ट करता है। यही जीवन के वे आठ गुण है जिनके माध्यम से जीवन पूर्ण हो सकता है, और मनुष्य भौतिकता से जीवन जीता हुआ, आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हो सकता है।

हमारे पुराणों तथा वेदों में लक्ष्मी को आदि शक्ति 'श्री' के नाम से भी सम्बोधित किया है, जो कि जगत के प्रतिपालक स्वरुप भगवान विष्णु की शक्ति है, और भगवान विष्णु को वह अर्थ शक्ति प्रदान करती है, जिससे जगत निरन्तर चल सके और सुरक्षित रह सके। मनुष्य जीवन में भी हम देखते है कि उत्पत्ति और संहार की क्रिया अत्यन्त सरल है, लेकिन उसे निरन्तर पालना तथा वृद्धि की ओर अग्रसर करना अत्यन्त कठिन कार्य है, इसीलिए मनुष्य जीवन को तपस्या भी कहा गया है। जहां मनुष्य लक्ष्मी केवल धन-धान्य मान लेता है, और केवल भौतिकता का आवरण दे देता है, वह बहुत बड़ी भूल करता है। भौतिकता तो जीवन में हर समय रहती है, उस भौतिकता में अपनी आत्मा के ध्रुव सत्य को सुरक्षित रखना और उसे सुरक्षित रखते हुए अपने आत्म तत्व को पहचानना ही लक्ष्मी का पूर्ण ज्ञान है।

कठोपनिषद में नचिकेता द्वारा जीवन के पूर्ण सत्य के सम्बन्ध में पूछे जाने पर यम यही कहते हैं कि जीवन के दो मार्ग है एक मार्ग 'श्रेय' मार्ग है और एक मार्ग 'प्रेय' मार्ग है, यह दोनो मार्ग भिन्न भिन्न प्रयोजनों से मनुष्य को बांधते है, केवल 'प्रेय' मार्ग का वरण करने वाला व्यक्ति अपने लक्ष्य से हट जाता है।

श्रेय और प्रेय यह दोनों भावनाएं मनुष्य के जीवन में निरन्तर आती रहती है, धीर पुरुष इन दोनों की परीक्षा करता है, धीर पुरुष वही है जो कोई काम जल्दी में नही करता, तत्काल फल नहीं देखता, 'प्रेय मार्ग' तत्कालिक रूप से तो अच्छा लगता है, लेकिन यह अविद्या का मार्ग है। जबकि श्रेय मार्ग वह मार्ग है जिसे संसार मे रहते हुए भी उसकी कामनाएं उसे सताती नही हैं। उसी प्रकार जो व्यक्ति संसार में रहते हुए संसार के आनन्द और सुखो का भोग नही करता है, वह अपने शरीर को पीड़ा देते हुए मन को भी पीड़ा देता है, क्योंकि वह एक ही अंधे मार्ग पर चल रहा है। ऐसे व्यक्ति की जितनी शीघ्रता से उन्नति होती है उतनी ही शीघ्रता से अवनति भी होती है।

कठोपनिषद के इस श्लोक से भी यह स्पष्ट होता है कि 'प्रेय' जीवन में रहते हुए भी अन्ततः मनुष्य के लिए 'श्रेय' मार्ग ही उत्तम है। 'प्रेय' और 'श्रेय'युक्त जीवन जिसमें अष्टलक्ष्मी हो अर्थात् धन-धान्य, संतान, विजय, वीरता के साथ साथ ज्ञान भी हो इसीलिए लक्ष्मी को 'श्री' कहा गया है क्योंकि यह 'श्रेय' मार्ग पर चलने वालों का प्रथम और अंतिम

सम्बन्ध है। इसीलिए केवल आर्थिक उन्नति करने वालों को कुछ समय के लिए संसार याद रखता है, लेकिन उससे भी अधिक महिमा उन लोगों की ही गाई जाती है, याद रखा जाता है, जो लक्ष्मी से युक्त होते हुए भी लक्ष्मी के पूर्ण स्वरूप को अपने भीतर स्थापित और जिस प्रकार लक्ष्मी के हाथ से स्वर्ण मुद्राएं बिखरती रहती हैं उसी प्रकार अपने ज्ञान और धन को जगत् के कार्यों के लिए लगाया। जो व्यक्ति केवल अपने लिए ही जीता है, केवल अपने लिए ही परिश्रम उसमें भी 'प्रेय' भावना तीव्रता से प्रवेश कर जाती है, और वह केवल उसी मार्ग पर चलता रहता है, वह 'श्रेय' मार्ग को भूल जाता है, ऐसे व्यक्ति के पास 'श्री' अर्थात् लक्ष्मी स्थायी रूप से नहीं रह सकती है।

जब जब विष्णु का किसी न किसी रूप में अवतार होता है तो उसके साथ लक्ष्मी प्रगट होती ही है। जिस प्रकार जब विष्णु राम के रूप में प्रगट हुए तो लक्ष्मी सीता के रूप में प्रगट हुई, जब विष्णु ने कृष्ण के रूप में अवतार लिया तो वह रुक्मणी रूप में प्रगट हुए, जब भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया तो लक्ष्मी पद्मा के रूप में प्रगट हुई।

लक्ष्मी के सम्बन्ध में केवल धन की शक्ति मानना भी गलत है, क्योंकि लक्ष्मी के एक सौ आठ स्वरूप है ये एकसौ आठ स्वरूप उनके नामों से ही प्रगट होते है। ये एकसौ आठ नाम निम्न है-

१.महामाया, २.महालक्ष्मी, ३.महावाणी, ४.माहेश्वरी, ५.महादेवी, ६.महारात्रि, ७.महिषासुरमर्दिनी, ८.कालरात्रि, ९.कुहू, १०.पूर्णा, ११.नन्दाधा, १२.भद्रिमा, १३.निशा, १४.जया, १५.रिक्ता, १६.महाशक्ति, १७.देवमाता, १८.कृशोदरी, १९.शचीन्द्राणी, २०.शक्रनुता, २१.शंकरप्रियवल्लभा, २२.महावराहजननी, २३.मदनोन्मथनी, २४.तारा, २५.वैकुण्ठनाथरमणी, २६.विष्णुवक्षस्थलस्थिता, २७.विश्वेश्वरी, २८.विश्वमाता, २९.वरदा, ३०.शिवा, ३१.शूलिनी, ३२.चक्रिणी, ३३.पाशिनी, ३४.शंखधारिणी, ३५.गदिनी, ३६.मुण्डमाला, ३७.कमला, ३८.करुणालया, ३९.पद्माक्षधारिणी, ४०.महाविष्णुप्रियंकरी, ४१.गोलोकनाथरमणी, ४२.गोलोकेश्वरपूजिता, ४३.तारिणी, ४४.गंगा, ४५.यमुना, ४६.गोमती, ४७.गरुड़ासना, ४८.नर्मदा, ४९.सरयूतापी, ५०.कावेरी, ५१.किशोरी, ५२.संतापहारिणी, ५३.सर्वकामप्रदा, ५४.मातंगी, ५५.पयस्विनी, ५६.केशवनुता, ५७.महेन्द्रपरिवन्दिता, ५८.ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी, ५९.देवपूजिता, ६०.कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था, ६१.कोटिब्रह्माण्डकारिणी, ६२.श्रुतिरूपा, ६३.श्रुतिकरि, ६४.श्रुतिस्मृतिपरायणा, ६५.इन्दिरा, ६६.सिन्धुतनया, ६७.केदारस्थलवासिनी, ६८.लोकमातृका, ६९.त्रिलोकजननी, ७०.तन्त्रा, ७१.तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी, ७२.तरुणी, ७३.तमोहन्त्री, ७४.मंगला, ७५.मंगलायतना, ७६.मधुकैटभमर्दिनी, ७७.निशुम्भाविहरा, ७८.माता, ७९.मही, ८०.हरिशंकरपूजिता, ८१.सर्वदेवमयी, ८२.सर्वा, ८३.शरणागतपालिनी, ८४.शरण्या, ८५.शम्भुवनिता, ८६.सिन्धुतीरनिवासीनी, ८७.गन्धर्वगानसिका, ८८.गीता, ८९.गोविन्दवल्लभा, ९०.त्रैलोक्यपालिनी, ९१.तत्वरूपा, ९२.तारुण्यपुरिता, ९३.चन्द्रवली, ९४.सर्वार्थसाधिनी, ९५.चन्द्रमुखी, ९६.चन्द्रिका, ९७.चन्द्रपूजिता, ९८.चन्द्रा, ९९.शशांकभगिनी, १००.गीतवाद्यपरायणा, १०१.सृष्टिरूपा, १०२.सृष्टिकरी, १०३.संहारकारिणी, १०४.सृष्टि, १०५.सुखसौभाग्यसिद्धिदा, १०६.धनेश्वरी, १०७.वागेश्वरी, १०८.सर्वानन्दा।

उन नामो से ही यह प्रगट होता है कि लक्ष्मी जगत की आदि शक्ति है, लक्ष्मी ही जगत् की पालन शक्ति है, लक्ष्मी ही जगत् की भौतिक और आध्यात्मिक शक्ति है। वास्तव में ऋग्वेद में लक्ष्मी के स्थान पर बार-बार 'श्री' के रूप में आया है, जिस का तात्पर्य यह है कि धन, सम्मान और सुन्दरता की अधिष्ठात्री देवी।

लक्ष्मी का सबसे प्रिय स्तोत्र भी 'श्रीसूक्त' कहा गया है, क्योंकि 'श्री' सिद्धि तथा उन्नति लाती है, और मनुष्य में महानता प्रदान करती है। तैतरीय उपनिषद में लक्ष्मी को वस्त्र, पशु, भोजन और जल की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है। इसी प्रकार वेदों में 'श्री' का तात्पर्य उत्पादन जननी और वृद्धि के स्वरूप में दर्शाया गया है, जो कि प्रगट होने पर भूमि को धान्य से पूर्ण कर देती है।

उसी प्रकार वैदिक काल मे ही लक्ष्मी को देवताओं के अधिपति इन्द्र के साथ युक्त बताया है। इन्द्र अर्थात् जो कि

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

देवताओं के राजा है, और निरन्तर जीवन शक्ति तथा वर्षा के अर्थात् जल धारा को पृथ्वी पर लाने वाले है, इसीलिए लक्ष्मी का एक नाम 'शक्रिइन्द्राणी' है।

इसी प्रकार लक्ष्मी को 'धर्म' के साथ भी संयुक्त किया गया है, जो कि सत्य और सही जीवन दिशा का प्रतीक है।

लक्ष्मी को 'सोम' के साथ भी संयुक्त बताते हुए 'सोम' की शक्ति बताया गया है, 'सोम' अर्थात् संसार में फैली हुई वनस्पतिओं के देव और कुबेर अर्थात संसार के धन को रखने वाले तथा श्रेष्ठ पुरुषों में धन को वितरीत करने वाले देव के साथ युक्त बताया गया है।

बाद के पुराणों में लक्ष्मी को विष्णु के साथ युक्त बताया गया है, जब की अपने वास्तविक रूप में लक्ष्मी 'रघु' ऋषि की पुत्री थी, और 'रघु ऋषि' ब्रह्मा के पौत्र थे, तथा 'रघु' और उनकी पत्नी 'ख्याति' से उत्पन्न हुई। बाद के अवतारों में वह समुद्र से उत्पन्न हुई तथा इस देवी ने विष्णु का वरण किया, उस प्रकार लक्ष्मी के यह भिन्न-भिन्न स्वरूप एक ही तथ्य को स्पष्ट करते है कि लक्ष्मी अर्थात 'श्री' जगत की चिरन्तनि, शाश्वत देवी है जो अपने शुद्धता के रूप में जगत में सदैव विद्यमान रहती है, और जगत का पालन करने के लिए उस संसार को सुन्दरतम रूप देने के लिए जिस से कि मनुष्य यह जीवन आनन्द से भोग सके, और उसे जीवन में निरन्तर आनन्द प्राप्त होता रहे, इसलिए लक्ष्मी-'श्री' धन,वैभव, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, रस, ऐश्वर्य, वृद्धि की अधिष्ठात्रि देवी है, और जो शुद्ध रूप से 'श्री' का वरण करता है वही लक्ष्मी पति है, क्योंकि हर व्यक्ति में पुरुष में भगवान विष्णु का एक अंश विद्यमान है और हर व्यक्ति अपने जीवन में लक्ष्मी को संयुक्त करना चाहता है। उसे अपने जीवन में 'श्रेय' मार्ग का पालन करना ही पड़ेगा तभी वह अपने जीवन को पूर्णता के साथ जीते हुए श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है, 'श्री' का अधिकारी बनता है।

अतः आजकल के इस भौतिकतावादी युग में अधिकतर व्यक्ति लक्ष्मी के पीछे भागते है, और येन-केन प्रकारेण धन कमाने को ही लक्ष्मी प्राप्ति मान कर अपने आप में घमंड का अनुभव करते है, जब कि वास्तव में लक्ष्मी प्राप्ति का तात्पर्य है अपने 'लक्ष्य की प्राप्ति और ऐसे लक्ष्मी जो कि 'श्री' से युक्त हो क्योंकि 'श्री' ही लक्ष्मी का आदि स्वरूप है। लक्ष्मी चंचला हो सकती है, अस्थायी हो सकती है, जीवन में उतार-चढ़ाव ला सकती है, लेकिन 'श्री' जीवन में मान-सम्मान, स्थिरता, धीरता, गंभीरता, आयु, आरोग्य, वर्चस्व, बन्धु, बान्धव, संतान, उन्नति, लाभ, शान्ति और आनन्द को अपने पूर्ण प्रकाश के साथ प्रगट करती है।

जैसा कि मैंने दीपावली २००० के विशेषांक में लिखा है कि जहां लक्ष्मी की आदि शक्ति 'श्री' रहती है, वहां लक्ष्मी की पीठ शक्तियों और उन पीठ शक्तियों के साथ लक्ष्मी अर्थात् 'श्री' अपनी षोडश कलाओं के साथ विद्यमान रहती है, इसीलिए हम भगवान विष्णु को 'श्री विष्णु' कहते है, भगवान राम को 'श्रीराम' कहते है, कृष्ण को 'श्री कृष्ण' कहते है, और अवतारी पुरुषों को, सम्मानीय व्यक्तियों को उनके नाम के आगे 'श्री' लगा कर संबोधित करते है।

लक्ष्मी की पीठ शक्तियां

१.इच्छा, २.ज्ञान, ३.क्रिया, ४.कामिनी, ५.रति, ६.रतिप्रिया, ७.कामदायिनी, ८.नन्दा, ९.मनोन्मनी

अर्थात् जहां लक्ष्मी है वहीं इच्छाओं का, ज्ञान का, रसागर है, रतिसुख, कामसुख, मनोइच्छापूरिणी वहीं विद्यमान होती है। और जहां लक्ष्मी अपना आसन ग्रहण करती है, अर्थात् जिस घर में लक्ष्मी का आगमन होता है, तो इस आगमन के साथ ही लक्ष्मी की सोलह चन्द्र कलाएं घर के वातावरण को आलोकित कर देती है

लक्ष्मी की षोडश कलाएं--

१.अमृता, २.मानदा, ३.पूषा, ४.पुष्टि, ५.तुष्टि, ६.रति, ७.धृति, ८.शशिनी, ९.चन्द्रिका, १०.कान्ति, ११.ज्योत्स्ना, १२.श्री, १३.प्रीति, १४.अंगदा, १५.पूर्णा, १६.पूर्णामृता। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि लक्ष्मी अर्थात्'श्री' अपनी पीठ शक्तियां और कलाओं के साथ जगत को प्रकाशमान रखती है, और जहां प्रकाश है वहां अज्ञान का, गर्व का, चिंता का अंधकार नहीं आ सकता है, और मनुष्य अपना जीवन चतुर्वर्ग पूर्ण अर्थात धर्म, अर्थ, और काम के साथ जीता हुआ परम तत्व, परमानन्द को प्राप्त करता है। यही लक्ष्मी की पूर्ण आराधना है, ऐसी महालक्ष्मी 'श्री' का हम सब वंदन करते है।

दीपावली उत्सव नहीं, महा कल्प है, अंधकार से प्रकाश की ओर बढने का क्रियात्मक कल्प है,

समझे अपने आपको

दीपावली

समझो

पांचवा कल्प करो

दीपावली का पर्व उत्साह, उमंग, लक्ष्मी पूजा इत्यादि के रूप में सम्पन्न किया जाता है, उसके पीछे कई महान् उद्देश्य हैं। दीपावली केवल दीप जलाकर रोशनी करना, और मिष्ठान इत्यादि का भोज करने तक ही सीमित नहीं है, आईये देखते हैं हम क्यों मनाते हैं, दीपावली और तांत्रिक विज्ञान में इसका क्या महत्व है–

मूल रुप से दीपावली का संस्कृत भाषामें अर्थ है – 'दीप' अर्थात् प्रकाश और 'आवली' का तात्पर्य क्रम अर्थात् दीपावली क्रम बद्ध रूप से प्रकाश के प्रतीक और प्रकाश के जनक दीपक को क्रम बद्ध रूप से प्रज्वलित करने की क्रिया है, यह दीपोत्सव केवल प्रतीक रूप में है, मूल रुप से उसका उद्देश्य अंधकार और अज्ञान को दूर करना है।

यह एक ध्रुव सत्य है कि व्यक्ति अपने जीवनमें अंधकार से बहुत अधिक डरता है, और अंधकार में वह अकेला होता है, और उसे मानसिक भय सताने लगता है। राक्षस, भूत–पिशाच भी अंधकार में ही विचरण करते है, प्रकाश में देवता विचरण करते है। हम प्रतिदिन देव पूजा प्रातः काल सूर्योदय के समय सम्पन्न करते है, उसके पीछे यही भावना होती है, कि जिस प्रकार सूर्य उदय होकर जगत् का अंधकार मिटा रहे है, उसी प्रकार दैवीय शक्ति भी हमारे जीवन में आकर अंधकार को पूर्ण रुप से दूर करें।

जिस प्रकार दीपावली का तात्पर्य घोर अंधकार में प्रकाश फैलाना है, और उसे स्थायी रुप से जीवन में उतारना है, इसीलिए हम नित्य प्रति गुरुपूजन भी अपने जीवन में करते है, क्योंकि गुरु शब्द का तात्पर्य ही अंधकार को समाप्त करने वाला है, इसीलिए शास्त्रों में गुरु वंदना में कोई धन, अर्थ, इच्छापूर्ति, काम इत्यादि की मांग नही की गई है, केवल यही प्रार्थना की गई है कि–

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जल शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

अर्थात् जो अपनी ज्ञान शलाका से हमारे नेत्र खोल दे, और उनमें वह ज्योति भर दे, जिससे हमारे जीवन का अंधकार पूर्ण रुप से दूर हो सके, उन गुरु को मैं प्रणाम करता हूं।

अर्थात् गुरु एक प्रकाश स्तंभ है, जो दूसरो के जीवन को प्रकाशित करता है, उनके जीवन के अज्ञान की कालिमा को मिटाता है, क्योंकि संसार में सारे दुःखों का मूल कारण अज्ञान ही है, जिस कार्य का हमें ज्ञान नही होता है, और जिस कार्य में हमारी बुद्धि से हम विजय प्राप्त नही कर सकते है, वह जीवन की बाधा लगती है और जब इस कार्य को करने का तथा उस समस्या के निवारण का उपाय आ जाता है, तो वह बाधा बहुत छोटी लगती है, और उसके कारण से मन–मस्तिष्क दुःखी नही होता और दुःख का मूल कारण भी अज्ञान ही है, उस प्रकार दीपावली पर्व मूल रूप से गुरु पर्व है, जिस दिन हम यह प्रार्थना करते है कि हमारे जीवन में अंधकार सदैव के लिए समाप्त हो जाय, और ज्ञान से पूर्ण रुप से युक्त हो जाय।

हिन्दू धर्म में कर्म सिद्धांत को मान्यता देते हुए पूर्व जन्म के कार्यों को भी पूर्ण महत्व दिया गया है, यदि कोई व्यक्ति इस जन्म में भौतिक दृष्टि से वैभव वान होता है, तो यह माना जाता है कि यह उसके पूर्व जन्मो में किये गये श्रेष्ठ कार्यों का, पुण्य का फल है, जिस के कारण से इस जन्म में श्रेष्ठ कुल में जन्म हुआ, और आर्थिक उन्नति निरन्तर कर रहा है। कई बार लोग मुझ से यह प्रश्न पूछते है कि अमुक व्यक्ति इतना अधिक दुराचारी, दुष्ट है, धर्महीन है उसके उपरांत भी वह व्यक्ति क्यों निरन्तर उन्नति कर रहा है? क्यों उसके जीवन में बाधाएं नहीं आती है? जब की हम नियमित रूप से विशेष साधनाएं करते है, सदाचार से जीवन जीते है, ईश्वर भक्ति, गुरु भक्ति करते है लेकिन फल की प्राप्ति नहीं होती। इस सम्बन्ध में मेरा सदैव यही उत्तर रहता है कि जिस प्रकार अधिक मैला वस्त्र होता है, उसे पूर्णतः स्वच्छ और सुन्दर बनाने के लिए बार-बार धोना पड़ता है, उसका मैल समाप्त करने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है, और यही कारण है कि आप लोग साधना के द्वारा, तपस्या के द्वारा, सदाचार जीवन के द्वारा, पूर्व जन्म के दोषो को दूर कर रहे है, संचित कर्म का थोड़ा कष्ट का फल भोग रहे है, लेकिन उस जीवन में 'क्रियमाण' श्रेष्ठ कार्यों द्वारा अपने आगे के जीवन को श्रेष्ठ बना रहे है, और आने वाले जीवन की भी श्रेष्ठ पृष्ठ भूमि तैयार कर रहे है। क्योंकि आत्मा अविनाशी है, देह एक वस्त्र रुपी उस पर चोला है। इस देह अर्थात् मनुष्य जीवन को जीतना अधिक श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करेंगें उतने ही आने वाले समय की बाधाओं की कांटों को दूर कर रहे है, उसमें किसी को कम समय लग सकता है, और किसी को ज्यादा समय लग सकता है,लेकिन 'क्रियमाण' कर्म का फल अवश्य ही प्राप्त होता है। दीपावली भी हमें यही भावना देती है कि हम शीघ्रता से शीघ्र अपने जीवन के अंधकार को दूर कर पूर्ण प्रकाश से आलोकित हो सके।

दीपावली महाकल्प

जैसा कि मैंने पिछले अंक में लिखा थी की दीपावली का महाकल्प नवरात्रि के साथ ही साथ और विशेष रुप से विजया दशमी के दिन से प्रारंभ होता है, और यह महाकल्प कार्तिक

दुर्गोत्सव के साथ ही पूर्ण होता है, अर्थात् विजयादशमी के पश्चात् के पांच दिन और पूरा कार्तिक मास साधनात्मक महाकल्प है, जिसका प्रारंभ विजय उत्सव के रुप में प्रारंभ होता है, और उसकी पूर्णता संन्यास जयंति के दिन होती है, अर्थात् इन छत्तीस दिनो में जीवन के चारों वर्गो से सम्बन्धित धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधनाएं सम्पन्न की जा सकती है, और इन छत्तीस दिनो के मध्य में दीपावली पंच पर्व आता है, जो धनत्रयोदशी से प्रारंभ होकर यम द्वितीया के दिन पूर्ण होता है, और ये पांच दिवस का विशेष महत्व है, लेकिन उसके पहले यह जानना आवश्यक है कि इन पांच दिवसों का क्या विशेष महत्व है? जिन के कारण यह दिवस इतने महत्वपूर्ण बन गये है।

(१) विश्व धार्मिक महान ग्रंथ रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का बनवास समाप्त कर रावण जैसे महाराक्षस को समाप्त कर अयोध्या नगरी लौटे थे और उनके स्वागत के लिए पूरे अयोध्या महासाम्राज्य में वहां के निवासीयों ने अपने प्रिय राम का स्वागत करने के लिए पूरी नगरी को तीन दिन पहले से ही जग मगाना प्रारंभ कर दीया था, उस कारण दीपावली का विशेष महत्व है, कुछ आख्यान विशेष हैं जो युगों-युगों से चले आ रहे हैं।

(२) भगवान राम से भी पहले उस पृथ्वी पर सम्राट पृथु हुए और उनके राज्यकाल में एकबार भयंकर अकाल पड़ा, तो उन्होंने संकल्प लिया की मैं तपस्या के माध्यम से इन्द्रादि देवताओं को वश कर दुंगा और उन्हें उस पृथ्वी को जल से आप्लावित करना ही पड़ेगा, इस हेतु उन्होंने विशेष तपस्या और महायज्ञ किया, तथा यज्ञ के साथ साथ ही पूरे साम्राज्य में आदेश दे दिया की पूरी पृथ्वी पर जो भी कृषि योग्य भूमि है, उसे जोत दो, मेरी तपस्या के फल स्वरुप पूर्ण वर्षा होकर रहेगी, और उन्होंने नवरात्रि से यह महान तपस्या प्रारंभ की और अत्याधिक वर्षा हुई जिसके कारण से पूरी पृथ्वी पर धान्य लक्ष्मी से आप्लावित हो गई। इसलिए दीपावली के दिन धान्य लक्ष्मी की विशेष रुप से पूजा की जाती है क्योंकि पृथ्वी पर जीवन का आधार जल और वनस्पति ही है, जिससे मनुष्य की क्षुधा शान्त होती है, आरोग्य हेतु औषधियां प्राप्त होती है, इसीलिए पूरे भारत वर्ष में ग्राम्य जीवन में इन्द्रादि देवताओं को धन्यवाद देने के लिए यह उत्सव रूप में पर्व सम्पन्न किया जाता है।

(३) दीपावली पंच पर्व का पहला पर्व कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को आने वाला धनत्रयोदशी पर्व है, उसके पीछे भी महान गाथा है। इस दिन समुद्र मंथन से आयुर्वेद के जनक धन्वतरी महाऋषि समुद्र से प्रगट हुए, इन्हीं महान धन्वतरी ऋषि ने मनुष्य जीवन जीने का नया उपाय बताया और यह स्पष्ट किया कि किस प्रकार वात-पित्त, कफ के शुद्धि से जीवन रोग मुक्त हो सकता है। उसके साथ ही धनत्रयोदशी मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की क्रिया का महान पर्व है, उसके पीछे एक अत्यन्त ही विशेष आख्यान है।

(४.) मृत्यु के देवता यमराज माने गये है, और उसी के साथ साथ उन्हें धर्मराज भी कहा गया है, उनका कार्य भी संसार में मनुष्य जीवन पूर्ण होने पर उसकी आत्मा को ऊपरी लोक देव लोक में ले जाना है। पुराणों में कथा आती है कि एकबार धर्मराज ने अपने दूत को एक राजकुमार की आयु समाप्त होने पर उसकी देह से आत्मा लाने के लिए भेजा, वह धर्मराज का दूत थोड़ा हिचकिचाने लगा, उसपर धर्मराज ने कहा कि यह तो तुम्हारा कार्य है, तुम क्यों दुःखी होते हो? उस पर दूत ने कहा कि महाराज ! आप जिस राजकुमार की आत्मा लाने का कह रहे है, वह मात्र सोलह वर्ष का है, और उसका विवाह हुए केवल चार दिन हुए है, ऐसे राजकुमार की आत्मा लाने पर मुझे मन में बड़ा ही कष्ट हो रहा है, और जो व्यक्ति अकाल मृत्यु अर्थात् असमय मृत्यु पाता है, उनके घर परिवार वालो का रोते बिलखते देखना मन को बड़ी ही पीड़ा देता है, वृद्ध और युग के अनुसार पूर्ण आयु प्राप्त व्यक्ति की आत्मा लाने में मुझे दुःख नही होता है, क्योंकि वह तो संसार में सारे सुख भोग चुका है, और मोक्ष गति, परमगति के लिए तत्पर है, इस पर यमराज ने कहा-इस युवक की आत्मा मैं स्वयं लेकर आऊगां।

इस आख्यान में जिस युवक की आत्मा लानी थी, वह राजा 'हिम' का सोलह वर्षीय पुत्र राजकुमार था, उसके जन्म होने पर साम्राज्य में प्रसन्नता मनाई गई, और 'राजा हिम' ने उसकी जन्म कुण्डली ज्योतिषियों से बनवाई, और फलादेश जानना चाहा तब ज्योतिषियों ने कुण्डली का विवेचन करने पर यह कहा कि यह बालक सोलह वर्ष की आयु में विवाह करेगा और विवाह के चार दिन बाद ही सर्प दंश से इसकी मृत्यु हो जायेगी, 'राजा हिम' ने यह बात अपने पुत्र को बताई और जिस कन्या से उसने विवाह करना चाहा, उस कन्या को भी बता दिया कि मेरे पुत्र की आयु विवाह के पश्चात चार दिन की ही है, उस कन्या ने कहा कि, मैं भी संकल्प लेती हूं कि अपने

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

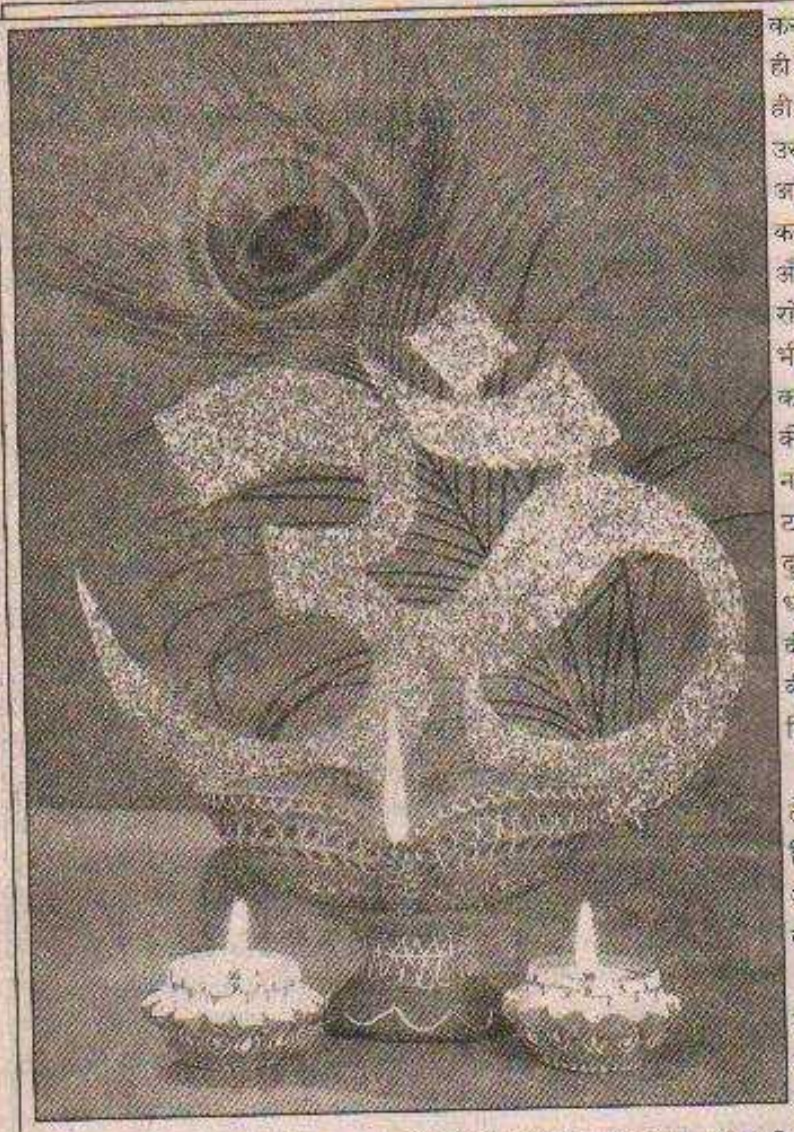

कर उसके घर आये तो चारों और प्रकाश ही प्रकाश देखकर विचलित हो गये, साथ ही आभूषणों पर जो प्रकाश पड़ रहा था, उससे और अधिक दिव्यता पूरे घर में आ गई थी, सर्प हमेशा अंधेरे में ही प्रहार करता है, और जब अंधेरा ही नहीं था और पति-पत्नी दोनों जाग्रत साधना कर रहे थे तो यह स्थिति देखकर यमराज को भी पुनः लौटना पड़ा, तथा उस बालक का जीवन बच गया, और वरदान दिया की जहां पूर्ण प्रकाश होगा वहां मृत्यु प्रवेश नहीं कर सकेगी और एक बार अकालमृत्यु टल जाने पर व्यक्ति के जीवन में वह संकट दुबारा नहीं आता है, और उस दिन से ही धनत्रयोदशी के दिन घर में और बाहर दीपक जलाकर यमराज को अर्पित करने की परंपरा प्रारंभ हुई और उसे 'यमदीपदान दिवस' भी कहते है।

यह एक कथा अवश्य हो सकती है, लेकिन दो-तीन बातें इस कथा से हमें विशेष रूप से ज्ञान होता है कि साधना और तपस्या द्वारा, संकल्प द्वारा मृत्यु को भी टाला जा सकता है।

जिसका जीवन आलोकित रहता है, घर अर्थात् देह, मन ज्ञान से प्रकाशवान रहते है, और अज्ञान रूपी अंधकार नहीं होता, वहां चिंता रूपी मृत्यु नहीं आ सकती। यदि पति-पत्नी में पूर्ण प्रेम है, तो स्त्री अपनी साधना द्वारा अपने परिवार की जीवन की रक्षा तो कर ही सकती है, पूरे घर को भी ज्ञान प्रकाश से आलोकित रख सकती है, वहां उस घर में रोग, शोक, दुःख नहीं आ सकते।

उसके साथ ही इस दिन आभूषण पूजा का विधान इसलिए है कि हम स्वयं देख ले की हमारे पास कितनी संपत्ति है, मृत्यु किसी भी रूप में आ सकती है, हम अपने संचित धन का उपयोग किस प्रकार से श्रेष्ठ रूप में करें, जिससे जीवन में किसी भी प्रकार की कोई चिंता नहीं रहे।

साथ ही यह दिवस धनवन्तरी साधना का भी दिवस है, जो कि आयुर्वेद के जनक है, जिन्हों ने यह शिक्षा दी की किस

पतिव्रत धर्म कि रक्षा करते हुए, यमराज को किसी भी स्थिति में नहीं जीतने दूंगी, और अपने पति की अकाल मृत्यु का निवारण अवश्य करूंगी।

संयोग या दुर्योगवश कार्तिक मास की त्रयोदशी के दिन विवाह के पश्चात का चतुर्थ दिन आया, उस दिन 'राजा हिम' की पुत्र वधू ने अपने घर के द्वार पर अपने सारे आभूषण, धन, धान्य इत्यादि रख दिये, और पूरे घर को मिट्टी के दीयों में घी भर कर प्रकाश से आलोकित कर दिया, पूरा घर प्रकाशवान हो गया, घर के किसी भी कोने में अंधेरा नहीं रहा, और उस रात्रि को उसने अपने पति को सोने नहीं दिया, और स्वयं साधना करने लगी, जब धर्मराज यमराज सर्प का रूप धारण

प्रकार आहार, विहार द्वारा जीवन को स्वस्थ रखा जा सकता है, उस प्रकार वह दिवस 'आरोग्य सिद्धि' दिवस है, 'गृहस्थसुख प्राप्ति' दिवस है, 'भय निवारण' दिवस है, उस दिन 'शिव साधना', 'यम साधना', 'गणपति साधना' प्रारंभ करने का श्रेष्ठ दिवस है।

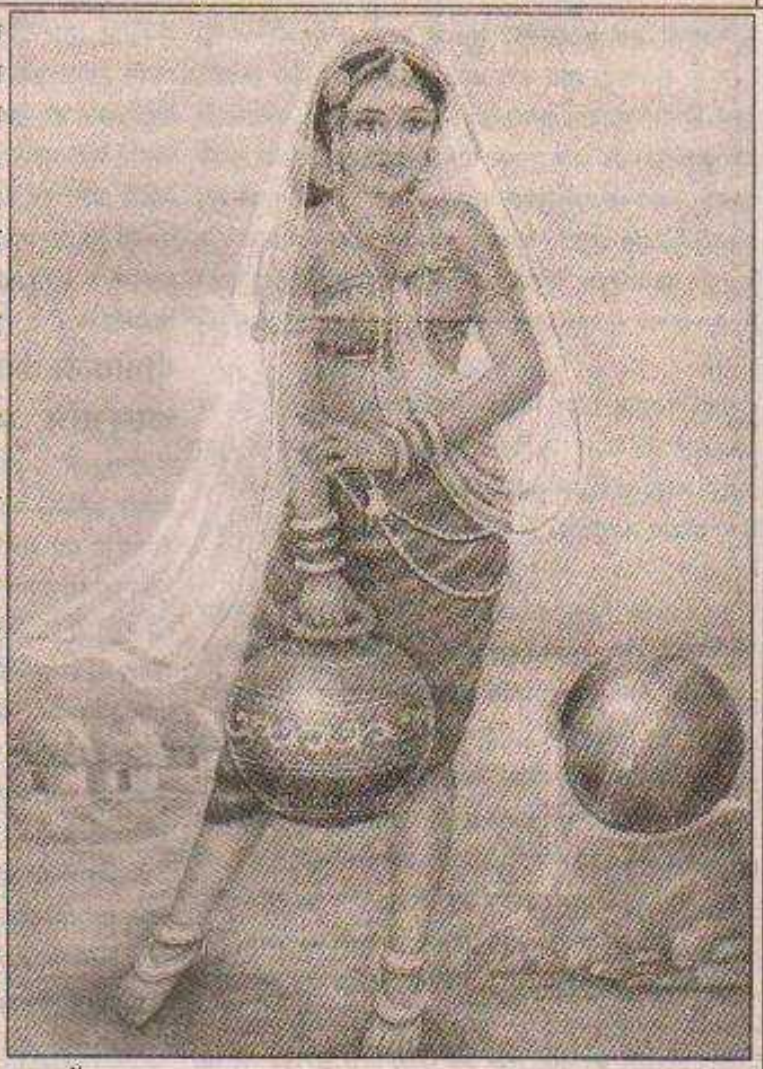

दीपावली पंचकल्प का द्वितीय दिवस- 'रूपचर्तुदशी'

कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को पड़ने वाले दिवस और रात्रि को 'रूपचतुर्दशी' तथा सौन्दर्य दिवस, अप्सरा दिवस, स्त्री शक्ति दिवस कहा जाता है, उसके पीछे भी महान आख्यान है, हमारे सारे उत्सव केवल मौजमस्ती के लिए नहीं बने है, उनके पीछे निश्चित सत्य और विशेष कारण है, उस कारण वह दिवस अपने आप में कार्य विशेष के मुहूर्त दिवस और रात्रि बन जाते है, जिनका उपयोग पूर्ण साधनात्मक रूप से अवश्य करना चाहिए। कई स्थानों पर 'रूप चतुर्दशी' को 'नरक चर्तुदशी' कहा गया है, और सामान्य व्यक्ति स्वर्ग और नरक, दोनों ही नामों से घबराता है, और कोई भी व्यक्ति स्वर्गवासी अथवा नरकवासी नहीं होना चाहता।

पुराणों में उल्लेखित कथा के अनुसार द्वापर युग में नरकासुर नामका एक पराक्रमी हुआ था और उसने कई राजाओं पर विजय प्राप्त कर अपने साम्राज्य का विस्तार कर लिया था, नरकासुर मूल रूप से 'प्रयागज्योतिषपुर' जो कि वर्तमान में दक्षिण नेपाल में आया हुआ है, वहां का राजा था और अपने विजय अभियान में अंततः इन्द्र पर भी विजय प्राप्त कर ली, तथा इन्द्र का छत्र तथा इन्द्राणी के कुण्डल लेकर चला गया, इस प्रकार से इन्द्र और इन्द्राणी का अपमान किया। इन्द्राणी द्वारा और अन्य देवताओं द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान श्रीकृष्ण ने उसको पराजित करने का विचार किया, लेकिन भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी 'सत्यभामा' जो की 'इन्द्राणी (अदिति)' की बहन थी, उसने संकल्प लिया की यह युद्ध तो मैं स्वयं करूंगी, और आप (कृष्ण) केवल मेरे सारथी बनोगे, क्योंकि नरकासुर जो कि महान पराक्रमी और शिव भक्त था, उसने मृत्यु पर विजय प्राप्ति का वरदान मांगा था तो भगवान शिव ने कहा की संसार का कोई भी पुरुष तुम्हें पराजित नहीं कर सकेगा, उस कारण सत्यभामा ने युद्ध लड़ने कि इच्छा व्यक्त की क्योंकि उसे अपने बहन और परिवार के मान-सम्मान की रक्षा करनी थी, महासंग्राम हुआ कृष्ण सारथी बने और सत्यभामा ने उस युद्ध में विजय प्राप्त कर नरकासुर का सिर काट दिया, और उसका रक्त तिलक भगवान श्रीकृष्ण को लगाया, और इस महासंग्राम के पश्चात् कृष्ण इस लोक में आए तो उनकी प्रियाओं ने और श्रीकृष्ण की प्रियाएं तो जगत की सारी नारियां

है श्रीकृष्ण भक्त है, उन्होंने सब से पहले कृष्ण को अच्छी तरह से स्नान इत्यादि करा कर, युद्ध का रक्त मैल इत्यादि साफ किया, भगवान कृष्ण को उबटन (गंधलेप) इत्यादि से देह सुगन्धित की और उनका षोडश श्रृंगार किया तथा उसके पश्चात स्वयं भी यह क्रिया कर षोडश श्रृंगार कर अपने रूप को सौन्दर्यवान बनाया, कृष्ण आगमन से पहले अपने घरों के द्वार पर, दिवारों पर अनेक प्रकार की चित्र जिसे रंगोली कहते है, उससे घर सजाये, तथा पूरा लोक दीपों से आलोकित कर लिया।

यहां पर एक और विशेष बात पुराणों में लिखी है कि नरकासुर की माता 'भूदेवी' ने कहा कि नरकासुर का मृत्यु दिवस शोक का दिवस नहीं है, यह संसार की सभी स्त्रियों के लिए उत्सव का दिवस है, स्त्री शक्ति की महानता का दिवस है।

इसी कारण नरक चर्तुदशी अथवा रूपचर्तुदशी अपने घर को सुसज्जीत कर अपने आप को भीतर और बाहर से स्वच्छ, सुन्दर कर, आभूषण इत्यादि धारण कर भगवान श्रीकृष्ण के स्वागत का दिवस है, भगवान श्रीकृष्ण जो कि मधुसूदन, मोहक, और प्रेम के देव माने जाते है, उनके स्वागत का दिवस है, जिस दिन स्त्रियां प्रेम रस से आपूरित होकर घर को सजाती है, स्वयं को सजाती है, और अपने अपने वीर पति का स्वागत करती है, इस प्रकार यह वीरता और प्रेम का दिवस है, जिस दिन श्रृंगार रस, सौन्दर्य रस, प्रेम रस को पूर्ण रूप से प्रकट किया जाता है। स्त्री की सुन्दरता, उसकी शालीनता और रूप के साथ साथ पूर्ण श्रृंगार में भी है।

इसके साथ ही साथ यदि हम दूसरे रूप में देखे तो यह दिवस **'स्त्री शक्ति'** का प्रतीक दिवस है ही है साथ ही अन्याय, पाप अर्थात् नरक पर विजय प्राप्त कर अपने घर को स्वर्ग के समान सुन्दर बनाने का भी प्रतीक दिवस है। इसी कारण इस दिन की गई श्रीकृष्ण साधना, शक्तिसाधना, अप्सरा साधना, सौन्दर्य साधना पूर्ण रूप से अपना फल अवश्य प्रदान करती है।

तांत्रिकों ने भी इस दिवस के महत्व को समझा और तंत्र विद्या मे पूर्ण सफलता के लिए श्मशान इत्यादि एकांत स्थान पर जाकर साधना सम्पन्न करते है, क्योंकि यह दिवस शक्ति दिवस है, और श्मशान सदैव जाग्रत रहता है, वहां अनेक अशरीरी आत्माएं मंडराती रहती है, उनके बीच साधना करने से भीतर का भय पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, और वह तंत्र में सिद्धि प्राप्त कर लेते है। लेकिन यह भी ध्रुव सत्य है कि किसी गलत उद्देश्य से मैली विद्या अथवा किसी सत्यवान, श्रेष्ठ व्यक्ति को, देव भक्त व्यक्ति को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से किसी कोई भी साधना सफल नहीं हो सकती है, क्योंकि यह दिवस और रात्रि ही अन्याय, अंधकार, अज्ञान और अनाचार पर विजय का दिवस है, इस दिन स्त्री जो कि भगवती देवी स्वरूपा है उसने अपने ही बल को पूर्णरूप से प्रकट कर विजय प्राप्त की थी।

दीपावली पंचकल्प का तृतीय दिवस- कालरात्रि, महादीपावली-

दीपावली पंचकल्प के मध्य में पड़ने वाला यह दिवस सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, और कार्तिक अमावास्या को दीपावली पर्व सम्पन्न किया जाता है, सामान्य जनजीवन में जिसे लक्ष्मी पूजन का दिवस माना जाता है, और अमावास्या कि रात्रि में दो स्थिर लग्न, वृषभ लग्न और सिंह लग्न में गणेश-लक्ष्मी इत्यादि का विशेष पूजन किया जाता है, लेकिन पाठकों को यह जानना भी अत्यन्त आवश्यक है कि इस दिन लक्ष्मी का विशेष पूजन क्यों किया जाता है? इस हेतु इस दिवस से जुड़े महान आख्यान भी है, उन्हें जानना अत्यन्त आवश्यक है-

१. महाभारत के आदि पर्व के अनुसार दीपावली के दिन ही पांडव अपना बारह वर्ष का लाक्ष वनवास और एक वर्ष का अज्ञात वनवास पूर्ण कर इस दिन ही द्रौपदी सहित हस्तीनापुर लौटे। उनके आगमन पर पूरे नगरवासियों ने आनन्द-उत्सव मनाया।

२.सिक्खों के छठे गुरु 'गुरु हरगोविन्द' जिन्हें मुस्लीम राजा ने ग्वालियर में बंदी बना लिया था और उन्हें कई प्रकार के प्रलोभन दिये थे, कि आप जैसे प्रतापी व्यक्ति को सिक्ख धर्म छोड़कर मुस्लीम धर्म अपना लेना चाहिए, जिससे पुरे भारत वर्ष में साम्राज्य स्थापित हो सके, महागुरु हरगोविन्दजी द्वारा मना कर देने पर उन्हें बंदी बना लिया, लेकिन गुरु हरगोविन्दजी अपनी युक्ति से मुक्त होकर दीपावली के दिन ही अमृतसर पधारे और उनके स्वागत हेतु और उनका अपने धर्म के प्रति अनन्य प्रेम देखकर पूरा स्वर्णमंदिर जिसे 'हरमिन्दर साहिब' कहते है, दीपों के प्रकाश से सुसज्जित कर दिया।

३. महान संन्यासी स्वामी दयानंद जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और उन्नीसवी शताब्दी में वैदिक संस्कृति,

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291-432209 या टेलीफैक्स : 0291-432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है।

अपने केवल्यज्ञान का जनसभा में उपदेश दिया तथा स्थान स्थान पर विचरण कर इकहत्तर वर्ष छः महीने तथा पंद्रह दिन की आयु में कार्तिक अमावास्या के दिन 'पावा' स्थान 'निर्वाण' कर देह का त्याग किया।

कठोपनिषद के अनुसार कार्तिक अमावास्या के दिन धर्मराज यमराज ने नचिकेता को अग्निविद्या का उपदेश दिया की जो साधना और तपस्या द्वारा मृत्युरूपी अंधकार की रात्रि से निकल जाता है, वह अपनी आत्मा को सांसरिक बंधनो से मुक्त कर देता है, और पूर्ण प्रकाश ज्ञान प्राप्त कर देता है। इस कारण इस रात्रि को 'कालरात्रि' कहा जाता है, जो इस कालरात्रि मे अपने आप को ज्ञान से आलोकित है उसे काल कभी भी नहीं सताता और वह मृत्यु भय से मुक्त हो जाता है। इसी रात्रि को नचिकेता ने सांसारिक जीवन के महत्व को और मृत्यु के कारण को समझा था और वह बंधनों से वैचारिक रूप से मुक्त हो गया तथा अपने जीवन के सारे संदेह मृत्यु के देव से ज्ञान प्राप्त कर दूर किये।

पिछली शताब्दी में हुए महान ज्ञानी 'स्वामी रामतीर्थ' का जन्म भी कार्तिक अमावास्या दीपावली के दिन हुआ, उन्होंने यज्ञ संस्कृति का उत्थान किया और जिन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसा महान ग्रंथ लिखा, और जिन्हें महायोगी कहा जाता है, दीपावली के दिन ही देह त्याग कर परमतत्व को प्राप्त किया। इसीलिए हिन्दु धर्म में जिसे आर्य धर्म भी कहा जाता है, सभी व्यक्ति दीपोत्सव के रूप में दीपक प्रज्वलित कर उस महान आत्मा को याद करते है जिसने असंख्य लोगों के जीवन में ज्ञान का सत्य प्रकाश फैलाया और वैदिक संस्कृति की पुर्नस्थापना की।

४.जैन ग्रंथों के अनुसार भगवान महावीर चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन वर्धमान के रूप में उत्पन्न हुए, उन्हों ने वैशाख शुक्ल दशमी के दिन बयालीस वर्ष की आयु में 'कैवल्य ज्ञान' प्राप्त हुआ, और श्रावण कृष्ण प्रतिप्रदा को राजगृह में प्रथमबार संन्यास भी दीपावली के दिन लिया और समाधि भी अपनी पूर्ण आयु प्राप्त कर दीपावली की रात्रि को ही ग्रहण की।

दीपावली के ही महान दिवस को सायंकाल भगवान श्रीकृष्ण द्वारका त्याग कर विष्णु लोक में प्रस्थान किया और अपनी भौतिक देह त्याग दी।

दीपावली और महालक्ष्मी–

सामान्यरूप से दीपावली लक्ष्मी उत्सव के रूप में माना जाता है, और साथ ही यह भी मान्यता है कि धन और भौतिक उन्नति की अधिष्ठात्रि इस दिन अपने असंख्य रूपों में उन घरों में विचरण करती है, जो स्वच्छ, शुद्ध तथा प्रकाशमान होते है, उसका तात्पर्य यह है कि जहां अस्वच्छता होती है,अशुद्धि होती है, अंधकार होता है, वहां लक्ष्मी नहीं आती,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

यह अशुद्धता, अंधकार और अस्वच्छता बाह्य रूप से भी हो सकती है और मानसिक रूप से भी हो सकती है, जिन गृहों में श्रेष्ठ आचरण नहीं होता, आंतरिक सद्भाव नहीं होता, अज्ञानता होती है, मानसिक अपवित्रता होती है, वहां लक्ष्मी कभी भी नहीं आती। मिट्टी का दीपक पृथ्वी का प्रतीक स्वरूप है, और उसमें भरा गया घी, तेल जीवन की सरसता का प्रतीक है, जहां यह दोनों बाते होती है और उनको तपस्या रूपी अग्नि से प्रज्वलित किया जाता है वहां ज्ञान का प्रकाश अवश्य ही फैलता है, इसी कारण ज्ञानीयों के पास लक्ष्मी स्थायी रूप से रहती है।

संसार की सारी क्रियाएं भौतिकता को प्राप्त करने के लिए और भौतिक जीवन में इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए ही की जाती है। इसी कारण दीपावली के दिन भौतिकता के प्रतीक स्वरूप अपने धन-धान्य, और उसके साथ अपने हिसाब किताब के प्रतीक बही-खाते की भी पूजा इसी दिन सम्पन्न की जाती है।

दीपावली कल्प की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस दिन सूर्य तुला राशि के द्वितीय भाग में प्रवेश करता है और तुला का स्वरूप इस प्रकार होता है कि इसके दोनों पलड़े बराबर रहते है, इस कारण इस दिन व्यक्ति अपने साल भरके हिसाब-किताब को बराबर करता है, और आने वाले वर्ष में लाभ के पक्ष को अपनी ओर झुकाने का संकल्प लेता है, यही विशेष कारण है कि दीपावली का दिन अमावास्या के दिन होते हुए भी श्रेष्ठ माना गया है, वर्ष भर में हमने जो भी कार्य किए है, लाभ-हानि, पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ, दुष्टता-परोपकार इन सब अच्छे और बुरे अध्यायों को जीवन की आंतरिक तराजु में तोल कर देख ले और यह संकल्प लें कि हमारा जीवन का वास्तविक मार्ग कौन सा है? बीते वर्ष में क्या क्या दोष गलतीयां हुई है? कार्य में क्या क्या कमियां रही है, और अपनी ज्ञान बुद्धि को जाग्रत कर उन कमजोरियों, कमियों का कैसे निराकरण संभव है?

दीपावली की रात्रि को दीपोत्सव के साथ साथ जोर जोर से घंटानाद और ध्वनि विस्तार कर लक्ष्मी का आह्वान किया जाता है। जिससे सुप्त लक्ष्मी जाग्रत हो और वह जाग्रत होकर प्रत्येक गृह में प्रवेश करे और अपने वरदहस्त द्वारा आशीर्वाद स्वरूप धन वर्षा निरंतर करती रहे।

दीपावली के दिन ही क्षीर सागर से देवता और असुरों द्वारा मंदराचल पर्वत से समुद्रमंथन करने पर लक्ष्मी अपने पूर्ण वैभव के साथ, सौन्दर्य के साथ प्रगट हुई थी, जिसका स्वरूप देखकर देवता और दानव दोनों आश्चर्यचकित रह गये, और दोनों ने ही इसे अपनाना चाहा, लेकिन लक्ष्मी जिसे 'श्री' कहा गया है, उसमें पूर्ण पुरुषरूपी भगवान का ही वरण किया और संसार का प्रत्येक पुरुष भगवान विष्णु का अंश स्वरूप है, और जो भी व्यक्ति भगवान विष्णु की तरह जीवन में निरंतर क्रियाशील रहता है, पालनकर्ता बनता है, संसारिक जीवन में शुद्धता लाता है, उसी का लक्ष्मी वरण करती है।

इस लक्ष्मी का स्वरूप भिन्न-भिन्न अवश्य हो सकता है। इसका गजलक्ष्मी स्वरूप आर्थिक पूर्णता को स्पष्ट करता है। इसका भाग्यलक्ष्मी स्वरूप जीवन में भाग्योदय को प्रगट करता है, इसलिए 'श्री लखानी जातक' में जो कि बौद्धों का महान ग्रंथ है उसमें 'श्रीमाता लक्ष्मी' कहती है कि मैं मनुष्यों के जीवन को संचालित करती हूं, जिससे वे महान बनते है, मैं ही सौन्दर्य (शिरी) हूं, मैं ही भाग्य (लखी) हूं, और मैं ही वैभव (भूरीपन्ना) हूं, लक्ष्मी राज्य लक्ष्मी के स्वरूप में राजाओं में विद्यमान रहती है, और राजा कौन जो अपना कार्य सही रूप से, धर्म रूप से सम्पन्न करे, शुद्ध रूपसे जीवन का संचालन करे, वही लक्ष्मी 'राज्यलक्ष्मी' के रूप में रहती है,और जहां लक्ष्मी का ऋषिमुनियों का, देवताओं का, ब्राह्मणों का अपमान होता है वहां लक्ष्मी नही रहती, और जहां उनकी पूजा, और सम्मान होता है वहां लक्ष्मी अवश्य रहती है, 'राजा प्रह्लाद' यद्यपि राक्षस वंश में हिरण्याकश्यप के घर में उत्पन्न हुए थे और यह कुल राक्षस कुल था उसके उपरांत भी लक्ष्मी वहां पूर्ण वैभव के साथ विद्यमान रही इसलिए प्रह्लाद और उनके पौत्र बालि को आजतक आदर के साथ स्मरण किया जाता है, वही दूसरी ओर देवताओं के अधिपति इन्द्र को जब महाऋषि दुर्वासा ने एक अद्भुत पुष्प अर्पित किया और इन्द्र ने अपने अभिमान वश वह पुष्प अपने ऐरावत हाथी पर चढ़ा दिया, तो ऋषि ने इन्द्र को शाप दे दिया और लक्ष्मी इन्द्र के पास से चली गई, क्योंकि लक्ष्मी वही रहती है, जहां देवता, ऋषियों का, संतज्ञानी महात्माओं का सम्मान होता है।

इसी प्रकार लक्ष्मी को गृहलक्ष्मी कहा जाता है, और जिस घर में स्त्रियों का सम्मान होता है, और जिस घर में स्त्रियों परिवार कुल की पालन पोषन के लिए आलस्य त्याग कर तत्पर रहती है, घर में स्वच्छता, सद्भाव, और सेवा का वातावरण रखती है,वहां लक्ष्मी सदैव 'गृहलक्ष्मी' के रूप में विद्यमान रहती है।

जीवन के युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए 'जयलक्ष्मी' की साधना की जाती है, जो जीवन में विजय प्रदान करती है, और यश प्राप्ति के लिए 'यशोलक्ष्मी' के रूप में साधना सम्पन्न की जाती है, क्योंकि लक्ष्मी ही राज्य, श्री, गृह, जय, यश ही अधिष्ठात्रि देवी है।

उसके उपरांत भी कई व्यक्ति धन के पीछे नहीं भागते उनके लिए गीता का यह वचन ही दिव्यवचन है, 'समलोस्था अस्माकांचनम्' अर्थात् जिन्होंने जीवनमें कैवल्यज्ञान प्राप्त कर लिया है, उनके लिए मिट्टी के बर्तन और सोना अर्थात् कंचन दोनों एक ही समान है। ऐसा व्यक्ति दुर्भाग्यशाली ही कहा जा सकता है कि अपने जीवन में लक्ष्मी साधना और उपासना नहीं करता हो और उसके महत्व को नहीं समझता हो, इसीलिए सद्गुरुदेव ने आज से तीस वर्ष पहले लक्ष्मी साधना में लिखा की 'मानव जीवन की सार्थकता तभी कही जा सकती है की जिस कार्य के निमित्त व्यक्ति का जन्म हुआ है वह अपने कार्य को सही प्रकार से सम्पन्न कर दे, और अपने जीवन में मनसा वाचा करुणा से शुद्ध हो'।

आगे उन्होंने 'लक्ष्मी साधना' पुस्तक के पृष्ठ ८५ में लिखा है कि 'आर्थिक सम्पन्नता भी अपने आप में पूर्ण तपस्या है, समग्र साधना है, मानव जीवन का सार पुरुषार्थ है, बिना परिश्रम प्रयत्न एवं पुरुषार्थ के लिए कोई भी वस्तु लभ्य नहीं, अतः जो व्यक्ति कठिनाईयों, संघर्षों एवं बाधाओं से संघर्ष कर अपने लक्ष्य की ओर साहस के साथ बढता है वही सफल हो सकता है। धर्म का मूल भी यही धन है। आज जो चतुर्दिक थोड़ा बहुत धर्म का वातावरण है, उसका आधार धन ही हो सकता है। बिना धन के न मंदिर बनाये जा सकते है, न गरिजाघरों का निर्माण होता है, और न धर्म का प्रचार ही किया जा सकता है। कोई भी सांसारिक धर्म के बिना धन के पंगु है, उसकी गति सहज नहीं रह सकती। यद्यपि धनोपार्जन के मूल में परिश्रम, मेहनत, एवं पुरुषार्थ है पर यह अत्यन्त कठोर है, साथ ही साथ सही दिशा में किया गया परिश्रम ही सफल हो सकता है। व्यर्थ का परिश्रम अर्थोपार्जन में सहायक न होकर बाधक बन जाता है। पुरुषार्थ के अतिरिक्त लक्ष्मी साधना, लक्ष्मी तंत्र, महालक्ष्मी मंत्रादि भी आर्थिक सम्पन्नता के हेतु हो सकते है। जो साधक इस क्षेत्र में प्रवेश करता है और योग्य गुरु के सान्निध्य में साधना, मंत्र जप आदि करता है, वह निश्चय ही अपने लक्ष्य में सफल होता है।'

सद्गुरुदेव सदैव अपने प्रवचनों में कहते थे कि जो सोता है, अर्थात् अपने जीवन में अक्रियाशील रहता है, उसका भाग्य भी सोता है, और जो व्यक्ति जागता है वह पाता है और उसका भाग्य भी जाग्रत होता है। लक्ष्मी अर्थात् 'श्री' की साधना द्वारा सोये हुए भाग्य को जगाया जा सकता है, पूर्व जन्म के दोषों को दूर किया जा सकता है, संचित कर्मों में वृद्धि की जा सकती है, क्रियमाण कर्म को पूर्ण रूप से जाग्रत कर इसी जीवन में भौतिकता से परिपूर्णता प्राप्त की जा सकती है, और उसके लिए दीपावली पंच पर्व सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त है, गरीबी, याचनामय दीन जीवन भी कोई जीवन है, जीवन अपनी सम्पूर्ण वैभवता के साथ सम्मान के साथ, 'श्री' और आनन्द से युक्त होना चाहिए। इसीलिए दीपावली महापर्व जीवन की जागृती का कल्प है, इसे व्यर्थ गंवाना हाथ में आये हुए भाग्य को स्वयं नष्ट कर देने के समान है।

दीपावली पंच पर्व चतुर्थ दिवस- नववर्ष प्रारंभ

भारत वर्ष में सम्राट के रूप में राजा विक्रमादित्य की ख्याति अजेय है, और दीपावली की रात्रि जागृती की रात्रि है, और उसके उपरांत कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से वर्षप्रतिपदा प्रारंभ हो जाती है, उस दिन राजा विक्रमादित्य ने सम्राट पद ग्रहण किया था, और इसी दिन से नववर्ष प्रारंभ होता है जिसे विक्रमी संवत कहा जाता है, वह विक्रमी नववर्ष संवत प्रारंभ होता है, इस दिवस को 'गुड़ी पड़वा' भी कहा जाता है, दीपावली की अमावास्या के साथ लक्ष्मी साधना के साथ नववर्ष प्रारंभ करने का इससे अधिक सुन्दर दिवस क्या हो सकता है? इस दिवस की भी हमारे शास्त्रोंमें विशेष मान्यता है इस दिन गोवर्धन पूजा सम्पन्न की जाती है, लेकिन इसके पीछे भी क्या कारण है? यह समझना आवश्यक है।

त्रेतायुग में जब भगवान राम ने रामेश्वरम् से लंका तक सेतु का अपनी वानर सेना के सहयोग से निर्माण किया तो उसके लिए सामग्री लाने कि जिम्मेदारी श्री हनुमान को सौंपी गई, और श्री हनुमान अलग- अलग स्थानों से पूरे के पूरे पर्वत लेकर आ गये, जिसके शिलाखंड बनाकर सेतु का निर्माण किया गया, जब पूरा सेतु बन गया तब समय अभाव के कारण एक महापर्वत को अपने स्थान पर वापस नहीं रख सके तब श्री हनुमान ने इस पर्वत को ब्रजभूमि में रख दिया, तब पर्वत देव ने कहा कि मैं हिमालय का भाग हूं और मुझे यहां ब्रज भूमि में क्यों रखा जा रहा है, तब श्री हनुमान ने कहा कि

है। प्रह्लाद के पौत्र बाली महासम्राट हुए और तीनो लोकों पर विजय प्राप्त कर ली, तथा पूरे संसार पर बालि का राज्य हो गया, तब देवताओं ने प्रार्थना कि यदि संसार पर राक्षसों का ही राज्य हो गया तो देवता और मनुष्य कहा रहेगें? तब भगवान विष्णु ने वामन अवतार के रुप में जन्म लिया और जब राजा बाली ने अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कराया और ब्राह्मणों को दान दिया, भगवान विष्णु बालक रुप में उसके सामने प्रगट हुए तथा दान के रुप में अपने तीन कदम के समान भूमि प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की, अपनी दानशीलता के कारण राजा बाली ने सहर्ष स्वीकारोक्ति दे दी, प्रथम पद के रूप में वामन रूप में भगवान विष्णु ने पूरे आकाशलोक को नाप दिया, दूसरे पद में पूरी पृथ्वी लोक को नाप दिया,और जब तीसरा पद उठाया बाली को कहा कि अब यह पैर कहा रखुं? तब बालीने सिर झुकाकर अपना मस्तक भगवान के सामने रख दिया और भगवान श्रीहरि विष्णुने अपना तीसरा पद बाली के मस्तक पर रखा और उसकी दान शीलता से प्रसन्न होकर पूरे पाताल लोक का साम्राज्य प्रदान कर दिया, साथ ही यह भी वरदान दिया की वर्ष में इसी दिन अर्थात् कार्तिक शुक्ल प्रतिप्रदा के दिन तुम धरती पर प्रकट होवोगें और यह संसार तुम्हारी तथा तुम्हारी पत्नी विन्धयावती की पूजा करेगा, और संसार में तुम्हारे से बढकर कोई महान दानी नही हो सकेगा, क्योंकि तुम्हे जीतने के लिए मुझे स्वयं वामन अर्थात् लघु बनाना पड़ा, तथा नववर्ष का प्रारंभ तुम्हारी पूजा के साथ प्रारंभ होगा, और उसी दिन से बाली पूजन की प्रथा प्रारंभ हुई और वर्ष का प्रारंभ भी दानीवीरता, तथा पूरे वर्षमें कीये गये द्वेष भाव को भूलाकर नवअध्याय प्रारंभ करने से होता है, जिसमें व्यक्ति को यह प्रेरणा मिलती है कि वह अपने वर्षभर में किये गये दोषो और दुःखो को भूलकर यह प्रार्थना करे कि **'इड़ा पीड़ा जागो, बालिसे राज्या येवो'** अर्थात् हम दुःखोको भूल जाय और वे हमारे जीवन से दूर हो जाय तथा हमारे जीवन में बाली

द्वापर युग तक इस पर्वत पर आप यहाँ निवास करेंगे और द्वापर युग में भगवान राम के अवतार रुप में श्रीकृष्ण भौतिक रुप में अवतार लेगें तब वे ही तुम्हें इस स्थान से हटा सकते है, और भगवान श्रीकृष्णने गोवर्धन पर्वत को अपनी उगंली पर उठाया और यह वरदान दिया की जब तक यह पृथ्वी रहेगी तब तक इस गोवर्धन की पूजा होती रहेगी और इसकी पूजा मेरी स्वयं की पूजा के समान होगी, और इसी लिए भगवान श्री कृष्ण का एक नाम गोवर्धन भी है। इस प्रकार यह दिवस श्रीकृष्ण की पूजा का दिवस है। इसीलिए इस दिन भगवान कृष्ण की पूजा हेतु अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न किया जाता है, तथा भगवान के समक्ष छप्पन भोग एक पर्वत के रुप में अर्पित किये जाते है, और उसमें से प्रसाद वितरित किया जाता है।

यह दिवस बालीप्रतिप्रदा के रुप में भी सम्पन्न किया जाता

समान साम्राज्य प्रारंभ हो'। इसीलिए नववर्ष के प्रथम दिन पूरे वर्ष का द्वेषभाव भूलाकर शत्रुओं से भी मिलने की प्रथा प्रारंभ हुई और अपने मित्रों से मिलकर मित्रता को ओर अधिक गहरा करने की प्रथा प्रारंभ हुई क्योंकि घृणा और द्वेष मन में रखकर प्रगति नही हो सकती है। इस प्रकार यह दिवस कृष्ण सिद्धि दिवस है, यह दिवस विष्णु अवतार वामन सिद्धि दिवस है, यह दिवस सम्पूर्ण साम्राज्य प्राप्त कर बान सिद्धि अर्थात् प्रसिद्धि प्राप्ति साधना का दिवस है, इसके साथ ही यह दिवस गौ पूजन का दिवस भी है, जो कि कामधेनु रूप में जगत माता मानी जाती है, और प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करती है।

दीपावली पंच कल्प पंचम दिवस-

यम द्वितीया-भैया दूज-

वर्तमान युग में हर व्यक्ति परेशानीयों के बोझ से दबा हुआ है, और उसे जीवन में किसी न किसी रूप में स्नेह, प्रेम, और निःस्वार्थ सहयोगी की आवश्यकता रहती है। संसार में पत्नी का स्थान केवल एक ही स्त्री को मिल सकता है, अन्य स्त्रियों में यदि हम माता अथवा बहन का रूप देखें तो कुविचार अपने आप नष्ट हो जाते है, माता और बहन से मिलने वाला प्रेम और स्नेह अपने आप में अनूठा होता है, इस में न तो आपस में कोई छल अथवा कपट होती है, और नही किसी प्रकार का अविश्वास होता है।

जब व्यक्ति स्त्री शक्ति की पूजा माता तथा बहन के रूप में करता है, तो उसे अपने जीवन में पूर्ण सुरक्षा तथा सफलता शीघ्र प्राप्त होती है।

संसार में लोक 'यम' के नाम से बहुत अधिक घबराते हैं, क्योंकि 'यम' मृत्यु के आदिदेव है, लेकिन सृष्टि का नियम है कि मनुष्य देह का आयु पूर्ण होने पर अंत होता ही है। जब सृष्टि के आदि काल से यह नियम चला आ रहा है, और जिसने भी भौतिक देह धारण की है, उन्होंने अपने कार्य के पश्चात् भौतिक देह को त्यागा है, तो फिर धर्मराज यमराज से डरने कि क्या आवश्यकता है? वास्तव में तो धर्मराज यमराज जीवन के देवता है, जिनकी साधना की जाय तो अकाल मृत्यु का भय तो समाप्त होता ही है, साथ ही अन्य प्रकार के भय-बाधाओं, विपदाओं, आदि से रक्षा प्राप्त होती है।

वर्तमान काल में कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया को 'भैया दूज' कहा जाता है, जब भाई अपने बहन के घर जाता है, और बहन अपने भाई के मस्तक पर तिलक लगाती है, इसके मूल में एक अत्यंत ही सुन्दर आख्यान है- कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया के दिन धर्मदेव यमराज अपनी बहन 'यमी' के घर गये, और दोनों में अपने अपने हृदय के विचार रखे, और स्नेह का बंधन मजबूत किया, 'यमी' के घर से जाते समय धर्मराज यमराज ने एक विशेष उपहार अपनी बहन को दिया, और यमी ने भी अपने हाथों से बनाया हुआ एक श्रेष्ठ उपहार प्रदान किया, यमी ने धर्मराज के मस्तक पर कुंकुम तिलक लगाया, और इस स्नेहभाव से प्रसन्न होकर धर्मराज यमराज ने कहा कि जो भी व्यक्ति स्नेह से अपनी बहन से यह तिलक लगवायेगा उसे संसार चक्रमें कोई बाधाएं नही आयेगी।

जिस प्रकार रक्षाबंधन के दिन बहन भाई के घर जाती है, उसी प्रकार यम द्वितीया के दिन भाई बहन के घर जाकर उसका आशीर्वाद और शुभकामनाएं प्राप्त करता है। **तांत्रोक्त ग्रंथो के अनुसार यह दिन दस महाविद्या साधनायों के लिए श्रेष्ठ दिवस है, विशेष कर बगलामुखी, छिन्नमस्ता, धूमावती, और महाकाली की साधनाए इस दिन सम्पन्न की जाय, तो पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।**

लक्ष्मी साधना के यह पंच पर्व सिद्धि पर्व है, लेकिन यह आश्चर्यजनक बात है कि भारत वर्ष में केवल लक्ष्मी के मंदिर बहुत कम है, क्योंकि लक्ष्मी को चंचला माना गया है, वह एक स्थान पर स्थित नहीं रहती, इस कारण लक्ष्मी की मूर्ति भगवान विष्णु के साथ स्थापित की जाती है।

इस विशेष तथ्य को ध्यान में रखते हुए और लक्ष्मी आराधना पूरे जगत में विख्यात करने हेतु कांचीकामकोटि पीठ के शंकराचार्य श्री चन्द्रशेखर स्वामी ने मद्रास में समुद्र के किनारे एक ही प्रांगण में जिसे 'शेषपुरम्' कहते है में लक्ष्मी के अष्ट स्वरूपों की स्थापना की। यह महान मंदिर समुद्र के किनारे स्थित है, जहां लक्ष्मी समुद्र को देखते हुए मनुष्य और देवताओं में अमरता और विशालता का आभास करती है। यहां लक्ष्मी के आठ स्वरूपों के विग्रह एक ही प्रांगण में स्थापित है, लक्ष्मी के यह आठ स्वरूप निम्न है-

१. आदिलक्ष्मी- जो जगत की अधिष्ठात्रि देवी है और क्षीरसागर से कार्तिक अमावास्या के दिन प्रगट हुई थी।

२. धान्य लक्ष्मी - जो जगत को वृक्ष, वनस्पति, धान्य, फल, पुष्प इत्यादि प्रदान करती है तथा अनावृष्टि से जगत को बचा कर पूरे संसार को हरा भरा रखती है।

3. धैर्य लक्ष्मी- जो मनुष्य के जीवन से भय को समाप्त

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

करती है, और उसमें निरन्तर उत्साह का संचार करती है।

४. गजलक्ष्मी– जो मनुष्य के जीवन में भाग्य और उत्पत्ति एवं निरन्तरता की अधिष्ठात्रि देवी है।

५. संतान लक्ष्मी– लक्ष्मी का यह स्वरूप संसार के प्रत्येक गृह का श्रेष्ठ संचालन और संतान उत्पत्ति तथा उसकी रक्षा का वरदान देती है।

६. विजया लक्ष्मी – जो मनुष्य को सफलता एवं विजय प्रदान करती है।

७. विद्या लक्ष्मी– जो की ज्ञान की अधिष्ठात्रि देवी है और मनुष्य में सदैव समभाव से विचार करने के लिए प्रेरित करती है, और सदैव उसे अपने जीवन मार्ग से विचलित नहीं होने देती है।

८. धन लक्ष्मी– जो मनुष्य के जीवन में भौतिक सुख के लिए आवश्यक धन प्रदान करती है, जिससे वह अपनी भौतिक इच्छाएं पूर्ण कर सके।

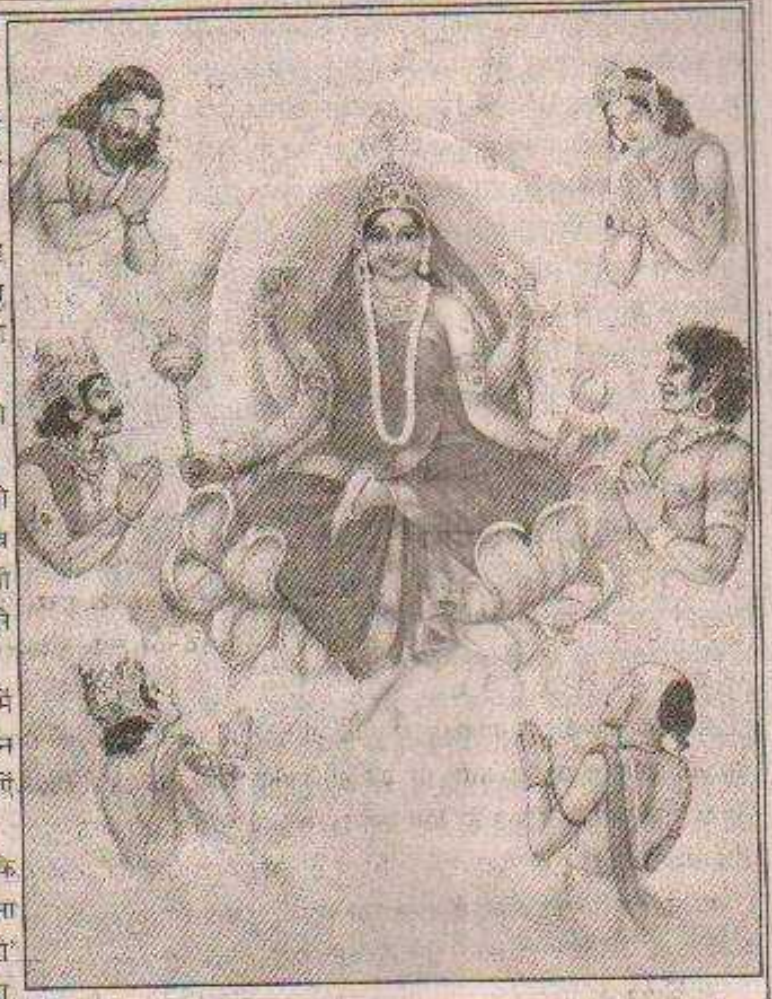

इस प्रकार शंकराचार्य ने भी लक्ष्मी के महत्व को जान कर 'श्रीविद्या' की उपासना की थी और अपने जीवन में 'त्रिपुरसुन्दरी' को स्थायी रूप से स्थापित कर दिया था, उनके द्वारा रचित 'श्रीविद्या' स्तोत्र और 'कनकधारा स्तोत्र' लक्ष्मी साधना का महान स्तोत्र माना जाता है, जिसका पाठ करने मात्र से मनुष्य को शक्ति प्राप्त होती है।

मनुष्य का जीवन निरन्तर परिवर्तनशील है क्योंकि कालचक्र अर्थात् समय की गति निरन्तर चलती रहती है, और उसमें बंधा हुआ मनुष्य अपने संस्कारों, चित्तवृत्तियों, संगति, ज्ञान के अनुसार आचरण करता हुआ अपनी आयु पूर्ण करता है। किसी भी मनुष्य का भाग्य स्थिर नहीं रहता, और न ही ऐसा सम्भव है कि जन्म के समय जो भाग्य में लिख दिया जीवन उसी के अनुसार व्यतीत होगा, क्योंकि परमात्मा ने मनुष्य को अपना श्रेष्ठतम स्वरूप विष्णु स्वरूप प्रदान किया है, अपने ही समानरूप स्वरूप देकर जगत में निरन्तर क्रियाशील होने के लिए भेजा है, और जो व्यक्ति इस जगत में आकर भगवान विष्णु के स्वरूप को साधना करने के साथ लक्ष्मी के उन अष्ट स्वरूपों आदिलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी, भाग्य लक्ष्मी, विजय लक्ष्मी, संतान लक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी और धन लक्ष्मी की साधना करता है, और उन्हें अपने जीवन में समाहित कर देता है, तो उसका जीवन परिपूर्ण हो जाता है और जीवन के प्रत्येक क्षण का आनन्द आता है, यह जगत उसे प्रिय लगने लगता है, और पूरा जीवन प्रेम तथा आनन्द परिपूर्ण रहता है।

आगे के पृष्ठो में दीपावली महाकल्प के उन पांच दिवसो में कि जाने वाली साधनाएं और कुछ विशेष लघु प्रयोग साधनाएं दी जा रही है, जो जीवन के प्रत्येक पक्ष की उन्नति से सम्बन्धित है, उन्हें साधक संकल्प कर अपने जीवन में शुभ मुर्हूत में अवश्य ही सम्पन्न करें।

शिष्य धर्म

त्वं विचित्तं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव ।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एव भवतां भगवद् नमामि ॥

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शब्द शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरु से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

*** सद्गुरु के लिए प्रिय और अप्रिय शब्द नहीं होता उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण शब्द शिष्य ही होता है और जो शिष्य बन गया, वह कभी भी अपने गुरु से दूर नहीं होता। क्या परछाई को आकृति से अलग किया जा सकता है? शिष्य तो सद्गुरु की परछाई की तरह होते हैं।**

* जिसमें अपने आप को बलिदान करने की समर्थता नहीं है, अपने को समाज के सामने घाती लोक कर खड़ा कर देने और अपनी पहचान के साथ-साथ गुरु की मर्यादा सम्मान समाज में स्थापित कर देना ही तो शिष्यत्व है।

* गुरु से जुड़ने के बाद शिष्य का धर्म यही होता है, कि वह गुरु द्वारा बताए गए पथ पर गतिशील हो। जो दिशा निर्देश गुरु ने उसे दिया है, उसका अपने दैनिक जीवन में पालन करे।

* यदि कोई मंत्र है, साधना विधि है, तो गुरु से ही है, अथवा गुरुदेव रचित साहित्य से है। अन्य किसी को भी गुरु के समान नहीं समझना चाहिए।

*** शिष्य के लिए गुरु ही सर्वस्व होता है। यदि किसी व्यक्ति की मित्रता राजा से हो जाए तो उसे छोटे-मोटे अधिकारी की सिफारिश की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए श्रेष्ठ शिष्य वह है, जो अपने मन के तारों को गुरु से ही जोड़ता है।**

* शिष्य यदि सच्चे हृदय से पुकार करे, तो ऐसा होता ही नहीं कि उसका स्तर गुरुदेव तक न पहुंचे। उसकी आवाज गुरुदेव तक पहुंचती ही है, इसमें कभी संदेह नहीं करना चाहिए।

* वास्तविकता को केवल शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। आम का स्वाद उसे चख कर ही जाना जा सकता है। साधना द्वारा विकसित ज्ञान द्वारा ही परम सत्य का साक्षात्कार संभव है।

*** गुरु से बढ़कर न शास्त्र है, न तपस्या, न मंत्र और न स्वर्गादि फल। गुरु से बढ़कर न देवी है, न देव ही गुरु से बढ़कर है, और न ही मोक्ष। एकमात्र सद्गुरुदेव ही सर्वश्रेष्ठ है।**

*** मलिन बुद्धि अथवा गुरु भक्ति से रहित, क्रोध लोभादि से ग्रस्त, नष्ट आचार-विचार वाले व्यक्ति के समक्ष गुरु तंत्र के इन दुर्लभ पवित्र रहस्यों को स्पष्ट नहीं करना चाहिए।**

गुरु वाणी

* गुरु की सबसे बड़ी विशेषता है, कि वह बहुत कुछ देना चाहता है। कोई गुरु यह नहीं चाहता कि मेरा नाम हो, या मैं ही दुनिया में पूजा जाऊं, गुरु तो यह चाहता है कि मैं, शिष्य को समर्थ, योग्य और अद्वितीय बनाऊं जिससे कि वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करें।

* हमारे अंदर एक तूफान हो, संकल्प शक्ति हो, दृढ शक्ति हो, फौलाद की तरह विचार हो, यह निश्चय हो कि या तो दैवी कृपा प्राप्त करके रहूंगा या शरीर को समाप्त जो जाने दूंगा... जब ऐसा चैलेंज, ऐसी संकल्प शक्ति उसके मन में उसके विचारों में आती है, तब उसे साधक कहा जाता है।

* तुम्हें बिल्कुल एक खाली पात्र की तरह मेरे पास आना है, खाली कागज की तरह मेरे पास आना है, जिसमें मैं पूर्णत्व, लिख सकूंगा, मैं उस पर ब्रह्मत्व लिख सकूंगा। मैं तुम्हें बता सकूंगा जीवन की पूर्णता क्या है, जीवन का आनन्द क्या है। जीवन की सर्वोच्चता क्या है, श्रेष्ठता क्या है?

* समर्पण हाथ जोड़ने से नहीं हो सकता, और न ही गुरु की आरती उतारने से ही हो सकता है। समर्पण का अर्थ है कि जो गुरु आज्ञा दे उसका बिना नानुकर किए पालन किया जाए।

* गुरु सदैव उत्कर्ष में रहते, पर शिष्यों को वैभवित कर देते हैं। उत्कर्ष में रहते गुरु

नीचे जमीन की गंदी वस्तुओं पर दृष्टि मत जमाओ, तुम्हारे चारों ओर संसार का कूड़ा करकट बिखरा हुआ है इस पर दृष्टि रखोगे तो मेरा सत्य किया कराया व्यर्थ ही जाएगा। केवल एक ही लक्ष्य-गुरु में लीन हो जाओ।

✻ मैं हर क्षण तुम्हारे साथ हूं, तुम कहीं अकेले नहीं हो, इस बीहड़ पगडण्डी में तुम्हें अपने आप को अकेला समझने की जरूरत नहीं है, क्योंकि तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें ब्रह्म तक पहुंचाना है, निश्चित रूप से तुम्हें ब्रह्म के दर्शन कराने हैं, और इस जीवन में ही तुम्हें, जन्म-मरण के इस भय से, इस समस्या से मुक्त कर देना है।

✻ मैं पूर्ण हूं और तुम मेरे सामने पूर्ण होने के लिए बैठे हो। आवश्यकता इस बात की है कि तुम इस जगह खड़े रह सको जहां से छलांग लगानी है। ज्यों ही छलांग लगाई तुम समुद्र में विसर्जित हो जाओगे और समुद्र बाहें फैलाकर तुम्हें अपनी सीने में समेट लेगा, क्योंकि मैं तो प्रत्येक स्थिति में तुम्हारे सामने हूं।

✻ अणु से विराट बनाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मनुष्य से देवता बनाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मूलाधार से सहस्रार तक पहुंचाने की क्रिया केवल गुरु जानता है और इसीलिए जीवन का आधार केवल और केवल गुरु होता है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

धनवन्तरि जयंती-धनत्रयोदशी

दि. २-११-२००२

स्वस्थ जीवन, स्वस्थ तन, स्वस्थ मन ये ही जीवन का आधार है, तो सम्पन्न किजीए, शिवकृपा युक्त

धनवन्तरि अक्षय साधना

जिससे पूरे परिवार में पूर्ण आनन्द आ सकता है, और अकाल मृत्यु और भय समाप्त हो जाता है।

शरीर तो ईश्वर द्वारा प्रदत्त सबसे सुन्दर उपहार है, शास्त्र भी कहते हैं, पहला सुख 'निरोगी काया' स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन मस्तिष्क का निवास होता है, यदि शरीर में कोई पीड़ा, बाधा, अथवा विकृती है, तो मस्तिष्क उसी के बारे में चिन्तन करता है, शरीर से परे बहुत कुछ अवश्य है, लेकिन इस 'बहुत कुछ' को रखने के लिए, गति देने के लिए शरीर स्वस्थ होना आवश्यक है।

> अरोग्यं हितापथ्यविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः।
> दाता समः सत्यपरः क्षमावानाप्तोपसेवी च भवत्यरोगः॥
>
> अर्थात् जो व्यक्ति सदैव हितकर आहार-विहारका सेवन करता है, सोच समझकर कार्य करता है, विषयों में आसक्त नहीं होता, जो दानशील, समत्व बुद्धि से युक्त, सत्यपरायण, क्षमावान, वृद्धजनों की सेवा करनेवाला है, वह नीरोगी होता है।

रोग मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु है, जिनके रहते वह कुछ भी नहीं कर सकता, उसका चिन्तन, मनन, इच्छा, सब खण्डित हो जाते हैं, यह शत्रु उसके साथ चिपका रहता है, वह कितने ही एकान्त में क्यों न चला जाय, यह शत्रु तो साथ ही साथ चलता है, रुग्ण शरीर से ही रुग्ण (रोग) मानसिकता का जन्म होता है, और रुग्ण मानसिकता, विनाश, हानि की ओर बढ़ते हुए कदम है, मन की गति तो बहुत ही तीव्र है, वह बहुत कुछ प्राप्त करना

चाहता है, लेकिन मन की गति को तन की बाधाएं अर्थात् रोग रोक देते है, इसीलिए जो व्यक्ति अपने शरीर की पूजा नहीं करता, जो इसे पूर्ण रुप से स्वस्थ, सुन्दर, बनाये रखने के लिए उपाय नहीं करता, वह खुद का तो नाश करता ही है, वह भगवान का भी अपमान करता है, उनके दिये गये उपहार को प्रत्यक्ष रुप से ठुकराता है।

धन्वन्तरी और काया कल्प

जब अमृत प्राप्ति हेतु समुद्र मंथन के समय अपने हाथ में अमृत कलश लिये हुए एक दिव्य कांतियुक्त सम्पूर्ण अलंकरणों से सुसज्जित, सर्वांग सुन्दर, तेजस्वी अलौकिक पुरुष प्रगट हुए, यह अलौकिक पुरुष 'भगवान् धन्वन्तरी' के नाम से विख्यात हुए, इनकी उत्पत्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को हुई थी, और भगवान विष्णु के अंश माने जाते है।

उस समय से ही यह तिथि 'धन्वन्तरी जयंती' के रुप में आरोग्य सिद्धि के रुप में, मनाई जाती है, विष्णु के २४ अवतारों में भगवान धन्वन्तरी की गणना की गई है,विष्णु के अंश होने के प्रमाण स्वरुप श्रीमद् भागवत में लिखा है–

स वै भगवतः साक्षात विष्णारंशांशसम्भवः ।
धन्वन्तरिरिति ख्यातआयुर्वेददृगिज्यभाक्।।

अर्थात् विष्णु के अंश ही धन्वन्तरी है, जिन्होंने शरीर से सम्बन्धित शास्त्र 'आयुर्वेद' की रचना की, भगवान धन्वन्तरी ने लोक कल्याण हेतु एक महाग्रन्थ की रचना की जिसे 'धन्वन्तरी संहिता' कहा जाता है, जिसमें पूरे शरीर विज्ञान की वैज्ञानिक विवेचना करते हुए उससे सम्बन्धित विशद वर्णन है, इसमें लिखा है सोलह कलाओं से युक्त ऐश्वर्यशाली, ज्ञानवान पुरुष, जिसे 'योगी' कहा जा सकता है, वह वही हो सकता है जो शरीर से पूर्ण रुप से स्वस्थ हो, जिसमें कोई दोष न हो और 'अणिमा सिद्धि' से युक्त हो, स्वस्थ व्यक्ति वही है, जिसकी इन्द्रियां उसके वश में हो, और उसका शरीर उसकी इच्छा के अनुसार चले।

वर्तमान युग की भाग दौड़ में आहार, विहार तथा आचार का पूर्ण रुप से ध्यान नहीं रखा जा सकता, घर के

भोजन के बजाय बाहर के भोजन को ज्यादा पसंद किया जाता है, और इसके साथ ही हर व्यक्ति अपने बारे में ही सोचता रहता है, जिसके कारण से मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। कई साधक यह प्रश्न बार बार पूछते है कि हमारा स्वास्थ्य क्यों नहीं ठीक रहता? क्यों घर-परिवार में बीमारी बनी रहती है? इसका मूल कारण घर का वातावरण और शक्ति साधना की कमी है। यदि हम आयुर्वेद के नियमों के अनुसार खान-पान रखें और नियमित रूप से मंत्र साधना करते रहें तो रोग परिवार में आ ही नहीं सकते है। इस प्रकार के क्रियाकलाप से ही जीवन को सुधारा जा सकता है , और हमारे शास्त्रों 'शतम् जीवते शरदः' अर्थात् हम शतायु प्राप्त हों, और जीवन सौ वर्ष तक पूर्ण आनन्द के साथ व्यतीत हो इसीलिए बाल्याश्रम, गृहस्थाश्रम,वानप्रस्थाश्रम और संन्यास आश्रम को जीवन के पच्चीस पच्चीस वर्षों में बांटा गया था। वर्तमान जीवन में इतनी नीरसता, इच्छाहीनता क्यों है? इस प्रश्न पर विचार करना भी उतना ही आवश्यक है, इस शरीर को तो बाण की तरह तीव्र, तेजस्वी, रखना आवश्यक है, 'शरीर साधना' ही साधक को श्रेष्ठतम की ओर प्रवृत करती है, धन्वन्तरी जयन्ती अपने आपमें विशेष सिद्ध मुहूर्त है, इस दिन पीड़ाग्रस्त व्यक्ति को कुछ प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए, जिससे उसके पूर्ण रूप से स्वस्थ, सुन्दर, निरोगी होने की प्रक्रिया प्रारंभ हो सके, और यह प्रक्रिया ही 'काया कल्प' प्रक्रिया है, जिसमें हम अपनी काया को नवीन रूप प्रदान कर सकते है।

स्वस्थ शरीर-अष्टविध ऐश्वर्य

जब शरीर पूर्णरूप से स्वस्थ हो जाता है, उसके [illegible] के विचार [illegible] आता है, तो वह व्यक्ति योगी बन सकता है, और उसे अष्टविध ऐश्वर्य अपने आप प्राप्त हो जाता है, अष्टविध ऐश्वर्य है-

१.आवेश – सूक्ष्म शरीर द्वारा दूसरे शरीर में प्रवेश करना।
२.छन्दतः क्रिया– प्राणी-पदार्थों को वश में कर लेना,
३. चेतन ज्ञान– दूसरे के विचारों को जान लेना,
४. इष्टतः दृष्टि– इच्छानुसार देखना,
५. इष्टतः श्रौत – इच्छानुसार सुनना,
६. इष्टतः स्मृति – इच्छानुसार स्मरण करना, जन्मान्तरों का स्मरण करना,
७. इष्टतः कान्ति– इच्छानुसार स्वरूप धारण कर लेना
८. इष्टतः अदर्शन – इच्छानुसार अदृश्य होना।

ये सब क्रियाएं असंभव नहीं है, इनके लिए तो शरीर का निर्माण श्रेष्ठ रूप से करना आवश्यक है, शरीर की शुद्धि आवश्यक है, बुद्धि की शुद्धि आवश्यक है।

इस धन्वन्तरी जयन्ती पर कुछ विशेष साधना प्रक्रिया प्रारम्भ कर काया कल्प किया जा सकता है, पाठकों हेतु आगे कुछ विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं, जिन्हें अपना कर वे निश्चय ही श्रेष्ठता की ओर बढ़ सकते है, काया कल्प प्रक्रिया सम्पन्न कर सकते है।

पंच कूटात्मक इन्द्रजिद्

धन्वन्तरी ऋषि ने अपने विशेष आयुर्वेद, रसायन साधनात्मक शक्ति से इसके निर्माण की विशेष प्रक्रिया को अपने ग्रन्थ में स्पष्ट किया है, बालक सामान्य तौर पर प्रकृति का दबाव झेल नहीं सकता, उन्हें बिमारी, पीड़ा की बाधा का प्रभाव अधिक पड़ता है,इसके अतिरिक्त कई बालकों की बुद्धि का भी विकास तीव्रता से नहीं हो पाता, शारीरिक दृष्टि से निर्बल रहते है, अथाव अपनी शिक्षा की दृष्टि से स्मरण शक्ति की दृष्टि से कमजोर रहते है, इस के लिए यह **'पंच कूटात्मक इन्द्रजिद्'** वरदान के समान है।

इसकी रसायनिक प्रक्रिया अत्यन्त कठिन है, ताबीज के आकार के इस यंत्र निर्माण की प्रक्रिया में विजया तलवार की धातु का प्रयोग कर उसे कल्पहार के पुष्प के दूध के साथ कोरंड के फूलों का रस मिला कर धीमी आंच में पकाकर पारद संस्कार कर मन्त्र अनुष्ठान करना होता है, और फिर इसे इस ताबीज में भर कर प्रयोग किया जाता है।

जो भी बालक इसे धारण करता है, उसके रोग भाग जाते है, और [illegible]

वास्तव में धन्वन्तरी का यह वरदान बालकों के लिए जीवनदायी है, यदि कोई बालक शिक्षा की दृष्टि से कमजोर है, भूत-पिशाच का भय है, भय से रात्रि में बिस्तर गीला कर देता है, अथवा अन्य किसी भी प्रकार की भी बाधा हो तो यह **'पंच कूटात्मक इन्द्रजिद्'** धारण करना चाहिए, विशेष बात यह है कि इसमें बालक को कोई मन्त्र जप अनुष्ठान नहीं करना पड़ता, क्योंकि यह इन्द्रजिद् अपने आपमें पूर्ण प्रक्रिया से तांत्रिक एवं मांत्रिक प्रयोग से सिद्ध होता है।

(साधना सामग्री रु.१५०.००)

विष्णु तेजस सिद्ध कंकण

जैसा खानपान चल रहा है, और जिस प्रकार की विचारधारा का प्रवाह है, उस कारण सामान्य तौर पर युवकों के चेहरों पर एक मुर्दनी सी छाई रहती है, न तो चेहरे पर तेज दिखता है, और न ही आत्मविश्वास और कुछ नया करने की इच्छा ही रहती है, एक लीक पकड़ कर चल रहे है, तो चलते ही जाते है, क्या यह उचित है? युवावस्था को मैं बीस वर्ष से ४५ वर्ष की उम्र तक गिनता हूं, इस समय तो उसमें जूझने की असीम क्षमता होनी ही चाहिए, कि वह पूरे आत्मविश्वास के साथ कार्य कर अपनी राह बनायें, अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार मोड़ सके, ऐसा सम्भव है, इसमें कोई नई बात नहीं है, भगवान धन्वन्तरी ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि कलियुग में युवा भी वृद्ध के समान शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से आचरण करेंगे।

'विष्णु तेजस सिद्ध कंकण' इन सभी बाधाओं को दूर करने का विशेष उपाय है, अष्टधातु से बना यह कड़ा यदि कोई धारण कर लेता है, तो उसे जीवन में कोई भी कार्य असम्भव अथवा कठिन नहीं मालूम पड़ता, जिस काम में भी हाथ डालता है उसमें सफलता प्राप्त करता है, चेहरे पर एक तेज सा आ जाता है और उसमें आकर्षण शक्ति पूर्ण रूपसे समाहित हो जाती है, **'विष्णु तेजस कंकण'** धारण किये हुए व्यक्ति के शरीर में एक ऊर्जा निरन्तर प्रवाहित होती रहती है, जिससे उसका शरीर रोग रहित सुन्दर आकर्षक बन जाता है, तथा उसके कार्य सफल होते है।

इसके निर्माण की प्रक्रिया विचित्र है, अष्ट धातु को, बन्धूक वृक्ष की जड़ को, लाल कनेर के फूलों के रस के साथ पका कर उसमें अपराजिता द्रव्य डाले फिर नौ पात्रों में अलग-अलग रसायन के साथ इसे पका कर सुखाना पड़ता है, जब यह धातु कठोर हो जाती है, तब इससे कंकण का निर्माण किया जाता है, ये नौ पात्र है-गुरु पात्र, देवपात्र, श्रीपात्र, योगिनीपात्र, भोगपात्र, वीरपात्र, आत्मपात्र, कल्याणपात्र, और बलीपात्र। जो इस तेजस कंकण को निर्माण कर धारण कर ले तो उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय मान कर अपने पास रखना चाहिए, अपने प्रिय से प्रिय को इसे न दे, क्योंकि इसी के द्वारा साधक के जीवन में स्वास्थ्यता, सुन्दरता, सिद्धि और सफलता की प्रक्रिया बन सकती है।

(साधना सामग्री रु.३००/-)

मायादिकाम् मुद्रिका

स्त्रियों का प्रधान गुण सुन्दरता और आकर्षण ही है, यदि ये दोनों गुण उसमें नहीं है, तो उसके जीवन में निराशा ही रहती है, स्त्री के शरीर की सुन्दरता के सम्बन्ध में हजारों ग्रन्थ लिखे गये है, एक-एक अंग की विशेष व्याख्या की गई है, धन्वन्तरी ऋषि के अनुसार स्त्रियों के चेहरे और शरीर दोनों में पूर्ण आकर्षण होना चाहिए, शरीर स्वस्थ रहना चाहिए, जिससे कि वह अपने आकर्षण के बल पर अपनी शक्ति को स्थापित कर सके, स्वस्थ संतान को जन्म दे सके, शक्ति तथा लक्ष्मी दोनों का उसमें वास हो सके। जो स्त्री **'मायादिकाम् मुद्रिका'** धारण करती है, उसके शरीर की रचना 'जैसे मूर्तिकार काष्ठ को तराश कर मूर्ति की रचना करता है' शरीर से दोष इस प्रकार चले जाते हैं, जैसे अग्नि के प्रभाव से जल वाष्प बन कर उड़ जाता है। इसके निर्माण में रांगा, शीशा, जस्ता, रजत तथा ताम्र को एक विशेष खरल में पीस कर चूर्ण रूप में बना कर इसमें राई पुष्प, चन्दन, प्रियंगु, नागकेसर, मैनसिल, तगर के मिश्रण के साथ नीम की समिधाओं से प्रदत्त अग्नि के साथ पका कर शुद्ध किया जाता है, फिर इसका पारद संस्कार सम्पन्न एक ढेले के रूप में धातु बनाकर उस धातु से मुद्रिका का निर्माण किया जाता है। यह मुद्रिका कठोर एवं रत्न रहित रूप में ही धारण करनी चाहिए, जो स्त्री शुक्रवार के दिन स्नान कर श्रेष्ठ आभूषणों सहित वस्त्रों से सुसज्जित होकर अपने पूजा कक्ष में कामेश्वर का ध्यान सम्पन्न कर इस मुद्रिका को धारण करती है, तो उसके शरीर से दोष लुप्त हो जाते है, रंग परिवर्तित होने लगता है, और एक विशेष आकर्षण छा जाता है, स्त्रियों के लिए तो यह वरदान स्वरूप ही है।

(साधना सामग्री रु.२१०/-)

ऊपर लिखे सारे प्रयोग में रसायन प्रक्रिया का विशेष महत्व है, इसमें यदि थोड़ी सी भूल रह जाय तो उसका पूर्ण प्रभाव ही नष्ट हो जाता है, अतः इनका निर्माण रसायन शास्त्र के ज्ञाता के निर्देशन में ही करना चाहिए, अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है। धन्वन्तरी सिद्धि दिवस वर्ष में एक बार आता है, और उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान पर आधारित इन वरदायक चैतन्य वस्तुओं को धारण कर कायाकल्प संभव है, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

रूप चर्तुदशी

दिनांक 3-11-2002

सौन्दर्य और अनंग सिद्धि साधना

सौन्दर्य और अनंग की परिपूर्णता भगवान श्रीकृष्ण के रासलीला महोत्सव में देखी जा सकती है। कृष्ण के समान सौन्दर्य, आकर्षण और गोपीयों के समान अनंग प्रेम सौन्दर्य और सम्मोहन की साधना से संभव है, जिससे प्राप्त होता है, एक मोहित कर देने वाला आकर्षण, आकर्षण युक्त पुरुष और स्त्री ही आनन्द निमग्न रहते हैं। संसार के सुखों का भोग करते हैं, ऐसा दिव्य मुहूर्त है रूप अनंग चर्तुदशी।

जीवन में हास्य, विनोद, आनन्द व तृप्ति प्राप्त हो जाना कोई सामान्य सी बात नहीं है, यह तो जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है, जिसे प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े योगियों और ऋषि मुनियों ने कठिन से कठिन तप किये है, तब जाकर वे पूर्ण कहलाये और यह दिखा दिया कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चयी और आत्मविश्वासी हो, तो वह तप व साधना के बल पर क्या कुछ नहीं कर पाता, और जब ऐसा होगा तो उसके चेहरे पर एक ओज, एक उमंग, एक आह्लाद, एक प्रसन्नता, स्वतः ही झलकने लग जायेगी... और यही तो वास्तविक सौन्दर्य है।

सौन्दर्य किसी नारी, अप्सरा या प्रकृति का नाम नहीं है, वे तो केवल सौन्दर्य के प्रतिमान है। जिसे देखकर आप अपने-आप को चिंतामुक्त अनुभव करने लगें, और आनन्द की स्थिति उत्पन्न होने लगे, सही अर्थों में वही सौन्दर्य है।

आज सौन्दर्य प्रसाधनो के माध्यम से व्यक्ति सौन्दर्यशाली बने रहने का प्रयास करता है तरह-तरह के विटामीन्स खाता है। सौन्दर्य विशेषज्ञ भी सौन्दर्य का स्थायी हल ढूंढने के प्रयास में रत है, किन्तु आज तक स्थायी उपाय प्राप्त करने में असफल ही है। हां, यह जरूर है कि सर्जरी के माध्यम से चेहरे व शरीर की झुरियां को समाप्त करने में डॉक्टर सफल हुए हैं, किन्तु यह चिकित्सा अत्यन्त महंगी है, और अत्यन्त कष्ट साध्य भी है, जिसे अपनाना प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नहीं है।

यदि हम अपना थोड़ा-सा ध्यान ऋषि परम्परा द्वारा अविष्कृत उपायों पर डालें, तो हमें पता चलेगा कि सौन्दर्य का स्थायी उपाय उन लोगों ने बहुत पहले ही ढूंढ निकाला है। हमारे प्राचीन ऋषियों धन्वन्तरी, अश्विनी, च्यवन आदि ऐसे व्यक्तित्व हुए है, जिन्होंने अपने पूरे जीवन को इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लगा दिया कि-

-आखिर जीवन का वास्तविक तथ्य क्या है?

-कैसे अपने आप को ओजस्वी, यौवनवान और सौन्दर्यवान बनाया जा सकता है?

-किस प्रकार बुढ़ापे को जवानी में बदला जा सकता है?

-किस प्रकार अपने पूर्ण शरीर का कायाकल्प किया जा

सकता है?

'कायाकल्प' का तात्पर्य उस सदाबहार तरोताजगी अद्वितीय सौन्दर्य और उस मस्ती से है, जो जीवन में आनन्द का बीज बो दे, ६० वर्ष के वृद्ध को भी १६ वर्षीय पूर्ण सौन्दर्य प्रदान कर दे, क्योंकि व्यक्ति तन से भी अधिक मन पर थोपे गये विचारों से बूढ़ा हो जाता है, और उसका सारा सौन्दर्य ही ढल जाता है.....जीवन में इस आनन्द का होना ही सौन्दर्य वृद्धि है।

सौन्दर्य तो आधार है जीवन का, ईश्वर का दिया हुआ वरदान है, जिसका तात्पर्य प्राप्त होना जीवन की श्रेष्ठता, पूर्णता कही जाती है। जितने भी ग्रन्थ, वेद, पुराण, लिखे गये हैं, उन सब में सौन्दर्य का विस्तृत विवेचन हुआ है।

सुन्दर होना, सुन्दर दिखना, सुन्दरता का सम्मान करना, उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है।

मैंने अपनी जीवन में सिद्धाश्रम में अनिन्द्य सुन्दर साधिकाओं और संन्यासियों को देखा है एक से बढ़कर एक सुन्दरियों व अप्सराओं को भी साधनारत होते देखा है, जो अपनी देहयष्टि को पूर्ण यौवनवान, और चैतन्यवान बनाये रखने के लिए साधनारत रहती हैं।

अनिन्द्यं अद्वितीय च सौन्दर्य यान्ति निश्चितम्।
साधनां सौन्दर्याख्याय कांक्षन्त्यपसरोऽपि यत्॥

'निश्चित रूप से साधना के द्वारा भी अनिन्द्य सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है, अप्सराएं भी सुन्दरतम बनने के लिए सौन्दर्य साधना करती हैं'।

'सौन्दर्य साधना' ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जिसे अप्सराओं ने भी सिद्ध किया, वैसे तो पूर्ण यौवनवान और सौन्दर्यवान बनने के लिए १६ प्रकार की अप्सराओंकी साधनाओं का ही महत्व पुराणों में प्रतिपादित किया गया है, किन्तु जिसे प्राप्त करने के लिए स्वयं अप्सरायें भी लालायित हों, उस सौन्दर्य की तो मात्र कल्पना ही की जा सकती है, और ऐसे अद्वितीय सौन्दर्य का प्राप्त होना, जीवन का सौभाग्य है, जीवन की श्रेष्ठता है, जीवन की सम्पूर्णता है।

इस साधना को स्त्री व पुरुष दोनों ही सम्पन्न कर अपने शरीर का पूर्ण कायाकल्प कर सकते हैं, जहां पुरुष यह साधना पर ऊंचा कद, उन्नत ललाट, अत्यधिक दिव्य और तेजस्वी आंखें, उभरा हुआ वक्षस्थल, लम्बी भुजाएं और उसके साथ ही साथ दृढ़ता, पौरुषता, साहस प्राप्त कर ऐसे सौन्दर्य का मालिक बनता है, जो दर्शनीय हो, शौर्य और

साहस का प्रतिबिम्ब हो, वहीं स्त्रियों भी सांचे में ढला हुआ भरा-पूरा शरीर, गोरा रंग, अण्डकार चेहरा, उन्नत उरोज और मुट्ठी में आने लायक कमर-एक ऐसा शरीर जो खिले हुए गुलाब के पुष्प की याद दिलाता हो, जिसे देखकर बहते हुए झरने का लुभावना नृत्य दिखाई दें, जिसके एहसास से ही जीवन में आनन्द की अनुभूति होती हो, प्राप्त कर लेती है।

साधना विधि :

१. कामदेव के मंत्रो से प्रतिष्ठित 'सौन्दर्य यंत्र', 'रुपा माला', और 'नीलकर्ण मुद्रिका' इन तीनो सामग्रीयों को साधना से पूर्व साधक प्राप्त कर लें।

२.यह साधना दिनांक ३-११-२००२ के दिन प्रारंभ करें या फिर माह के किसी भी शुक्रवार के दिन इस साधना को प्रारम्भ करें।

३.रात्रि को ८.४५ से ११.३० के मध्य यह साधना करें।

४.साधना करने से एक दिन पूर्व ही अपने साधना कक्ष को अच्छी तरह धोकर साफ-सुथरा कर लें। साधना काल में प्रत्येक सामग्री में नूतनता स्पष्ट होनी चाहिए, क्योंकि सौन्दर्य साधना के लिए यह सब आवश्यक है।

५. स्वयं भी स्वच्छ और सुरुचिपूर्ण वस्त्र धारण करें।

६. अपने सामने एक चौकी बिछा कर, उसके उपर एक कपड़ा बिछा लें, पानी से भरा एक सुन्दर कलश रखें, उसके उपर पीला चावल हल्दी से रंगकर एक प्लेट में, जो उस कलश पर रखी जा सके, रख दें।

७.पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर, सफेद आसन पर बैठकर यह साधना सम्पन्न करें।

८.इसके बाद यंत्र को जल से धोकर पोंछ लें, और यंत्र पर इत्र छिड़क दें, तथा अपने उपर भी इत्र छिड़कें, धूप व दीप से वातावरण को सुगन्धमय बनायें।

९.यंत्र को पीले चावलों के ऊपर स्थापित करें, इसके बाद यंत्र पर केसर से पांच बिन्दी लगाएं, जो पांच प्राणो की प्रतीक है, क्योंकि सौन्दर्य का प्रतिस्फुरण इन्हीं प्राणों के माध्यम से शरीर में अभिव्यक्त होता है।

१०. 'मुद्रिका' को भी यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें।

११. **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणी।**
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्॥

इस मंत्र को बोलते हुए यंत्र पर पांच बिन्दियां लगायें, तथा मुद्रिका पर भी एक बिन्दी लगायें।

१२. अक्षत चढ़ायें-

अक्षतान् धवलान् देवि शालीयांतन्दुलांस्तथा ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि॥

यंत्र, कलश तथा मुद्रिका पर चावल छिड़कें।

१३.इसके बाद धूप और दीप दिखाकर दोनों हाथों मे खुले पुष्प लेकर पुष्पांजलि अर्पित करें-

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि च।
पुष्पांजलिर्मयादत्ता गृहाण परमेश्वरि॥

यंत्र के उपर पुष्प चढ़ा दें।

१४. इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें 'हे देवी ! आपके भीतर समाहित सभी गुण मुझमें अनुप्राणित हों'।

सौन्दर्यं भवतीरहोके, माधुर्य ओजमं तेजस्तथेदं।
रुपोज्वला, रुपदिव्या प्रपन्ना, याचे य नित्यं त्वं देहि मातः॥

'हे मां ! आप सौन्दर्य की अधिष्ठात्रि देवी हैं, ओज और तेज सभी दिव्य गुण आप में समाहित हैं, मैं आप से इसी रुपराशि की प्राप्ति की कामना करता हूं।

१५.इसके बाद निम्न मंत्र का 'रुपामाला' से ५४ माला मंत्र जप सुविधानुसार रात्रि में ७ दिन में करें-

मंत्र

॥ ॐ श्रीं सौन्दर्याभिवाप्तये श्रीं नमः॥

१६.जप समाप्ति के बाद गुरुपूजन करें व इच्छानुसार गुरु मंत्र जप करें।

१७.दो दिन तक इसी प्रकार मंत्र जप करें, इसके बाद समस्त सामग्री को नदी या कुएं में प्रवाहित कर दें।

यह साधना अत्यंत ही प्रभावोत्पादक एवं शीघ्र लाभप्रद है। साधना के थोड़े दिन बाद ही आप अपने भीतर विशिष्ट गुणों का आविर्भाव अनुभव करेंगें, तथा शनैः शनैः सौन्दर्य वृद्धि अनुभव होने लगेगी और दूसरो के साथ साथ स्वंय को भी इस बात का एहसास होने लगेगा। इस साधना को गम्भीरता पूर्वक पूर्ण श्रद्धा से करें।

आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्र ६ पर अपने दोनों मित्र का पता लिखकर भेजें कार्ड मिलने पर रु. ४९०/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

शास्त्रोक्त दीपावली महापूजन

लक्ष्मी का प्रभाव क्षेत्र अत्यंत व्यापक है, जीवन के किसी भी क्षेत्र को देखें, लक्ष्मी से रहित नहीं हैं, भोजन, वस्त्र, आवास, लोक व्यवहार, दान पुण्य, अतिथि सेवा, देव पूजन, अतिथि सत्कार, यज्ञ, तीर्थ यात्रा सबका आधार धन है। इसी लिए कहा है-

वरं वनं व्याघ्र गजेन्द्र सेवितम्,
द्रुमालयं पत्र फलाम्बु सेवनम्।
तृणेषु शैय्या ननु जीर्ण वल्कलम्,
न बन्धु मध्ये धनहीन जीवनम्॥

संसार में धनवान व्यक्ति की प्रशंसा सृष्टि के प्रारंभ से ही होता आई है। इसी लिए लक्ष्मी अर्थात धन को सर्वगुण सम्पन्न कहा गया है।

यस्यस्ति वित्तं स नरः कुलीनः,
स पण्डितः स श्रुतवान गुणज्ञ :।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः,
सर्वेगुणाः कांचनमाश्रयन्ति॥

जीवन में हम जो भी कार्य करते है उसका एक क्रम होता है, विशेष नियम होते हैं, उसके अनुकूल परिणाम मिलते हैं। जैसे खेती के लिए जुताई, बुआई तथा सिंचाई की क्रमिक व्यवस्था है। यही खेती के नियम और सिद्धांत हैं उसी तरह लक्ष्मी साधना के भी नियम है। इसके लिए दीपावली का मुहूर्त विशेष रूप से अनुकूल माना जाता है और यह लक्ष्मी पूजन और आराधना लक्ष्मी की कामना करने वाले हर व्यक्ति के लिए है।

पूजन सामग्री

कुंकुम, अक्षत, मौली, अगरबत्ती दीपक केसर, सिन्दूर, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, फल, पुष्प माला, गंगा जल, मिठाई तथा पंच पात्र।

साधना सामग्री

महालक्ष्मी सिद्ध यंत्र, लक्ष्मी चैतन्य माला, वरवरद द्वादश, गणपति विष्णु चैतन्य विग्रह तथा **दारिद्रय विद्राविणी लक्ष्मी कला।**

मुहूर्त

दीपावली पूजन का शुभ मुहूर्त है, ४ नवम्बर शाम ६ बजकर ३३ मिनट से रात्रि ८.२८ तक वृष लग्न है। इसके बाद मध्य रात्रि को १.०१ से ३.१८ तक, अमृतकाल का युवा काल समय सर्वश्रेष्ठ है। जो सिंह लग्न है, विशिष्ट लक्ष्मी अनुष्ठान हेतु यही सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

सबसे पहले स्नानादि से निवृत्ति होकर शुद्ध वस्त्र पहनें,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख करके शुद्ध आसन पर बैठें, सामने बाजोट पर सफेद या पीला वस्त्र बिछा कर मध्य में थाली रखें। उसमें कुंकुम अष्टदल कमल बनाकर या स्वस्तिक बनाकर **महालक्ष्मी** यंत्र को स्थापित कर दें। इस पूजन में आपके पास जो भी अलंकरण हैं उनको भी थाली में रखकर अपनी दायीं ओर चौमुखे तेल का दीपक जलाएं तथा अगरबत्ती जलाकर पंचपात्र में जल रख लें, कुंकुम से **ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः** बोलकर कुंकुम या चन्दन का तिलक अपने ललाट पर लगावें।

पवित्रीकरण-बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर तथा सभी सामग्रियों पर जल का छींटा दें और निम्न मंत्र का पाठ करें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र को उच्चारण करें-

ॐ विष्णु विष्णु श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे अस्मिन् पवित्र क्षेत्रे अमुक वासरे (दिन का नाम लें) अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना गोत्र बोलें), अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) यथा मिलितोपचारैः श्री महालक्ष्मी प्रीत्यर्थे दीपावली पूजनं च करिष्ये।

जल भूमि पर छोड़ दें।

गुरु पूजन

सामने गुरु यंत्र व गुरु चित्र स्थापित कर लें तथा दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥
गुरुं आवाहयामि स्थापयामि नमः।
पाद्यं, स्नानं, तिलकं, पुष्पं, धूपं,
दीपं, नैवेद्यं च समर्पयामि नमः॥

ऐसा बोल कर पाद्य, स्नान, तिलक, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य आदि समर्पित करें। फिर दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें-

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

इसके बाद गुरु मंत्र का एक माला मंत्र जाप करें-

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।

गणपति पूजन

अपनी दायीं ओर पीले चावल की १२ ढेरी बनाकर उसमें **द्वादश वरवरद** गणपति को स्थापित करें और दोनों हाथ जोड़ कर यह मंत्र पढ़ें-

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः ध्यायामि श्री गणपत्यादि द्वादश विनायकेभ्यो नमः।

बारह ढेरियों के ऊपर १२ वरवरद गणपति को स्थापित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि
ॐ विनायकाय नमः विनायकमावा। स्था।
ॐ गजवक्त्राय नमः गजवक्त्रमावा। स्था।
ॐ भालचन्द्राय नमः भालचन्द्रमावा।स्था।
ॐ उपेन्द्राय नमः उपेन्द्रमावा, स्था।
ॐ विघ्नविनाशाय नमः विघ्नविनाशकं आवाह्यामि, स्था।
ॐ शिवसुताय नमः शिवसुतमावा। स्था।
ॐ हरिनन्दनाय नमः हरिनन्दनामावा।स्था।
ॐ हेरम्बाय नमः हेरम्बमावा।स्था।
ॐ लम्बोदराय नमः लम्बोदरमावा।स्था।
ॐ कार्तवीर्याय नमः लम्बोदरमावा।स्था।
ॐ महावीर्याय नमः महावीर्यमावा।स्था।

इसके बाद कुंकुम, अक्षत और पुष्प से पूजन करके निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जाप करें-

ॐ गं गणपतये नमः

विष्णु लक्ष्मी पूजन

लक्ष्मी पूजन में जब तक विष्णु का पूजन नहीं होता तब तक वह पूजन अधूरा माना जाता है तथा पूर्ण सफलता प्राप्ति में संदेह बना रहता है। इसलिए लक्ष्मी पूजन में विष्णु पूजन अवश्य करनी चाहिए।

इसके लिए यंत्र के सामने चावल के ढेरी के ऊपर विष्णु लक्ष्मी विग्रह (श्रीफल) को स्थापित करके कुंकुम, अक्षत, पुष्प तथा धूप, दीप से पूजन करके निम्न मंत्र का हाथ जोड़कर उच्चारण करें-

हंसः सोहं विश्वातीर्ण स्वरूपाय, चिन्मयानन्दरूपिणे तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्याराजाय विष्णवे स्वाहा हंसः सोहम

इस प्रार्थना के बाद निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जाप करें-

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः

दारिद्रय विद्राविणी लक्ष्मी कला

अपनी बायीं ओर लाल चावल के १६ ढेरी बनाकर उसमें १६ कलाओं को स्थापित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन सुसरस्त्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम।

निम्न मंत्रों को बोलते हुए कुंकुम अक्षत से पूजन करें

ॐ गं गणपतये नमः गणपतिमावा, स्थापयामि।
ॐ गौर्यै नमः गौरी मावा, स्थापयामि।
ॐ पद्मायै नमः पद्मामावा स्थापयामि।
ॐ शच्यै नमः शचीमावा, स्थापयामि।
ॐ मेधायै नमः मेधा मावा, स्थापयामि।
ॐ सावित्र्यै नमः सवित्रीनामा स्थापयामि।
ॐ विजयायै नमः विजयामा स्थापयामि।
ॐ जयायै नमः जयामावा स्थापयामि।
ॐ देवसेनायै नमः देवसेनामावा स्थापयामि।
ॐ स्वधायै नमः स्वधामा स्थापयामि।
ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावा स्थापयामि।
ॐ मातृभ्यो नमः मातृरावा स्थापयामि।
ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृरावा स्थापयामि
ॐ धृत्यै नमः धृतिमावा स्थापयामि।
ॐ पुष्टयै नमः पुष्टिमावा स्थापयामि।
ॐ तुष्टयै नमः तुष्टिमावा स्थापयामि।
ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावा स्थापयामि।

महालक्ष्मी पूजन

दोनों हाथ जोड़ कर भगवति का ध्यान करें-

पद्मासना पद्मकरां पद्म माला विभूषिताम्।
क्षीर सागर संभूतां हेमवर्ण समप्रभाम॥
क्षीर वर्ण समं वस्त्रं दधानं हरिवल्लभाम्।
भावये भक्तियोगेन भार्गवीं कमलां शुभां।
श्री महालक्ष्म्यै नमः ध्यानं समर्पयामि॥

आह्वान

ध्यान के पश्चात दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवती लक्ष्मी का आह्वान करें तथा निम्न मंत्र पढ़ें-

महापद्म वनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरह्योहि परमेश्वरि॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः आह्वाहनं समर्पयामि॥

पुष्प को यंत्र पर समर्पित कर दें।

आसन

आसन के लिए एक पुष्प अर्पित करें-

श्री महालक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि नमः॥
पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं स्नानं च समर्पयामि॥

पाद्य, अर्घ्य और आचमन के बाद शुद्ध जल से स्नान कराएं

पंचामृत स्नान (दूध, दधि, घी, शहद, चीनी)

पंचामृत से भगवती महालक्ष्मी को स्नान कराएं

मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितम्।
पंचामृतं गृहाणेदं पंचास्यप्राणवल्लभे॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि॥

शुद्धोदक स्नान

इसके बाद उन्हें शुद्ध जल से स्नान कराएं-

परमानन्दबोधाब्धिं निमग्न निजमूर्तये।
शुद्धोदकैस्तव स्नानं कल्पयाम्यम्ब शंकरि॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्र

वस्त्र समर्पित करें-

श्री महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि॥

आभूषण

आभूषण समर्पित करें-

श्री महालक्ष्म्यै नमः आभूषणं समर्पयामि॥

गन्ध

इत्र चढ़ावें-

श्री महालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि॥

अक्षत

श्री महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि॥

पुष्प

श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि॥

इसके बाद कुंकुम, चावल तथा पुष्प मिला कर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए यंत्र पर चढ़ाएं।

ॐ आद्य लक्ष्म्यै नमः
ॐ विद्या लक्ष्म्यै नमः
ॐ सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः
ॐ अमृत लक्ष्म्यै नमः
ॐ कमलाक्ष्यै नमः।
ॐ सत्य लक्ष्म्यै नमः
ॐ भोग लक्ष्म्यै नमः
ॐ योग लक्ष्म्यै नमः

धूप

श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपं आघ्रापयामि॥

दीप

श्री महालक्ष्म्यै नमः दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य

नाना विधानि भक्ष्याणि व्यंजनानि हरिप्रिये।
यथेष्टं भुङ्क्ष्व नैवेद्यं षड्रसं च चतुर्विधम्॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्य निवेदयामि॥

नैवेद्य समर्पित कर तीन बार जल का आचमन कराएं।

ताम्बूल

लौंग इलायची युक्त पान समर्पित करें-

श्री महालक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि॥

दक्षिणा

दक्षिणा द्रव्य समर्पित करें-

श्री महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि॥

इसके बाद 'कमलगट्टे की माला' से निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र जप सम्पन्न करें-

मंत्र

ॐ क्लीं श्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

आरती

इसके बाद लक्ष्मी आरती संपन्न करें।

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसि दिन सेवत, हर विष्णु धाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता.....
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता.....
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, रिधि सिधि धन पाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता.....
तुम पाताल निवासिन, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकासिनी, भव निधि की त्राता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता.....
जिस घर तुम रहती तहं, सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता.....
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान पान का वैभव सब तुमसे आता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता.....
शुभ गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता.....
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥
ॐ जय लक्ष्मी माता.....

जल आरती

तीन बार आचमनी से जल लेकर दीपक के चारों ओर घुमाएं तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गुं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्ति र्विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्व (गुं) शान्ति : शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

पुष्पांजलि

दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा यंत्र पर चढ़ा दें-

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिर्मया दत्ता गृहाण जगदम्बिके॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पांजलि समर्पयामि॥

प्रणामांजलि

दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रार्थना करें-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः॥
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताः॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः नमस्करोमि॥

समर्पण

इसके बाद निम्न समर्पण मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजन व जप भगवती लक्ष्मी को समर्पित करें, जिससे कि इसका फल आपको प्राप्त हो सके-

ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु, अनेन कृतेन पूजाराधन कर्मणा।
श्री महालक्ष्मी देवता परासंवित् स्वरूपिणी प्रीयन्ताम्॥

एक आचमीन जल ले कर पूजन की पूर्णता हेतु भूमि पर छोड़ दें।

इसके बाद वहां उपस्थित परिवार के सभी सदस्यों एवं स्वजनों को प्रसाद वितरित करें।

इस प्रकार यह सम्पूर्ण पूजन व साधना सम्पन्न होती है। साधना समाप्ति के पश्चात माला व यंत्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें और शेष सामग्री को अगले दिन जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री-४५०/-

जीवन साधना

यो तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज है, परंतु मंत्रों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं

१. अनिद्रा रोग और मानसिक तनाव भी निपट जाता है इस प्रयोग से?

आज के युग की विडम्बना कहें या व्यक्ति के अपने निजी जीवन की बात, जो भी हो अनिद्रा रोग और मानसिक तनाव एक सामान्य घटना होती जा रही है। व्यस्त जीवन में रहते हुए व्यक्ति जाने अनजाने में सैकड़ों तनावों से घिरा रहता ही है, जिसकी दुःखद परिणति मानसिक तनाव में होती है। और फिर आगे चलकर व्यक्ति सारी-सारी रात आंखों में बिना नींद के काटने के लिए मजबूर हो जाता है, जिससे उसका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और निर्णय लेने की क्षमता घटने लग जाती है। रोग के होने पर आपको तनावग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आप चाहें तो इस अद्वितीय प्रयोग के माध्यम से अनिद्रा रोग को समाप्त कर की रात से आरंभ कर निम्न मंत्र का विद्युत माला से नित्य ५ माला जप करें-

॥ ॐ हूं हूं हनुमाते हुं हुं फट॥

नौ दिन तक नियमित रूप से जपने पर ऐसी मानसिक शांति प्राप्त होगी जिससे अनिद्रा और तनाव दूर होने लगते प्रयोग समाप्ति के बाद गुटिका व माला को किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट-३६०/-

२. संतान स्वास्थ्य रक्षा हेतु आप प्रयास क्यों नहीं करते?

संतान हो, परंतु प्रायः रोग ग्रस्त ही रहे, तो माता-पिता का चिन्तित होना स्वाभाविक है। आए दिन बच्चे किसी न किसी छोटे-बड़े रोग से ग्रस्त ही रहते हैं, कभी बुखार, तो कभी सर्दी, कभी जुकाम, तो कभी

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

प्रयोग किया जाए, तो उसकी स्वास्थ्य रक्षा होती है।

किसी पात्र में लाल पुष्प की पखुडियां डाल **'गोपाल गुटिका'** स्थापित करें। इसका पूजन कुंकुम, अक्षत से करें यंत्र के समक्ष दीपक लगा कर निम्न मंत्र का जप ११ दिन तक २५ बार नित्य प्रातः काल करें-

मंत्र

॥ ॐ सौं संतान सुखं देहि ॐ रुद्राय नमः॥

ग्यारह दिन के बाद गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट-९०/-

३. पेट को सुन्दर और संतुलित बनाया जा सकता है मैडम।

अपने फिगर को संभाल कर रखने के लिए आवश्यक है कि आपका पेट संतुलित रहे। बढ़ा हुआ पेट आपके सौन्दर्य को समाप्त ही करता है।

पेट को सुन्दर और सन्तुलित बनाने के लिए **वर्तुल** पर देखते हुए वीरासन में बैठ जाएं और २१ बार निम्न मंत्र का जप करें-

मंत्र

॥ ॐ श्रीं सुवर्तनाय फट्॥

५ दिनों के बाद इसे नदी में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद आपका पेट स्वतः ही संतुलित और सुन्दर हो जाएगा, क्योंकि यह प्रयोग साधारण प्रयोग नहीं है।

साधना सामग्री-१००/-

४. क्या आपकी हाइट कम है और आप हीन भावना से ग्रस्त हैं तो

सौन्दर्य हर प्रकार का होता है, सांवले नैन-नक्श जिस प्रकार से अलग सुन्दरता लिए रहते हैं, ठीक उसी प्रकार अगर हाइट कम है, तो इसमें हीन भावना से ग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि प्रकृति स्वयं अपने हाथों से प्रत्येक को गढ़-गढ़कर बनाती है।

लेकिन फिर भी सौन्दर्य का मापदण्ड पा लेना भी श्रेष्ठ है और सम्पूर्ण ऊंचाई पाना भी सौन्दर्य का एक गुण है। यह सौन्दर्य मंत्रों के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है, यदि आप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से यह प्रयोग करें।

कल्पवांछा गुटिका किसी पात्र स्थापित कर उसके समक्ष नित्य २१ दिनों तक मात्र ११ बार निम्न मंत्र जप करें, इससे आप पा लेंगे आपकी हाइट-

मंत्र

ॐ हुं हुं क्लीं हुं हुं फट्॥

लेकिन इस प्रयोग के बाद आप नित्य २० बार भस्त्रिका करें और जमीन पर बैठे-बैठे उछल कर खड़े हों। प्रयोग के बाद गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट-१००/-

५. मुकदमा में सफलता हेतु

ऐसा अनेक बार देखने में आया है कि सीधा-सादा व्यक्ति कई बार मुकदमों के चक्कर में ऐसा फंस जाता है कि उसकी रातों की नींद भी उड़ जाती है। और जिनके पास हथकण्डे हैं, वे दंद-फंद करके आपको झूठा व अपने को सच्चा साबित कर लेते हैं। अब आप कैसे अपने को प्रमाणित करें, ऐसी स्थिति में दैवीय सहायता के अलावा कोई अन्य चारा नहीं रह जाता। इस प्रयोग द्वारा आपके लम्बे चल रहे मुकदमे का आपके पक्ष में शीघ्र ही फैसला हो जाता है, इसके लिए आप **'काल भैरव यंत्र'** को अपने सामने स्थापित कर निम्न मंत्र की **'काली हकीक माला'** से रात्रि में ९ बजे के बाद जप करें-

मंत्र

॥ॐ कं काल भैरवाय विजयं देहि ॐ फट्॥

नित्य रात्रि में ८ माला का जप करें। यह ११ दिन का प्रयोग है, प्रयोग समाप्ति पर काली हकीक माला व यंत्र को श्मशान अथवा किसी निर्जन स्थान में फेंक आवें।

साधना सामग्री पैकेट-३६०/-

नक्षत्रों की वाणी

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ)

संघर्ष जीवन का एक अंग है। आप उससे घबराएं नहीं तथा इस माह उत्पन्न चुनौतियों का दृढ़ता के साथ सामना करें। कार्य क्षेत्र या व्यापार में उन्नति होने का योग है परंतु तभी जब आप विपरीत स्थितियों से जूझते हुए आगे बढ़ें। शत्रुओं से सतर्क रहें। स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। परिवार, जीवन साथी और संतान से आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी। परिवार के साथ अधिक समय बिताने से तनाव कम होगा। आध्यात्म में आपकी रुचि बढ़ेगी तथा आप साधनाओं द्वारा अपने लक्ष्य तक पहुंच पाएंगे। इस मास विशेष अनुकूलता हेतु **त्रिपुर सुंदरी साधना** संपन्न करें। शुभ तिथियां १, ६, ९, ११, १७, २३, २५, २७ हैं।

वृष (ई, उ, ए, वा, वी, वू, वे, वो)

आप जीवन में एक सच्चे मित्र सिद्ध हो सकते हैं, परंतु इस मास एक मित्र के दूर चले जाने से या मित्रता समाप्त हो जाने से आपको दुख होगा। अगर आप बेरोजगार हैं तो यह माह आपके लिए विशेष शुभ रहेगा। आपकी रुचि के अनुसार आपको काम मिलेगा तथा धनागम भी होगा। इस मास भी यात्रा का योग प्रबल है। परंतु यात्रा करते समय अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। किसी से मतभेद होने की स्थिति में संयम रखें तथा क्रोध न करें। महिलाओं के लिए यह समय विशेष उन्नतिदायक रहेगा। इस माह आप **शिव साधना** करें। अनुकूल तिथियां २, ६, ८, ९, १६, २१, २५, ३० हैं।

मिथुन (का, की, कू, घ, ध, को, हा)

पिछले कुछ समय से चले आ रहे तनाव से आपको मुक्ति मिलेगी। इस माह आप बहुत तीव्र गति से उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे। बुद्धि की अपेक्षा आप अपनी आत्मा के निर्देशों पर चलेंगे। इस माह धनागम के नये स्त्रोत खुलेंगे। रचनात्मक कार्यों में आपका मन लगेगा तथा आशा से अधिक सफलता आपको प्राप्त होगी। परंतु व्यय पर नियंत्रण रखें नहीं तो व्यर्थ का तनाव हो सकता है। इस मास आप **प्रत्यंगिरा साधना** करें। अनुकूल तिथियां ४, ५, ७, १०, १५, १८, २२, २८, हैं।

कर्क (ही, हू, हो, डा, डी, डे, डा)

भूतकाल को भुलाकर आप वर्तमान की चिंता करें। हो सकता है कि आपके मन में कुछ दुविधा हो परंतु आत्म चिंतन के द्वारा इस माह आप सभी दुविधाओं से मुक्त होकर एक लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं याद रखें अक्सर स्वयं प्राप्त नहीं होता, उसे ढूंढना पड़ता है। इस समय यदि आप कर्मठता से आगे बढ़ जाएंगे तो कोई संदेह नहीं कि आने वाले समय में सफलता आपके कदम चूमेंगी। इस माह आपके लिए **विष्णु साधना** करना उचित होगा। विशेष तिथियां ६, ९, १०, ११, १६, १९, २३, २६, हैं।

सिंह (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टू)

इस मास आप अपने निर्णय स्वयं की सूझबूझ से लें। अफवाहों पर विश्वास न करें। समय आपके लिए श्रेष्ठ है अगर आप छोटी-मोटी परेशानियों से विचलित न हों। अधिकारी आप के कार्य से प्रसन्न होंगे तथा इसी कारण आपको पदोन्नति अथवा आय में वृद्धि भी प्राप्त हो सकती है। बस जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें नहीं तो पछताना पड़ सकता है। आपके अधिकारी ही नहीं सहकर्मी भी आपके कार्य की सराहना करेंगे। इस मास आप बहुत व्यस्त भी रहेंगे परंतु परिवार के लिए भी कुछ समय अवश्य निकालें। संबंधियों एवं मित्रों का घर में आगमन हो सकता है। इस मास आप पूर्ण सफलता हेतु **छिन्नमस्ता साधना** संपन्न करें। शुभ तिथियां- १, ६, ७, १३, १७, २४, २८, ३०, हैं।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ,)

व्यापारियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है, उनके कार्य सिद्ध होंगे तथा कोई भी नया काम आरंभ करने पर उसमें सफलता मिलेगी। विशेषत: जमीन के क्रय विक्रय में लाभ होगा। कुल मिलाकर आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परंतु व्यय भी हो सकता है। बेरोजगार वर्ग के लिए भी यह समय शुभ है तथा साक्षात्कार में सफलता मिलेगी। इस मास किसी पुराने संबंधी या मित्र से भेंट होने से मन प्रसन्न होगा। यात्रा इस माह शुभ रहेगी। और अधिक प्रगति के लिए **गंधर्वराज साधना** अवश्य करें। विशेष अनुकूल तिथियां २, ४, ५, ८, १२, १५, १९, २३, २७, हैं।

सर्वार्थ, अमृत, रवि पुष्य, द्विपुष्कर, सिद्धि योग

अमृत सिद्धि योग ३,६ नवम्बर
सर्वार्थ सिद्धि योग ३,६, ११,२६ नवम्बर
सिद्धि योग १,६,१२,१४,१५ नवम्बर

तुला (रा, री, रू, ता, ती, तू, ते)

आप पिछले कुछ समय से अपने जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे थे जिसमें आपको मिली जुली सफलता प्राप्त हुई। इस मास इस दिशा में आप प्रगति करेंगे। स्थान परिवर्तन का योग है। आप अपना स्वयं का कोई व्यापार या काम भी आरंभ कर सकते हैं। निश्चित ही इसमें आपको सफलता मिलेगी। परंतु साझेदारी का काम न करें उसमें हानि होने की संभावना है। मित्रों एवं संबंधियों से मेल जोल बढ़ेगा। वाहन का प्रयोग करते समय सावधान रहें, दुर्घटना होने की संभावना है। इस माह आप **धनवंतरी साधना** करें। शुभतिथियां- ५, ८, ११, १४, १६, २२, २५, २८, २९ हैं।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

आर्थिक दृष्टि से यह माह श्रेष्ठ रहेगा। धनागम के नए स्रोत खुलेंगे, आकस्मिक धन लाभ होगा, तथा आय में वृद्धि भी हो सकती है। परंतु अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। घर से बाहर कुछ न खाएं तो अच्छा है। रात को वाहन प्रयोग करते समय भी सतर्क रहें। प्रेम प्रसंग में सफलता का योग है। कोई शुभ समाचार आपको बहुत अधिक प्रसन्नता लाएगा। संतान की शिक्षा की ओर ध्यान दें तथा उन्हें और अधिक परिश्रम के लिए प्रोत्साहित करें। इस मास **सूर्य साधना** संपन्न करें। शुभ तिथियां ६, ९, १५, १७, २३, २६, २९, ३० हैं।

धनु (ये, यो, भा, भी, धा, फा, ढा, भे)

इस मास आप बहुत अधिक व्यस्त रहेंगे, कार्य क्षेत्र में और घर पर भी परंतु सभी कर्तव्यों का आप भली प्रकार से पालन कर पाएंगे। कोई निर्णय अकेले लेने की अपेक्षा औरों से विचार विमर्श कर लेना उचित होगा नहीं तो बाद में मतभेद पैदा हो सकता है। समय आपके पास कम होगा और काम अधिक परंतु फिर भी आप समय पर सब पूरा कर लेंगे। मित्रों और संबंधियों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। अगर आप नौकरी बदलने की इच्छा रखते हैं तो इस मास आपको ऐसा अवसर प्राप्त हो सकता है। सफलता हेतु **पारद गणपति साधना** करें। विशेष तिथियां १, ३, ७, ८, १३, १५, २०, २५, २७, हैं।

मकर (भो, जा, जी, खू, खे, खो, गा, गी)

लंबे समय से अटका हुआ कोई काम या न्यायिक मामला सुलझ जाएगा। निर्णय आपके ही पक्ष में होगा। अगर आप विदेश जाकर कार्य करने की इच्छा रखते हैं तो ऐसा ही अवसर आपको इस मास प्राप्त हो सकता है। परंतु जाने से पहले आश्वस्त हो जाएं कि कार्य आपके अनुकूल है। आपको को व्यक्ति धोखा भी दे सकता है। महिलाओं के लिए यह समय चुनौतिपूर्ण है तथा उन्हें अपने कार्य क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ सकता है। इस मास आप **कनकप्रभा साधना** संपन्न करें। शुभ तिथियां २, ६, ७, १०, १४, १, २२, २८ हैं।

कुंभ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

इस मास आपको अपने कार्यक्षेत्र में, नौकरी में या समाज में विशेष सम्मान या लाभ प्राप्त होगा। लोग आपके कार्य की सराहना करते नहीं रह सकते, परंतु झूठी प्रशंसा करने वालों से सावधान रहें। ईर्ष्या वश कुछ लोग आपको हानि पहुचाने का प्रयत्न कर सकते हैं। अधिकारियों से संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आपके व्यवहार से प्रसन्न रहेंगे। नया मकान खरीदने का यह सही समय है। इस मास इस प्रकार धनागम होगा जिसकी आपने कल्पना भी नहीं की होगी। इस मास आपके लिए अनुकूल होगा कि आप **नटराज शिव साधना** करें। विशेष तिथियां ३, ९, १२, १३, १६, २०, २२, २५, २९ हैं।

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची)

आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह मास उत्तम है। आप इस समय अवश्य ही साधनाएं संपन्न करें। किसी तीर्थ स्थल की यात्रा का योग भी प्रबल है। भौतिक स्तर पर भी यह समय उत्तम सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पहले से कहीं अच्छी होगी तथा धन लाभ भी हो सकता है। परिवार में वातावरण प्रसन्नता पूर्ण होगा। इस मास आप **वागेश्वरी साधना** संपन्न करें। अनुकूल तिथियां १, ४, ५, ७, १०, १३, १८, २५, ३० हैं।

यह मास ज्योतिष के दृष्टि से

देश के सम्मुख विशेष वातावरण में विशेष उथल-पुथल रहेगी, इस कारण आर्थिक मंदी भी अवश्य आएगी, कृषि पदार्थों में मूल्य वृद्धि का प्रभाव सब और बढ़ेगा। सांस्कृतिक सद्भाव में भी कमी आएगी, मित्र देशों से सहयोग मिलने की कोई आशा नहीं है, कश्मीर के मुद्दे का समाधान अवश्यम्भावी होगा। सीमा पर तनाव में वृद्धि होगी।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

१	नवम्बर कार्तिक कृष्ण पक्ष-	११	शुक्रवार	रमा एकादशी
२	नवम्बर कार्तिक कृष्ण पक्ष-	१३	शनिवार	धनत्रयोदशी
३	नवम्बर कार्तिक कृष्ण पक्ष-	१४	रविवार	रूप चतुर्दशी
४	नवम्बर कार्तिक कृष्ण पक्ष-	३०	सोमवार	दीपावली
५	नवम्बर कार्तिक शुक्ल पक्ष-	१	मंगलवार	गोवर्धन पूजा
६	नवम्बर कार्तिक शुक्ल-	२	बुधवार	भैयादूज
१२	नवम्बर कार्तिक शुक्ल-	८	मंगलवार	गोपाष्टमी
१५	नवम्बर कार्तिक शुक्ल-	११	शुक्रवार	तुलसी जयंती
२०	नवम्बर कार्तिक शुक्ल-	१५	बुधवार	संन्यास जयंती

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत ९९-९: आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।

वार / दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (अक्टूबर 22 27) (नवम्बर 3 10 17)	दिन 07.36 से 12.24 2.48 से 4.24 से 4.30 तक रात्रि 07.36 से 09.12 11.36 से 2.00 तक
सोमवार (अक्टूबर 23 28) (नवम्बर 4 11 18)	दिन 06.00 से 09.12 तक 09.12 से 10.48 तक 01.12 से 03.36 से 6.00 तक रात्रि 08.24 से 11.36 तक 02 से 03.36 तक
मंगलवार (अक्टूबर 22 29) (नवम्बर 1 5 12 19)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात्रि 08.24 से 11.36 तक 02.00, 03.36 तक
बुधवार (अक्टूबर 23 30) (नवम्बर 2 6 13 20)	दिन 06.48 से 08.24 तक 08.24 से 11.36 तक रात्रि 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरुवार (अक्टूबर 24 31) (नवम्बर 7 14 21)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 05.12 तक 05.12 से 06.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (अक्टूबर 25) (नवम्बर 1 8)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 04.24 तक 04.24 से 06.00 तक रात्रि 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (अक्टूबर 26) (नवम्बर 2 9 19)	दिन 10.48 से 2.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात्रि 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 4.24 से 06.00 तक

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

यह दिन कैसा बीतेगा मिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

नवम्बर

१. प्रातः काल **ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः** मंत्र का १०८ बार जप करें तथा भगवति दुर्गा को लाल पुष्प चढ़ाएं।

२. आज प्रातः काल **हनुमान बाहु** (६०/-) के आगे सरसों के तेल का दीपक लगाकर पूजन करें। फिर उसे बाएं बाहु पर बांध लें।

३. **ॐ उग्र नृसिंहाय विद्महे वज्र नखाय धीमहि तन्नो नृसिंह प्रचोदयात** मंत्र का २१ बार जप करें।

४. **ह्रीं ॐ नम शिवाय** की मंत्र का ११ बार जप करते हुए शिवलिंग पर जल चढ़ाएं।

५. कुछ चिरमी के दाने लेकर सभी परिवार सदस्यों के सिर पर से घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंक दें। कष्ट टलेगा।

६. **लक्ष्मी गुटिका** (९०/-) को पूजन कर अपनी तिजोरी में स्थापित करें। शुभ रहेगा।

७. आज २१ **माला गुरु मंत्र** जप अवश्य करें।

८. संपन्नता प्राप्ति हेतु १० मिनट तक **ह्रीं** मंत्र का जप करें।

९. आज प्रातः स्नान करते समय दाएं हाथ में जल लेकर पांच बार **'ॐ भैरवाय मां रक्षरक्ष स्वाहा'** उच्चारण कर जल को अपने स्नान करने वाले जल में छोड़ दें फिर उससे स्नान करें।

१०. आज सूर्योदय के समय **सूर्य गुटिका** को जल पात्र में डाल कर भगवान सूर्य को जल अर्पित करें। फिर गुटिका को मंदिर में चढ़ा आएं।

११. आज **बाण लिंग स्तोत्र** का ११ बार उच्चारण करें।

१२. बल एवं साहस के लिए **बजरंगबाण** का ५ बार पाठ करें।

१३. भगवान गणपति को लड्डू का भोग लगाते हुए १५ बार **'वक्रतुण्डाय हुं'** का जप करें।

१४. आज गुरु पूजन करके ही घर से बाहर जाएं।

१५. **विघ्नहारी गुटिका** (८०/-)को आज घर के दक्षिण कोने में स्थापित करें। शाम को उसे घर से दूर गाड़ दें।

१६. आज काले उड़द और सरसों का तेल निर्धन व्यक्ति को दान करें।

१७. आज प्रातः काल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार संपन्न करें।

१८. आज घर से बाहर जाने से पहले थोड़ी दही खा लें।

१९. आज हनुमान जी को चूरमे का भोग लगाएं।

२०. आज प्रातः काल सरस्वती पूजन करें तथा पांच मिनट तक **ऐं** मंत्र का उच्चारण करें।

२१. आज प्रातः काल निखिलेश्वरानन्द स्तवन का पाठ करें। दिन भर गुरु चिंतन करें तथा गुरुसेवा करने का संकल्प लें।

२२. एक पात्र में जल लेकर, उसमें कुंकुम और अक्षत डालकर तुलसी के पौधे में चढ़ाएं।

२३. आज श्याम वस्त्र धारण करें। नजर से बचेंगे।

२४. **वरदा** (९०/-)को आज सारे दिन अपनी जेब में रखें। आपकी कामना पूर्ण होगी।

२५. आज प्रातः काल शिवलिंग पर तीन बिल्व पत्र चढ़ाएं। शुभ रहेगा।

२६. प्रातः काल ५ बार हनुमान चालीसा का पाठ करें।

२७. **गं गणपतये सिद्धिप्रदाय** मंत्र का ५१ बार जप करें।

२८. **संजीवनी मुद्रिका** (१२०/-) को आज धारण करें। रक्षा होगी।

२९. आज पांच कन्याओं को भोजन कराएं तथा उपहार स्वरूप कुछ भेंट दें।

३०. प्रातः काल बिस्तर से जागते ही पहले २१ बार गुरु मंत्र का जप करें।

दि.६-११-२००२

यम द्वितीया नचिकेता प्रयोग

जिस प्रयोग को यम ने स्वयं नचिकेता को समझाया था केवल यम द्वितीया को यह प्रयोग किया जा सकता है बालकों के अकाल मृत्यु दोष निवारण हेतु विशेष आवश्यक

उपनिषद जीवन से सम्बन्धित सभी प्रश्नों की व्याख्या को लेकर लिखे गये हैं, कठोपनिषद में 'मृत्यु' उसका व्यक्ति से सम्बन्ध, कारण, निदान, अपमृत्यु, अकाल मृत्यु, पर पूर्ण व्याख्या है, यह व्याख्या नचिकेता और यम के प्रश्नोत्तर पर आधारित है।

नचिकेता महर्षि उद्दालक का पुत्र था. महर्षि ने एक विशेष विश्वजित यज्ञ किया, और अपना सारा धन ब्राह्मणों को दान में दे दिया, इस दान में बूढ़ी, बीमार, मरणासन्न गायें भी थी,जिसे देखकर बालक नचिकेता ने सोचा कि यह तो पाप हो जायेगा, पिता को रोकना चाहिए, उसने अपने पिता से कहा कि हे पिताश्री ! आप मुझे दान में किस को देंगे? उसके बार बार पूछने पर पिता ने क्रोध में कहा कि मैं तुझे मृत्यु को देता हूं, इस पर नचिकेता को बड़ा विचार आया उसने सोचा कि मैने ऐसा कौनसा आचरण किया है, जिस कारण मेरे पिता ने मुझे ऐसा वचन कहा फिर भी उसने पिता को समझाया और कहा कि अब आप शोक न करें और सत्य

२. स्वर्गलोक में भय और मृत्यु पर आप स्वयं भी नहीं है, वहां जरा, पीड़ा, वृद्धावस्था भी नहीं है, मुझे इस विद्या की प्राप्ति का ज्ञान कराएं।

३.मरे हुए मनुष्य के विषय में यह संशय है कि मरने के बाद आत्मा रहती है, और कोई कहता है कुछ भी नही रहता, आप मुझे भलीभांति समझाइये, जिससे इस सम्बन्ध में उचित निर्णय ले सकूं।

यहां हम नचिकेता के दूसरे वर के सम्बन्ध में व्याख्या करेंगे, जिसमें उसे यम द्वारा स्वर्गदायिनी विद्या का ज्ञान कराया गया, स्वर्ग का तात्पर्य है, पीड़ा, दुःख, भय से मुक्ति, जीवन इच्छानुसार जिया जाय, अकाल मृत्यु का दोष न हो, अपमृत्यु न हो, यह विद्या ही स्वर्गदायिनी **'अग्नि विद्या'** है।

मां–बाप अपने बारे में जितना चिन्तित नहीं रहते, उससे अधिक चिन्तित बच्चों के प्रति रहते है, क्योंकि मां–बाप के दोषों का सुफल, कुफल बच्चों को ही भोगना पड़ता है, जीवन प्रक्रिया में बच्चा पूर्ण रुप से विकसित प्राणी नही होता है, इस कारण बिमारी का प्रभाव भी उस पर ज्यादा पड़ता है, मृत्यु डर भी बालकों में ही ज्यादा रहता है।

बच्चे ही मां–बाप की आशा का केन्द्र होते है, बच्चे उनकी स्वनिर्मित रचना होते है, और मां–बाप चाहता है कि मेरे जीवन में जो कमियां रही वे मेरे बच्चे के जीवन में नही रहें, मैं जो जीवन में प्राप्त नहीं कर सका वह मेरा बच्चा प्राप्त करें, मेरी संतान अपने जीवन में पूर्ण उन्नति कर मां–बाप का नाम रोशन करे, बच्चो के सुख में ही मां–बाप का सुख रहता है, और ऐसे में जब कोई बालक अपमृत्यु प्राप्त कर लेता है, तो उसकी पीड़ा मां–बाप के लिए असहनीय होती है, इससे बड़ा दुःख हो ही नहीं सकता।

का पालन करते हुए मुझे यमराज के पास जाने की अनुमति दें।

पिता की आज्ञा प्राप्त कर नचिकेता यमपुरी गया उस समय यमराज कहीं बाहर गये हुए थे, वह तीन दिन तक बिना भोजन, बिना जल उसके द्वार पर बैठा रहा, इन तीन दिन के पश्चात् यमराज जब आये तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने कहा कि हे ब्राह्मण देवता ! आप अतिथि हैं, आपने तीन दिन तक मेरे घर पर बिना भोजन किये निवास किया है, आप मुझसे तीन वर अवश्य मांगे, नचिकेता ने निम्न तीन वर मांगे–

१. मेरे पिता मेरे प्रति खेद और क्रोध से रहित हो जाय, मुझ पर पूर्ण विश्वास कर मेरे साथ प्रेम पूर्वक बात करें।

इसी महत्वपूर्ण प्रश्न पर नचिकेता द्वारा पूछने पर यमराज ने जो कि मृत्यु के अधिपति हैं, विस्तार से अग्नि विद्या का ज्ञान दिया, इसको पूर्ण रुप से स्पष्ट किया जाय तो कई ग्रन्थ के समान रचना हो जायेगी आज पत्रिका पाठकोंके सम्मुख इसके सार रुप में एक विशेष **'नचिकेता प्रयोग'** दिया जा रहा है, जो इस यम द्वितीया को सम्पन्न कर जीवन का एक महादोष जो बालकों की अपमृत्यु, अकाल मृत्यु से सम्बन्धित है, दूर किया जा सकता है।

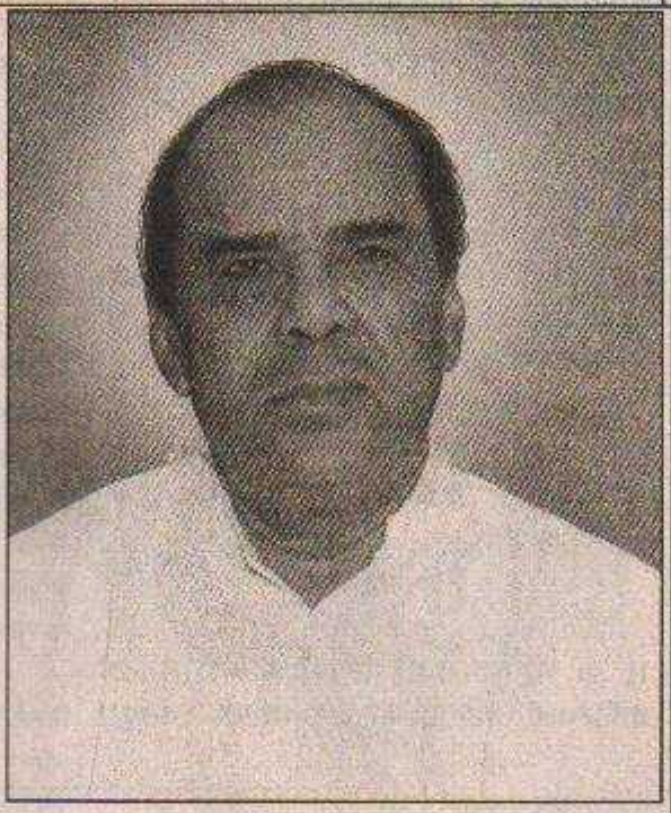

नचिकेता अग्नि विद्या

मृत्यु का पाश अपने ही सामने काट कर जीवन में स्वर्ग के समान आनन्द प्राप्त करने की क्रिया का नाम ही नचिकेता अग्नि विद्या है, इसमें केवल आवश्यकता है निर्दोष श्रद्धा, अडिग ओज की, आकांक्षा, क्षुद्र प्रलोभन से रहित होकर धैर्य के साथ कार्य करने की, तभी वह आनन्द पूर्ण रुप से बना रहता है।

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इसका आधार अग्नि है, अग्नि को साक्षी रखते हुए अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, और इस प्रयोग को केवल यम द्वितीया को ही सम्पन्न करना है।

इस साधना हेतु एक अग्नि कुण्ड पात्र जो कि लोहे का अथवा तांबे का बना हो, व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, सुविधानुसार जमीन पर यज्ञवेदी मिट्टी से बना सकते है, मूल अनुष्ठान इसी पर सम्पन्न किया जाता है।

इसके अतिरिक्त साधना में **'बारह सविता चक्र'**, **'हिरण्मयेन पात्र'**, **अग्नि प्रोक्त यन्त्र**, आवश्यक है, साथ ही लाल चन्दन, धूप, दीप, नैवेध, सुपारी, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगंध आवश्यक है।

साधना विधान

यम द्वितीया के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, तथा एक लोटे में जल लें, उसमें चन्दन और सरसों डाले, बाएं हाथ से जल को अपने पूरी देह पर थोड़ा छिड़कर पवित्रीकरण रूप में स्पर्श कराएं तथा शेष जल को बाई नासिका के स्पर्श कर अपनी देह में भगवान शंकर का चिन्तन करें, अब एक ताम्र पात्र में गन्ध, जल, चन्दन, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगंध मिलाकर सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य को नमस्कार कर उसे अर्घ्य अर्पित करें, सूर्य नमस्कार करते समय निम्न मन्त्रों द्वारा सूर्य का आह्वान करें–

ॐ भूः ब्रह्महृदयाय नमः ।

ॐ भुवः ब्रह्मशिरसे ।

ॐ स्वाः रुद्र शिखायै ।

ॐ भूर्भुवः स्वः ज्वालामालिनी शिखयै।

ॐ महाः महेश्वराय कवचाय।

ॐ जनः शिवाय नेत्रेभ्यः।

ॐ तपः तापकाय अस्त्राय फट्।

इस प्रकार तीन बार अर्घ्य अर्पित करने के पश्चात् साधक अपने पूजा स्थान में जाय, तथा संक्षिप्त रूप में गुरु, गणपति पूजन तथा शिव पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात् अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि मैं अपने बच्चों (यहां बच्चों का नाम ले) के दुःस्वप्न नाश हेतु, आयु वृद्धि हेतु,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

दृश्यमान और अदृश्यमान राक्षसी बाधाओं के नाश हेतु, अपने गुरु,सूर्य, शिव और गणेश को साक्षी रखते हुए यह अग्नि विद्या सम्पन्न कर रहा हूं, सभी देव मेरी साधना में सहायक हों।

अब अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर मध्य में **'हिरण्मयेन पात्र'** एक चावल की ढेरी पर स्थापित करें, और इसके आगे मन्त्र सिद्ध **'अग्नि प्रोक्त यन्त्र'** रखें, इस पर चन्दन का तिलक लगाए और पूजन प्रारम्भ करें, एक दीपक बाईं ओर तथा एक दाईं ओर जला दें।

रक्त चन्दन से जिस बालक या बालकों हेतु यह साधना कर रहे हैं, उन्हें तिलक अवश्य लगा दें, अब अग्नि मंत्र जप करते हुए **'हिरण्मयेन पात्र'** पर चन्दन, सुपारी, दूध, अक्षत अर्पित करें

अग्नि मंत्र

।। ॐ नमो भगवते हिरण्मयं ज्योति रुपं आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।।

अब यज्ञ कार्य प्रारम्भ किया जाता है, इस हेतु श्रेष्ठ लकड़ी, उपले (गोबर के कण्डे), तिल, जौ, यज्ञ सामग्री पैकेट की व्यवस्था कर लें, अग्नि जला कर थोड़ी प्रचण्ड होने दें और उसके पश्चात तिल, जौ से मिश्रित यज्ञ सामग्री से आहुतियां प्रारम्भ की जाती है।

सर्व प्रथम अग्नि का बारह स्तोत्र का आह्वान किया जाता है, और निम्न मन्त्रों का जप करते हुए आहुति दें

ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा
ॐ धाताय नमः स्वाहा
ॐ भगाय नमः स्वाहा
ॐ पूषाय नमः स्वाहा
ॐ मित्राय नमः स्वाहा
ॐ वरुणाय नमः स्वाहा
ॐ अर्यमाय नमः स्वाहा
ॐ अंशु नमः स्वाहा
ॐ विवस्वान् नमः स्वाहा
ॐ त्वष्टाय नमः स्वाहा
ॐ सविताय नमः स्वाहा
ॐ विष्णु नमः स्वाहा

अब अग्नि के बारह स्वरूपों का यज्ञ करना है, इस हेतु पूजा सामग्री में लाये हुए 'बारह सविता चक्रों' का प्रयोग करें, ये बारह निम्न स्वरूप है

१.तपिनी	**२.तापिनी**
३.धूमा	**४.मरीचि**
५.ज्वालिनी	**६.रुचि**
७.सुषुम्ना	**८.भोगदा**
९.विश्वा	**१०.बोधिनी**
११.धारिणी	**१२.क्षमा।**

इन 'बारह सविता चक्रों' की आहुति देने के पश्चात अग्नि मंत्र बोलते हुए १०८ आहुति तिल जौ की और १०८ आहुति घी की देनी है, इस प्रकार कुछ २१६ आहुतियां सम्पन्न करनी है।

इसके पश्चात उपसंहार आहुति सम्पन्न की जाती है, जिसमें दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हुए कि जिस प्रकार अग्नि से अन्धकार का नाश होता है, उसी प्रकार हमारे सभी दोष का दुष्प्रभाव नष्ट करें, यह पूर्ण यज्ञ आपको समर्पित है, ऐसा बोल कर शेष बची सारी सामग्री यज्ञ कुण्ड में अर्पित कर देनी चाहिए।

जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाय तो गुरु आरती सम्पन्न करें, तथा सामने पात्र में रखा हुआ जल पूरे घर में छिड़कें, बच्चों पर जल का स्पर्श कराएं, तथा प्रसन्न मन से ब्राह्मण भोजन कराएं अथवा इच्छानुसार दान इत्यादि सम्पन्न करें।

यह अग्नि विद्या रहस्यात्मक विद्या है, और इसका प्रभाव चमत्कारिक रूप से स्पष्ट होता है, सिद्ध होने पर अग्नि देव साक्षात् साधक के भीतर समा कर उसे तेजोमय बना देते है, बालकों की अभय रक्षा करते है, और जिस प्रकार अग्नि में कोई भी वस्तु भस्म हो जाती है, उसी प्रकार रोग, शोक, दुःख भस्म हो कर समाप्त हो जाते हैं।

(पूजन सामग्री रु.३२०.००)

कार्तिक मास महालक्ष्मी कल्प है इन तीस दिनों में संपन्न कीजिए

इक्कीस महालक्ष्मी महाप्रयोग

गृहस्थ साधकों के बार-बार पत्र आते हैं कि हम लम्बी-चौड़ी साधनाएं संपन्न नहीं कर सकते हैं। लघु साधनाएं कर तीव्रता से फल प्राप्ति की इच्छा रखते हैं, इसीलिए वरदान स्वरूप सद्गुरुदेव ने ये साधनाएं दी हैं जो सरल हैं और प्रत्येक साधक संपन्न कर सकता है - लक्ष्मी साधना के ये अनूठे २१ प्रयोग-

१. दरिद्रता निवारक लक्ष्मी प्रयोग

किसी भी बुधवार रात्रि को आप स्नान करके ९ बजे के बाद इस साधना को सम्पन्न करने के लिए पूर्व दिशा की ओर बैठ जाएं अपने सामने अगरबत्ती व दीप जला लें फिर हाथ में जल ले करके संकल्प करें। मैं अपनी दरिद्रता निवारण के लिए यह लक्ष्मी संपन्न कर रहा हूं। जल भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद अपने सामने चौकी पर सफेद या पीला वस्त्र बिछाकर किसी प्लेट पर **महालक्ष्मी साफल्य** को रखें उसमें सिन्दूर लगाकर **ॐ महालक्ष्म्यै नमः** इस मंत्र का ५ मिनट तक जाप करके पूरे माल पर सिन्दूर लगा दें। उसके चारों तरफ चार तेल का दीपक लगाकर चारों दीपक में सिन्दूर का टीका लगाएं तथा एक-एक पुष्प की पंखुडियां दीपक के पास रखें तथा सफलता के लिए प्रार्थना करें उसके बाद प्लेट में स्थापित **महालक्ष्मी साफल्य** का धूप दीप से पूजन करें और निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जाप मुंगा माला से करें।

ॐ श्रीं क्लीं क्लीं श्रीं ॐ फट्।

यह एक दिन की साधना है इसके बाद सभी सामग्री को लाल कपड़े में बांध कर जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-२१०/-

2. सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग

बहुत प्रयास करने के बाद भी यदि घर में आई हुई लक्ष्मी स्थिर न रहती हो यदि कमाई से अधिक खर्च बढ़ता जाए तो इस स्थिति में इस साधना को संपन्न करना चाहिए। क्योंकि कई बार ऐसी दैवी आपद आती है कि उन बाधाओं को समाप्त करना आवश्यक होता है तभी सुख और शांति की स्थिति बनती है, पारिवारिक सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है,

इसलिए दीपावली के इस पावन कल्प में इस तरह के निम्न प्रयोग को संपन्न करें-

सोमवार प्रातः ७.३० के बाद स्नानादि से शुद्ध होकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं, धूप, दीप जला लें। उसके बाद सामने चौकी पर एक चावल की ढेरी बना कर एक **सिद्ध लक्ष्मी बीज** को स्थापित करें। इसके बाद **चार लक्ष्मी गुटिका** को उसके दाएं बाएं स्थापित करके कुंकुम अक्षत और धूप दीप से इनका पूजन करें फिर किसी भी माला से सुमेरू पर कुंकुम से पूजन करके अपने मस्तक पर उस कुंकुम को लगाएं। उस माला को घेरी बनाकर (गोल करके) सिद्ध बीज के सामने रख दें। और आंख बंद करके **श्रीं** बीज का ५ मिनट जप करें-और साधना में सफलता के लिए कामना करें, उसके बाद से निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र जाप करें-

ॐ श्रीं श्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं नमः।

साधना समाप्ति के बाद सभी सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें मंत्र जप में युक्त माला को रख लें, प्रति दिन एक माला ३ महीने तक जप करते रहें फिर माला को भी जल में प्रवाहित कर दें-

साधना सामग्री-१२०/-

3. ऋण बाधा निवारण के लिए

कई बार जीवन में ऐसा क्षण आता है व्यक्ति बहुत सावधान होता हुआ भी कभी-कभी कुछ निर्णय लेने में भूल कर जाता है या ऐसे व्यक्ति के हाथ में किसी व्यापारिक काम के लिए धन को सौंप देता है, जबकि धन डूब जाता है। उस स्थिति में आज तक किया हुआ सारा काम काज डगमगा जाता है। उस स्थिति से बचने के लिए इस प्रयोग को संपन्न करना चाहिए क्योंकि ऋण बाधा एक शाप जैसा है जिसे इस प्रयोग के माध्यम से इसका शमन किया जा सकता है।

रात्रि ९ बजे के बाद स्नादि से निवृत्त होकर उत्तर दिशा की ओर मुख करके पीला या सफेद आसन पर बैठ जाएं अपने सामने ११ तेल का दीपक जलालें यह दीपक साधनाकाल तक जलते रहना चाहिए। दीपक के सामने एक-एक लाल चावल की ढेरी बनाएं, उनमें एक-एक **हकीक पत्थर** रखें। उनका भी कुंकुम पुष्प धूप दीप से पूजन करें और उसके बाद सामने किसी प्लेट पर स्वास्तिक बनाकर **धनदा शंख** को स्थापित करें, पंचोपचार से पूजन करें, उसमें निम्न मंत्र को उच्चारण करते हुए चावल का एक-एक दाना शंख पर डालते जाएं।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं, श्रीं ॐ नमः।

इस मंत्र को कम से कम आधा घंटे तक जप करें यदि अधिक करना चाहें तो एक घंटे तक कर सकते हैं। साधना समाप्ति के बाद चावलों चिड़ियों को खिला दें या गौ को डाल दें। शेष सामग्री को वस्त्र में बांध कर अपने सिर पर तीन बार घुमाकर कहीं सुनसान जगह में दूर स्थान में दबा दें या जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-१५०/-

४. धनदा साधना

श्रीयंत्र को यंत्र राज कहा गया है जहां भी इसकी स्थापना

की जाती है वहां लक्ष्मी का स्वतः आगमन होता है यह लक्ष्मी का साक्षात स्वरूप माना गया है, यदि इसके महत्व को समझ पाए तो इसके आश्चर्यजनक लाभ को देखकर स्वयं दंग रह जाएगा। इसके प्रमाण के रूप में आज हमारे तिरुपति आदि देव स्थान इसी श्रीयंत्र के कारण अपार संपदा से युक्त है। लक्ष्मी नारायण के सभी मंदिरों में श्रीयंत्र की स्थापना हुई है। इसलिए उनकी अटूट लक्ष्मी की स्थिति से आप परिचित हैं। जिस दिन इसका पूजन जिस घर में होता है उसका सौभाग्य जगता ही है। इसलिए इस श्रीयंत्र की साधना से अपने को सौभाग्यशाली बनाएं और अपने आने वाली पीढी को धन - धान्य से परिपूर्ण करें-

रात्रि ९.४० के बाद इस साधना को संपन्न करें, स्नानादि से निवृत्त होकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर शुद्ध आसन पर खडे होकर १० मिनट तक गुरु मंत्र का जाप करें और एक माला गणपति मंत्र का जाप करें, उसके बाद बैठ कर अपने सामने चौकी पर वस्त्र बिछाकर पीले रंग के चावल से अष्टदल कमल बनाकर मध्य में श्रीयंत्र को स्थापित कर दें। कमल के आठ पंखुडियों में आठ सुपारी रखें, उनका कुंकुम आदि से पूजन करके **श्रीयंत्र** को मध्य में स्थापित करें और दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प लें अपने **नाम** और **गोत्र** बोलकर मैं तथा मेरी समस्त आने वाली पीढी ऐश्वर्य तथा धन-धान्य से पूर्ण हो ऐसा कहकर जल भूमि में छोड़ दें। पहले यंत्र पर जल का छींटा दें और मंत्र बोलें-

गंगे च यमुने चै व गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इसके बाद यंत्र पर कुंकुम का चार बार तिलक करें, प्रत्येक तिलक के बाद अपने मस्तक पर भी तिलक लगाएं।

ॐ श्रीयै नमः उच्चारण करते हुए १०८ बार चावल के दाने यंत्र पर चढावें- उसके बाद पुष्प आदि से यंत्र का पूजन करके निम्न मंत्र का एक घंटे तक मंत्र जाप करें, मंत्र जप के बाद श्रीयंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित करें, शेष सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

जप मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं महा लक्ष्मी आगच्छ सिद्धये नमः।

साधना सामग्री-२४०/-

५. दरिद्रता नाश हेतु प्रयोग

दरिद्रता जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप कहा जा सकता है। क्योंकि दरिद्रता के रहते व्यक्ति का समस्त व्यक्तित्व प्रभावहीन और खोया-खोया रहता है। साधन के अभाव में कोई भी मनोवांछित कार्य नहीं कर सकता। इसके कारण जीवन की उन्नति से पराभूत समाज में तिरस्कृत रहता हुआ अभाव की जिन्दगी से त्रस्त होकर आत्महत्या जैसे जघन्य, कृत्य को भी अपनाना चाहता है।

जब छोटे-छोटे अभावों से बच्चों को उदास देखता है, उनकी इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकता , तो निश्चित रूप से अपने जीवन को अभिशप्त समझता है। परिवार के भरण-पोषण के लिए रात दिन काम करता है फिर भी अपने अभाव को पूर्ण नहीं कर सकता क्योंकि उसका भाग्य साथ नहीं दे रहा होता है। इस स्थिति में पूर्व जन्म कृत कुछ ऐसा दोष होता है चाहे वह ग्रहदोष हो पितृदोष हो या अपने ही कर्म जनित कोई दोष होता है जिसके कारण यह दरिद्रता पीढी दर पीढी चली आती है, आपको उसे समाप्त करने के लिए दीपावली पर्व का महत्व को समझते हुए निम्न प्रयोग को संपन्न करना चाहिए।

रात्रि १० बज के ५ मिनट के बाद शुभ मुहूर्त में अपने सामने चौकी पर एक पानी भरा हुआ कलश रखें, उसमें कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनाकर उसमें पानी भर दें उसके बाद चावल, दुर्वा (दूब) एक रुपया उसमें डाल दें, उसके बाद एक छोटा सा प्लेट जो कलश के ऊपर चावल भरके रख दें, उसके ऊपर **स्वर्णाकर्षण गुटिका** को स्थापित कर दें फिर उसके सामने नीचे चौमुखा दीपक जलाकर दीप का कुंकुम अक्षत से पूजन करें और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति के लिए कामना करें, **स्वर्णाकर्षण गुटिका** का स्नान, तिलक, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें, उसके बाद मूंगा माला से पांच माला मंत्र जाप करें-

मंत्र

ॐ दुं दुं दारिद्रय दारिण्यै ॐ फट् स्वाहा।

साधना समाप्ति के बाद लाल कपडे में बांध करके गुटिका को अपने गल्ले में (पैसे वाली जगह में) रख दें। कलश के जल को अपने घर में छिड़ककर दें, शेष बचे हुए को तुलसी या किसी पीपल के पेड़ पर डाल दें, शेष सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें-

साधना सामग्री-१५०/-

६. वसुधा लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग रात को आठ बजे के बाद कभी भी कर सकते

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

है सामान्य रूप से यह प्रयोग आर्थिक उन्नति और भूमि गृह आदि कार्यों में सफलता के लिए संपन्न करना चाहिए। यदि साधक के पास मकान आदि नहीं है और वह चाहता है कि उसकी यह इच्छा पूरी हो उसके लिए इस साधना का आश्रय लेना चाहिए, क्योंकि यदि परिवार के लिए सिर छुपाने के लिए अपना घर न हो तो यह भी एक दुखदायी क्षण होता है, इसके लिए इस साधना को अवश्य संपन्न करें, आने वाले दिनों में इस साधना के माध्यम से आपको भूमि संबंधि लाभ होगा ही। अथवा कभी-कभी भूमि संबंधि कोई विवाद हो तो भी उसे समाप्त करने के लिए इस प्रयोग को संपन्न करना चाहिए।

अपने सामने चौकी पर सफेद वस्त्र बिछाकर उसमें चावलों से ९ चौखाने बनाएं, प्रत्येक चौखाने में लाल चावलों की ढेरी बनाकर सभी ढेरियों में एक एक गोमती चक्र स्थापित करें- उसके बाद निम्न मंत्र बोलते हुए क्रमशः उनको तिलक, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें-

मंत्र

ॐ सूर्याय नमः **ॐ सोमाय नमः**

ॐ भौमाय नमः **ॐ बुधाय नमः**

ॐ बृहस्पतये नमः **ॐ शुक्राय नमः**

ॐ शनैश्चराय नमः **ॐ राहवे नमः**

ॐ केतवे नमः

इसके बाद निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र जप करें-

ॐ ग्लौं श्रीं मह्यं वसुधां प्रदापय श्रीं ग्लौं ॐ।

साधना सामग्री-१९०/-

७. व्यापार उन्नति के लिए

यदि आप व्यापार करना चाहते हैं किंतु व्यापार में सफलता नहीं मिल रही है अनेक बार बाधाएं आ रही हैं या शुरू करने के बाद घाटे में काम बंद करना पड़ता हो, उस समय इस प्रयोग को अवश्य संपन्न करना चाहिए। क्योंकि आज जो व्यापार में मंदे की स्थिति है और अधिक कम्पिटिशन है, उस स्थिति में प्रयत्न के साथ-साथ दैवी साधना आवश्य करना चाहिए जिससे देव कृपा से बाधाओं का शमन हो और सफलता हाथ लगे। साधक को चाहिए इस साधना को संपन्न करने से पूर्व स्नानादि करके सफेद आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठें, सामने दीपक तथा अगरबत्ती जला लें, किसी प्लेट या थाली पर कुंकुम से स्वास्तिक बनाकर **कनक धारा यंत्र** को स्थापित करें उसमें स्नान के लिए गंगा जल का छींटा दें, फिर पोंछ दें, कुंकुम से चार कोने में तिलक करें, मध्य में भी एक तिलक करें और अपने मस्तक पर उसी तिलक को लगा लगें। उसके बाद धूप दीप और अक्षत से पूजन करके कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जाप करें-

मंत्र जप के बाद यंत्र को अपने घर में या फैक्ट्री या दुकान में स्थापित करके प्रति दिन धूप, दीप दिखावें, शेष सामग्री को जल प्रवाह करदें।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं महालक्ष्मी आगच्छ-आगच्छ कनकधारायै नमः

इस मंत्र का नियमित रूप से एक माला जप किया जाए तो उचित है क्योंकि कनक धारा साधना लक्ष्मी की श्रेष्ठ साधना मानी गई है।

साधना सामग्री-२४०/-

८. अटूट धन लाभ के लिए

यदि आपकी प्रतिमाह की कमाई के अतिरिक्त भी अधिक

खर्च होता है, आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती हो तो उस स्थिति में समुचित धन लाभ के लिए आप प्रयास करते हैं फिर भी अगर विषम स्थिति बनी रहती है तो उसको समाप्त करने के लिए परिश्रम के साथ देव आराधना भी आवश्यक है क्योंकि कई जन्म के दोषों के कारण लक्ष्मी का आगमन अवरुद्ध हो जाता है तथा आवश्यकता बढ़ती है, परिवार में विषमता बनी रहती है घर में कलह और विवाद को समाप्त करने के लिए निम्न प्रयोग का आश्रय लें, दीपावली का यह शुभ मुहूर्त पर निम्न प्रयोग आपके लिए हितकारी होगा।

रात्रि १०.३५ के बाद ५ तेल का दीपक जलाकर उस तेल में इत्र मिला लें तथा दीपक के सामने एक-एक गुलाब का फूल रख दें, उसके बाद सामने पीले रंग से रंगे हुए चावलों के ढेरी पर विश्वामित्र संहिता के विशेष मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित सहस्राक्षी यंत्र को स्थापित करें तथा पंचोपचार से सामान्य पूजन करने के बाद निम्न मंत्र का **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जाप करें-

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले प्रसीद मम गृहे आगच्छ ॐ महालक्ष्मी नमः

इस साधना के बाद भी इस मंत्र को प्रतिदिन एक माला यदि चाहें तो तीन महीने तक जप कर सकते हैं उसके बाद यंत्र और माला को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-१५०/-

९. दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग

लक्ष्मी लाभ के लिए दक्षिणावर्ती शंख का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि शंख लक्ष्मी का सहोदर है। दोनों की उत्पत्ति समुद्र से हुई है। इस प्रयोग से अवश्य ही लाभ की स्थिति बनती है। रात्रि को स्नानादि से निवृत्त होकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके सफेद आसन पर या पीले आसन पर बैठ जाएं, शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र पहनें, सामने चौकी पर सफेद या लाल वस्त्र बिछाकर अपनी दायीं ओर घी का दीपक जलालें तथा बाईं ओर तेल का दीपक जलाएं, उसके बाद दोनों दीपकों के बीच में एक थाली स्थापित करें, उसमें स्वस्तिक चिन्ह बनाकर **दक्षिणावर्ती शंख** को स्थापित करें, शंख को चावलों से भर दें उसके ऊपर एक सुपारी मौली बांध कर रख दें फिर सामान्य पूजन करके निम्न स्तोत्र का २१ बार पाठ करें-

महामाया महालक्ष्मीर्महावाणी महेश्वरी।
महादेवी महारात्रिर्म-हिषासुरमर्दिनी॥
कालरात्रिः कुहूः पूर्णा नन्दाऽद्या भद्रिका निशा।
जया रिक्ता महाशक्तिर्देवमाता कृशोदरी॥
शचीन्द्राणी शकनुता शंकरप्रियवल्लभा।
महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही॥
वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षस्थलस्थिता।
विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा॥
शूलिनी चक्रिणी मां च पाशिनी शंखधारिणी।
गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया॥
पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णु प्रियंकरी।
गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता॥
गया गंगा च यमुना गोमती गरुडासना।
गण्डकी सरयू तापी रेवा चैव पयस्विनी॥
नर्मदा चैव कावेरी केदार स्थलवासिनी।
किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता॥
ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी देवपूजिता।
कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी॥
श्रुतिस्त्या श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा।
इन्दिरा सिन्धुतनया मातंगी लोकमातृका॥
त्रिलोकजननी तंत्रा तंत्रमंत्रस्वरूपिणी।
तरुणी च तमोहन्त्री मंगला मंगलायना॥
मधुकैटभमथिनी शुम्भासुरविनाशिनी।
निशुम्भादिहरा माता हरिशंकरपूजिता॥
सर्वदेवमयी सर्वा शरणागतपालिनी।
शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी॥
गन्धर्वगानरसिका गीता गोविन्दवल्लभा।
त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपा तारुण्यपूरिता॥
चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता।
चन्द्रा शशांकभगिनी गीतवाद्यपरायणा॥
सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टि संहारकारिणी॥

साधना सामग्री-३००/-

१०. लक्ष्मी दोष निवारण हेतु

कभी-कभी पितृ दोष के कारण घर में धनाभाव रहता है, बहुत कोशिश करने के बाद भी गृहस्थ सुख प्राप्त नहीं होता क्योंकि घर में सुख, शान्ति के लिए अपने पूर्वजों का आशीर्वाद होना आवश्यक होता है। कभी-कभी कुछ ऐसी आत्माएं होती हैं उनकी अनुकूल परिचर्या न होने से वे अतृप्त और रुष्ट हो जाते हैं, इसके कारण घर में अशान्ति का वातावरण निरंतर बना रहता है, व्यापार में अवरोध आ जाता है, चलता हुआ

कारोबार बंद होने लगता है, आमदनी कम और खर्च ज्यादा बढ़ जाता है, परिवार के लोगों का दैनिक खर्च भी मुश्किल से चलता है, उस स्थिति में पूर्वजों का आशीर्वाद प्राप्ति के लिए तथा पितृदोष के निवारण के लिए कार्तिक मास में किसी भी रविवार की रात्रि को इस प्रयोग को अवश्य करें।

रात्रि १० बजे स्नानादि से शुद्ध होकर आसन पर सफेद वस्त्र पहनकर बैठें इसके बाद चौकी पर गुरु चित्र स्थापित करके गुरु पूजन करें, एक माला गुरु मंत्र जपें, गणपति का एक माला जप करें, उसके बाद फिर अपनी अन्जली में खुले पुष्प लेकर अपने सभी पूर्वजों का ध्यान करते हुए उनका आशिर्वाद प्राप्त करने के लिए तथा भूतकालीन सभी दोषों के निवारण के लिए प्रार्थना करें। उसके बाद पुष्प को चौकी के ऊपर ढेरी बनाकर रख लें, उसमें **तांत्रोक्त नारियल** को स्थापित कर दें। उसमें कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर एक गुलाब की पंखुड़ियां चढ़ा दें, फूल के ढेरी के चारों तरफ लाल चावलों से चार ढेरी बनाकर उसमें **चार हकीक पत्थर** रख दें, उनमें कुंकुम अक्षत से पूजन करके समस्त दोषों के निवारण के लिए प्रार्थना करें, इसके बाद सामने चौमुखा तेल का दीपक जला लें, फिर निम्न मंत्र का **पितृश्वर माला** से ११ माला मंत्र जाप करें-

ॐ ऐं पितृभ्यो दोष नाशाय क्लीं ॐ फट्।

साधना समाप्ति के बाद माला सहित सभी सामग्रियों को चौकी के वस्त्र में बांध कर कहीं शून्य स्थान में रख दें, यह पितृ दोष शमन के साथ लक्ष्मी लाभ होने लग जाएगा, घर में होने वाला नित्य प्रति का होने वाला अभाव समाप्त हो जाएगा।

साधना सामग्री-२३०/-

११. जमीन गडे हुए धन प्राप्ति हेतु

हमारे पूर्वजों के पिछले जीवन पर जब हम दृष्टि पात करते हैं तो आज के जीवन से मेल नहीं खाता, क्योंकि उनके जीवन में सुख, शांति तो थी लेकिन कई तरह के बाधाएं भी थीं, आज की तरह अपने धन को सुरक्षित करने के लिए विशेष साधन नहीं थे, इसलिए अपने सोने, चान्दी आदि बहुमूल्य धन को जमीन में गाड़ देते थे। कई खजाने और धन आज भी जमीन के नीचे दबे हुए पाए जाते हैं इसी लिए पृथ्वी को रत्न गर्भा कहते हैं, जो कि अपने अन्दर अनेक प्रकार के धातुओं को संजोए हैं, उस धन को प्राप्त करने के लिए दीपावली कल्प में सिद्धयोग, रविपुष्य•तथा अमृत योग के शुभ मुहूर्त पर निम्न उपाय करना चाहिए।

अपने सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें, उसमें चावलों से अष्ट दल कमल बनाकर पानी से भरा हुआ एक जल पात्र रख दें, उसमें मौली बांध दें, उसके ऊपर एक थाली रखें उसमें चावल भर दें, तथा **भूगर्भ यंत्र** को चावलों पर स्थापित कर दें। स्नान, तिलक, धूप दीप से सामान्य पूजन करके निम्न मंत्र का **सिद्धि चैतन्य माला** से ११ माला मंत्र जाप आसन पर खड़े होकर करें-

ॐ ह्रां शतपत्रिके ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा।

साधना समाप्ति के बाद सभी सामग्री को घर से बाहर दक्षिण दिशा में जमीन खोद कर गाड़ दें, इस साधना के बाद स्वप्न में आपको निर्देश प्राप्त होगा कि भूमि के नीचे कितना धन है, कहां नीचे है, तथा किस तरह यह प्राप्त किया जा

सकता है।

साधना सामग्री-३००/-

१२. पार्टनरशिप में खोए हुए धन प्राप्ति हेतु

कई बार ऐसा देखा गया है कि जब आप किसी व्यक्ति विशेष से मिलकर व्यापार शुरू करते हैं, आप और वह दूसरा व्यक्ति अपनी कमाई का बहुत सा हिस्सा इसमें लगाते हैं, इसमें एक दूसरे का विश्वास होता ही है, तभी यह कार्य सुचारू रूप से चलता रहता है, यदि आप का पार्टनर अच्छा नहीं निकलता, पैसे के लालच में धीरे-धीरे आपको धोखा देने लगता है, आपके दोस्ती में दरार आने लगता है, और आपके धन को हड़पने का कोशिश करता है, कई बार वह आपको धोखा देकर आपकी साख को भी हानी पहुंचा देता है। उस स्थिति में आप विचित्र स्थिति में फंस जाते हैं, तमाम व्यापार अस्तव्यस्त हो जाता है क्योंकि धन के बगैर व्यापार संभव नहीं, ऐसी दशा में गये हुए व्यक्ति के पास फंसे हुए रुपयों को निकालने के लिए यह साधना अनुकूल होता है-

शनिवार रात्रि ११ बजे अपने सामने चौकी पर वस्त्र बिछा दें, पांच तेल का दीपक लाईन से जलाकर उसके सामने पांच लाल चावल की ढेरी बनाएं, उसमें **पांच गोमती चक्र** स्थापित करें, उसके नीचे पांच सफेद चावल की ढेरी बनाकर **पांच हकीक पत्थर** स्थापित करें। उसके नीचे काले चावलों का पांच ढेरी बनाकर पांच **श्रीफल** स्थापित करें। इन सभी पर कुंकुम का तिलक करें, अक्षत चढ़ाएं फिर पुष्प की पंखुडी चढ़ाकर निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र जाप करें-

॥ॐ ह्रीं चिर लक्ष्मी ऐं आगच्छ स्वाहा॥

साधना समाप्ति के बाद सब सामग्री को लाल कपड़े में बांध कर अपने घर में रख दें, तीन महीने के भीतर-भीतर आपको अपने कार्य में अनुकूलता प्राप्त होती है और व्यापार पुनः स्थापित हो जाता है तथा आप किसी से धोखा नहीं खा सकते।

साधना सामग्री-१५०/-

१३. आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु

यह सौभाग्य कहा जाता है कि कभी-कभी व्यक्ति को असंभावित या अतिरिक्त धन लाभ हो जाता है और आपके व्यापार, नौकरी या और भी जो कमाई के साधन हैं, इसके अतिरिक्त कभी-कभी ऐसा लाभ किसी के द्वारा प्राप्त हो जाता है या कहीं मिल जाता है अथवा लाटरी आदि से प्राप्त होता है वह आकस्मिक धन लाभ कहा जाता है, कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि कालान्तर में किसी को आपने रुपये दिये हैं और वह समय पर वापस नहीं लौटाए, उस धन को आप प्राप्ति के लिए सोचते नहीं हैं, इसलिए कि वह दे नहीं सकता, यदि किसी कारणवश वह धन मिल जाए यह भी आकस्मिक धन लाभ कहा जा सकता है। आज आकस्मिक धन लाभ के लिए कई-कई साधन या उपाय हैं, उसको प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए उसके लिए साधनात्मक प्रयास भी करना चाहिए।

दीपावली के पश्चात पड़ने वाले सोमवार के दिन रात्रि को ९.३५ पर इस साधना को आरंभ करें उत्तर की ओर मुख करके बैठें, धूप, दीप जला लें, सामने चौकी पर पांच छोटी-छोटी कटोरियां जल भर कर रख दें, प्रत्येक कटोरियों में पांच-पांच सुपारियां डाल दें, कुंकुम डालें, अक्षत भी डाल दें, एक-एक सिक्के डाल दें, हल्दी के टुकड़े डाल दें। उसके बाद नीचे चावल की दो ढेरी बनाकर दोनों ढेरी के ऊपर दो **तांत्रोक्त नारियल** शुभ और लाभ के रूप में स्थापित करें- दोनों पूजन के लिए कुंकुम लगा दें, उसके बाद पुष्प के माला दोनों को पहना दें। फिर **दिव्य चैतन्य माला** से निम्न मंत्र का २१ माला मंत्र जाप करें-

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं देहि देहि स्वाहा।

मंत्र जाप के बाद सब सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें केवल माला को रखें एक माला प्रति दिन ४१ दिन तक मंत्र जाप करें बाद में उस माला को भी जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-२१०/-

१४. अष्ट लक्ष्मी प्रयोग

लक्ष्मी के १०८ स्वरूप हैं उनमें रुपये, धन-धान्य, भवन, वाहन, पत्नी, पुत्र, आयु और आरोग्य ये मुख्य लक्ष्मी के स्वरूप हैं जो कि हर साधारण व्यक्ति को प्राप्त होनी चाहिए। इनमें से किसी के न होने पर जीवन में कठिनाई होती है। परिवार कष्ट से जीवन व्यतीत करता है, अनेक प्रयास करने के बाद भी इन को प्राप्त करने में यदि बाधा हो तो देवी कृपा प्राप्त करने के लिए इस साधना को शुभ मुहूर्त में अवश्य करना चाहिए। यदि आपके पास धन-धान्य है आयु और आरोग्य नहीं है तब भी धन व्यर्थ हो जाएगा। पत्नी, पुत्र के

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अभाव में जीवन का वास्तविक सुख ही नहीं पाएगा इसलिए इस अष्ट लक्ष्मी का जीवन में विशेष महत्व है। अपने सामने चौकी बिछाकर उसपर एक प्लेट रखें, उसमें कुंकुम से स्वास्तिक बनाकर **अष्ट लक्ष्मी** यंत्र को स्थापित करें, धूप,दीप जला लें, गुरु और गणेश का मानसिक पूजन करके एक माला गुरु **मंत्र माला** जाप करें उसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर नाम और गोत्र का उच्चारण करते हुए अष्ट लक्ष्मी प्राप्ति के लिए संकल्प करके जल भूमि पर छोड़ दें। पंच पात्र के जल से यंत्र को स्नान करावें और निम्न मंत्र का मंत्र उच्चारण करें-

ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः गंगाजले न स्नापियामि।

ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः यमुनाजले न स्नापियामि।

ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः गोदावरी जलेनस्वयामि॥

इसके बाद यंत्र के ऊपर चारों दिशाओं में चार तिलक करें, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करके कमल गट्टे के माला से निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जाप करें-

ॐ ह्रीं अष्टलक्ष्मी प्रसीद-प्रसीद श्रीं ॐ नमः।

साधना समाप्ति के बाद सभी सामग्री को लाल वस्त्र में बांध कर पूजा स्थान में रख दें ११ दिन के बाद सभी सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें तब तक उस बंधे हुए यंत्र और माला को धूप, दीप दिखाते रहें।

साधना सामग्री-२७०/-

१५. अन्नपूर्णा प्रयोग

भगवति अन्नपूर्णा की कृपा प्राप्ति सौभाग्य है। उस स्थिति में उस व्यक्ति का घर सदैव धन-धान्य से पूर्ण होता है, खाने-पीने का किसी प्रकार अभाव नहीं रहता जो भी अतिथि साधु, संत घर में आता है, वह तृप्त होकर ही जाता है। घर में अन्न का अभाव एक तरह का शाप दोष होता है, यदि कभी अभाव की स्थिति आए तो आपके प्रयत्न से यदि दुख समाप्त नहीं हो पा रहा है तो देवी कृपा का आश्रय लेना चाहिए। और उसके लिए भगवति अन्नपूर्णा का साधना अवश्य करना चाहिए क्योंकि साधना एक ऐसी ईश्वरीय देन है जिसके माध्यम से जीवन के सभी अभाव को समाप्त करके सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है। परिवार को सुख और शांति से परिपूर्ण रखने के लिए जीवन को सुखद बनाने के लिए अवश्य अन्नपूर्णा साधना करें।

प्रातः सूर्योदय के पश्चात स्नानादि से शुद्ध होकर चौकी के ऊपर किसी प्लेट पर स्वस्तिक बनाकर उसमें **अन्नपूर्णा यंत्र** को स्थापित कर दें जो प्राण प्रतिष्ठित और चैतन्य हो, उसके बाद पंचोपचार से पूजन करके निम्न स्तोत्र का १०८ बार पाठ करें-

ॐ नमः कल्याणदे देवि नमः शंकरवल्लभे।
नमो मुक्तिप्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥
नमो मायागृहीतांगि नमः शंकरवल्लभे।
माहेश्वरि नमस्तुभ्यमन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥
अन्नपूर्णे हव्यवाहपत्नीरूपे हरप्रिये।
कलाकाष्ठस्वरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥
उद्यद्भानुसहस्राभे नवनत्रयभूषिते।
चन्द्रचूडे महादेवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥
विचित्रवसने देवि स्वन्नदानरतेऽनघे।
शिवनृत्यकृतामोदे ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥
षट्कोणपद्ममध्यस्थे षडंगयुवतीमये।
ब्रह्माण्यादिस्वरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥
देवि चन्द्रकलापीठे सर्वसाम्राज्यदायिनि।
सर्वानन्दकरे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥
साधकार्भीष्टदे देवि भवदुः ख विनाशिनि।
कुचभारनते देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥
इन्द्राद्यर्चित पादाब्जे रुद्रादिरूपधारिणि।
सर्वसम्पत्प्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥

साधना समाप्ति के बाद यंत्र को पूजा स्थान में रहने दें। उसका धूप दीप से प्रतिदिन पूजन करते रहें, इससे निरंतर घर में धन समृद्धि में वृद्धि होती रहेगी।

साधना सामग्री-१८०/-

१६. अपार संपदा प्राप्ति हेतु

इस साधना को दीपावली के दिन ही शुभ मुहूर्त में संपन्न किया जाता है, इसके लिए रात्रि १० बजे के बाद स्नानादि से शुद्ध होकर पवित्र वस्त्र पहनकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर शुद्ध आसन पर बैठें, सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें, उसके बाद किसी स्वर्ण पात्र, रजत पात्र या ताम्र पात्र में स्वस्तिक बनाकर **पारद श्रीयंत्र** को स्थापित करें।

यह **पारद श्रीयंत्र** भगवती महालक्ष्मी का साकार स्वरूप माना जाता है अतः इसकी पूजा स्वयं लक्ष्मी जी की ही पूजा मानी जाती है। आज पूजा में लाल रंग का वस्त्र जो बिना सिले हुए ही पहनना चाहिए। उसके बाद दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

दिव्यां परां सुधवल चक्रयातां, मूलादि बिन्दु परिपूर्ण कलात्म रूपां।
स्थित्वामिमां शरधनु सृणि पाशहस्तां, श्रीचक्रां परिणतां सततं नमामि॥

श्रीयंत्र की अधिष्ठात्री देवी महात्रिपुर सुन्दरी देवी मानी गई है, यंत्र को प्रणाम करने के बाद निम्न श्लोक से भगवती का ध्यान करें-

बालार्कयुत तेजसं त्रिनियनां, रक्ताम्बरोल्लासिनीं।
नानालंकृति राजमान वपुषं, बालेन्दु युत शेखराम्॥
हस्तैरिक्षु धनु सृणिं सुरशरं, पाशं मुदा विभ्रतीम्।
श्रीचक्रस्थित सुन्दरीं, त्रिजगतामाधार भूतां भजे॥

इसके बाद यंत्र को पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद और चीनी) तथा गंगा जल से स्नान कराएं। तिलक करें, उसमें अक्षत, लाल पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य स्थापित करें। अपनी दाहिनी ओर कलश स्थापन करें, उसमें जल भर दें, **ॐ महालक्ष्म्यै नमः** उच्चारण करके उसपर तिलक करें, मौली बांधें, जल में कुंकुम, अक्षत, सुपारी, दुर्वा डालें। कलश के ऊपर एक प्लेट चावल भर कर रख दें, उस पर घी का दीपक जलाएं। पूरा साधना काल तक दीपक जलते रहने चाहिए। इस मंत्र को जपने के लिए **मूंगा माला** का प्रयोग करना चाहिए।

मंत्र

ह्रीं क ए ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इस मंत्र में प्रत्येक अक्षर बीज है, प्रत्येक बीज स्वयं में संपूर्ण मंत्र और देवता का स्वरूप होता है, इस प्रकार वह अपने में बहुत व्यापक अर्थ तथा प्रभाव समाहित किये रहता है, अतः जप के समय मंत्र का उच्चारण शुद्ध तथा धीरे स्वर में करना चाहिए। जप की समाप्ति पर फिर से यंत्र को प्रणाम करके प्रसाद वितरण के साथ साधना को पूर्ण करना चाहिए। इस मंत्र का केवल एक **माला मंत्र** जाप करें।

अनुष्ठान समाप्ति के बाद यंत्र स्थापित कर दें, यदि संभव हो तो एक माला मंत्र जाप करते रहें, अगर संभव न हो तो केवल माला को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-३००/-

१७. रोजगार प्राप्ति हेतु

यदि आप रोजी-रोटी कमाने के लिए बहुत कोशिश कर रहे हैं फिर भी कहीं अनुकूल रोजगार की प्राप्ति नहीं हो रही है, और इसके कारण आप में कुण्ठा उत्पन्न हो रही है, इसके कारण घर में तनाव या अभाव की स्थिति तथा कलह बना हुआ है और कार्य के लिए अनेक उपाय करने पर भी कहीं अगर काम न मिल रहा हो क्योंकि अपनी शिक्षा-दीक्षा के अनुसार आपको अनुकूलता प्राप्त होना चाहिए। आज के इस दौर में जीवन की आवश्यकता बढ़ गई है, उस स्थिति में यदि काम न मिले, आर्थिक उन्नति न हो तो विषम स्थिति पैदा हो जाती है, इसलिए आपकी बुद्धिमानी यही है कि दीपावली की शुभ मुहूर्त में इस साधना को संपन्न करें क्योंकि दीपावली का अवसर ही ऐसा है कोई भी अनुकूल परिणाम प्राप्त होता ही है।

अपने सामने रात ९ बजे के बाद चौकी पर सफेद वस्त्र बिछा लें, उसके बाद चार चावल की ढेरी बनाएं, एक लाल रंग की, एक पीले रंग की, एक हरे रंग, एक सफेद रंग की।

उसके बीच में **मनोकामना पूर्ति यंत्र** को स्थापित करें, उसका पंचोपचार से पूजन करें तथा धूप, दीप दिखा करके चार रंग के अलग-अलग पुष्प **ॐ महालक्ष्मयै नमः** करके यंत्र पर चढ़ाएं। बाएं हाथ में चावल लेकर **ॐ श्रीं ॐ** इस मंत्र को बोलते हुए २१ बार यंत्र पर चढ़ाएं। उसके बाद दोनों हाथ जोड़ करके भगवती महालक्ष्मी की प्रार्थना करें-

कान्त्या कांचन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोक्षित हिरण्मयामृत घटैरासिच्यमानां श्रियम्॥
विभ्राणावरमब्ज युग्ममभयं हस्त किरीटोज्जवलाम्।
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

इसके बाद यंत्र को प्रणाम करके यदि आप के पास कोई माला है तो निम्न मंत्र का ११ माला मंत्र जाप करें। यदि माला नहीं है तो एक घंटे तक बिना माला के भी इस मंत्र को जप सकते हैं।

जप मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

जप समाप्ति के बाद यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर लें जब तक कोई काम न मिल तब तक प्रतिदिन मंत्र जाप करते रहें, उसके बाद यंत्र को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री-१५०/-

१८. लक्ष्मी गणेश प्रयोग

इस प्रयोग की विशेषता यह है कि घर में लक्ष्मी आगमन के साथ मंगलमय वातावरण जरूर बनता है, जिससे पूरा घर सुख, शांति पूर्ण हो। कई घर में ऐसा है कि अपार सम्पदा होने पर भी वातावरण अशांत और दूषित रहता है। धन भी जीवन में हो उस धन से उचित कार्य हो यह सौभाग्य की बात होती है अन्यथा धन मिलने पर व्यक्ति की बुद्धि, चिन्तन, रहन-सहन तथा खान-पान अव्यवस्थित हो जाता है, उसके लिए गणपति के साथ लक्ष्मी की आराधना भी होते रहना चाहिए। इस साधना को दीपावली के शुभ कल्प में संपन्न करें, इसके बाद आप पाएंगे, लक्ष्मी और गणपति का संयुक्त साधना, आपके लिए कितना हितकारी और पुण्यदायक है।

बुधवार प्रातः ९ बजे के पश्चात पुनः स्नानादि से शुद्ध होकर श्वेत वस्त्र पहनें, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर पवित्र आसन पर बैठें, अपने सामने किसी थाली पर, पीले रंग से रंगे हुए चावलों से दो ढेरी बनाएं, उसके बाद पहले ढेरी पर गणपति विग्रह हो तो स्थापित कर दें, यदि गणपति विग्रह नहीं हैं तो एक सुपारी में मौली बांधकर उसमें गणपति के रूप में स्थापित कर दें, दूसरी ढेरी में **पारद महालक्ष्मी** स्थापित कर दें। उसके बाद शुद्ध जल से स्नान कराएं और निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

गंगे च यमुने चै व गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरु॥

कुंकुम, अक्षत, पुष्प तथा धूप दीप से पूजन करें। **खीर का नैवेद्य** लगाकर दोनों हाथ जोड़ कर इस मंत्र का उच्चारण करें -

जयंतु जयतु देवी देव संघात पूजा।
जयतु जयतुभद्रा भीमरूपा भवानी।
जयतु जयतु नित्या निर्मल ज्ञानवेद्या।
जयतु जयतु संवित् सच्चिदानन्द रूपा।

पूजन के बाद निम्न मंत्र का एक घंटे तक श्रद्धा पूर्वक मंत्र जाप करें और भगवति महालक्ष्मी से प्रार्थना करें, हे भगवति आप मेरे घर में आएं, आप का स्वागत करें-

मंत्र

ॐ ग्लौं श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ॐ नमः

बाद में सभी सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें, विग्रह तथा पारद महालक्ष्मी को पूजा स्थान में स्थापित कर दें, यदि संभव हो तो एक माला अनुकूलता के लिए जप करते रहें।

साधना सामग्री-२७०/-

१९. आकस्मिक धन लाभ के लिए

धन की प्राप्ति जीवन की मूलभूत आवश्यकता है, हर व्यक्ति जब से होश संभालता है, तब से लेकर जीवन के आखिरी दम तक लक्ष्मी आराधना के लिए सतत प्रयास करता है। यह आवश्यक नहीं है कि इस प्रयास में उसको सफलता मिले, कई बार बहुत परिश्रम करने के बाद भी लक्ष्मी उस घर से रूठी रहती है, दरिद्रता मिटती नहीं है, निरंतर, अभाव बना रहता है, बच्चों के लिए सामान्य जीवन की आवश्यकता भी पूरी नहीं होती, उन्हें अच्छी शिक्षा नहीं दे सकता, अच्छा आवास नहीं दे सकता, सुन्दर वस्त्र देने में भी कठिनाई होती है।

इसके कारण उसका स्वास्थ्य, उसका वायु, उसका चिन्तन, तथा उसकी बुद्धि, शरीर सब क्षीण हो जाता है। इस कष्टप्रद वातावरण को समाप्त करने के लिए दीपावली के शुभ कल्प में इस अनुष्ठान को संपन्न करें।

शुक्रवार रात्रि १२.१० पर स्नानादि से निवृत्त होकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके आसन पर बैठे, सामने गुरुचित्र स्थापित करके सामान्य गुरु पूजन करें, और दो **माला गुरु मंत्र** जप करें और हाथ जोड़कर मानसिक प्रार्थना करें। हे गुरुदेव मेरे पूर्ण जन्म दोष के कारण, या इस जन्म के दोष के कारण आज जो भी मेरी दुखद स्थिति है उससे समाप्त करें। क्योंकि आप करुणालय हैं, दयालु हैं, निश्चित रूप से मेरी विनम्र प्रार्थना को सुनेंगे, उसके बाद अपने सामने किसी प्लेट पर **कमल गट्टे** की माला को स्थापित करें, उसमें जल का छींटा दें, कुंकुम का पांच तिलक करें, अक्षत, पुष्प चढ़ाकर

निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

माले-माले महामाले सर्वशक्ति समन्विते।
चतुर्वर्गस्त्वयि नियस्ता तस्मान्मे सिद्धदा भव।

उसके बाद निम्न मंत्र का आधा घंटे तक जप करें-

जप मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ नमः

मंत्र के बाद गेहूं और चने को मिलाकर हवन करें, अपने सामने किसी हवन कुण्ड में आम की लकडी जलालें, फिर घी से ११ बार गुरु मंत्र का हवन, ५ बार **ॐ गंगणपतये नमः** इसका हवन करें, उसके बाद गेहूं और चावल को मिलालें उसमें घी भी मिला लें, और निम्न मंत्र का तीन माला आहुति दें-

ॐ ह्रीं आपोद्धारिण्यै ह्रीं ॐ फट्।

साधना समाप्ति के बाद माला को पूजा स्थान में रखें प्रति दिन महालक्ष्मी का एक माला मंत्र जाप करें, शेष सामग्री को जल में विसर्जित कर दें, उसके तीन महीने बाद कमल गट्टे माला को भी प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-१५०/-

१०. व्यापार वृद्धि पद्मावती प्रयोग

भगवती पद्मावती महालक्ष्मी की दिव्यतम स्वरूप है जिसकी आराधना से निश्चिम रूप से अटूट सम्पदा प्राप्त होती है।

आप जानते हैं कि हमारे जैन समाज की आराध्य पद्मावती देवी है, इसी देवी की आराधना से संपूर्ण जैन समाज धन-धान्य से परिपूर्ण और सुखी समझे जाते हैं, निश्चित रूपसे कहना होगा कि भगवती पद्मावती अपने आराधकों को ऐश्वर्य प्रदान करती है, व्यापार में वृद्धि, घर में सुख शान्ति तथा सभी प्रकार की लाभ की स्थिति बनती है।

अपने सामने चौकी स्थापित करें उसमें सफेद कपड़े बिछाकर चावलों की ढेरी बनाएं और **पद्मावती यंत्र** को उसमें स्थापित करें, स्नान कराएं, चारों दिशाओं में चार तिलक करें, जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतीक है अपने मस्तक पर भी तिलक करें। इसके बाद अक्षत, पुष्प, धूप दीप से पूजन करें। और दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें अपना नाम, गोत्र तथा मनोकामना बोलकर जल भूमि में छोड़ दें।

यंत्र के नीचे चार तेल का दीपक चला दें, उसके नीचे एक घी का दीपक जला दें फिर मूंगा माला से एक माला निम्न मंत्र का जाप करें। यह साधना किसी भी शनिवार अर्ध रात्रि में ही करें। यह एक दिन की साधना आपको अनुकूलता प्रदान करेगी। साधना समाप्ति के बाद यंत्र को २१ दिन तक घर में ही स्थापित रखें, यदि चाहें तो एक माला मंत्र जाप कर सकते हैं अन्यथा धूप दीप दिखाते रहें।

मंत्र

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन
मोहिनी सर्वकार्यकरिणी मम विकट
संकट संहारिणी मम महा मनोरथ
पूरणी मम सर्व चिन्ता चूरणी
ॐ पद्मावती नमः स्वाहा॥

साधना सामग्री-२१०/-

११. धन लाभ में विघ्न शमन होतु

कई बार जीवन में ऐसी स्थिति आती है कि आपके बिजनेस व्यापार में या नौकरी पेशा में पदोन्नति होते होते रुक जाए, व्यापार में लाभ होते हुए भी विघ्न पड़ जाए, रुकावटें आ जाएं, तो ऐसी स्थिति में विघ्न दूर करने के लिए इस उपाय को करें-

दीपावली के दिन दस और ग्यारह बजे के बीच में अपने सामने छोटी चौकी पर लाल वस्त्र बिछा लें, एक प्लेट पर कुंकुम से अलग-अलग चार बिन्दी बनाकर उसके बीच में **भैरव सिद्धि शमन गुटिका** स्थापित कर दें। धूप दीप दिखाकर पूजन करें फिर उसमें १०८ बार निम्न मंत्र बोलकर सियार सिंगी पर सिन्दूर चढ़ाएं-

मंत्र

ॐ क्लीं फट्।

उसके बाद तेल का चौमुखी दीपक जलाकर उसमें कुंकुम, अक्षत से दीप का पूजन करें- फिर निम्न मंत्र का पांच माला मंत्र जाप करें-

ॐ ह्रूं ह्रूं फट फट् ऐं ऐं ॐ स्वाहा।

जप समाप्ति के बाद सभी सामग्री को दक्षिण दिशा की ओर किसी सुनसान स्थान में छोड आएं, छोडते समय उधर मुडकर न देखें। घर आकर हाथ-पैर धो लें, यदि चाहें तो जल में भी प्रवाहित कर सकते हैं।

साधना सामग्री-९०/-

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में

गुरुधाम दिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

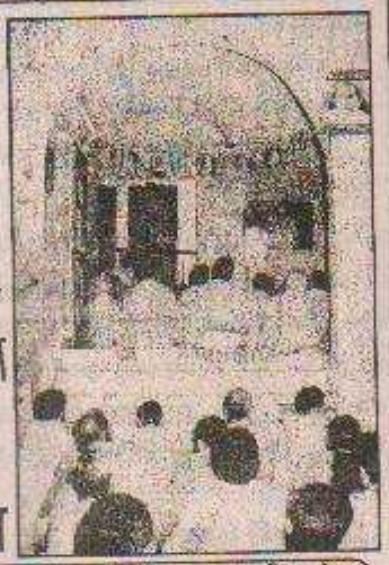

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती है, जो कि उस दिन शाम ६ से ८ बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शनिवार 23-11-2002 यौवन मंजरी अप्सरा प्राप्ति प्रयोग

किसी भी सौन्दर्य साधना को सम्पन्न करने का रहस्य छिपा होता है स्वयं सौन्दर्यवान बन जाने में और स्वयं सौन्दर्यवान बनने का रहस्य छिपा होता है अप्सरा साधना में। मुख्य रूप से यह जीवन में यौवन के वसन्त को स्थापित करने की साधना है। अप्सरा वर्ग की यौवन मंजरी अप्सरा रूप, रंग, रस एवं सम्मोहन से परिपूर्ण होकर पूर्ण श्रृंगार से अपने साधक के जीवन में माधुर्य घोल देती है। सौन्दर्य के अर्थ को तब तक समझा ही नहीं जा सकता जब तक साधक यौवन मंजरी साधना सम्पन्न न कर ले। इस साधना से धन की कोई कमी नहीं रहती। यौवन मंजरी की साधना में सफलता प्राप्त करना केवल एक अप्रतिम सौन्दर्य का साक्षीभूत बनना ही नहीं वरन प्रकारांतर से सौभाग्य का साक्षीभूत बनना, सौभाग्य का सहभागी बनना भी होता है।

24-11-2002 रविवार आत्म सम्मोहन प्रयोग

सम्मोहन एक ऐसा विज्ञान है, जिसके द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को नहीं वरन स्वयं को भी सम्मोहित किया जा सकता है। आत्म सम्मोहन साधना का एक ऐसा ही पक्ष है, जिसके द्वारा अपने मन को वश में करके सम्मोहित कर साधक सही पथ पर गतिशील कर सकता है।

१. यदि साधना में आपका मन एकाग्र नहीं हो पाता।
२. यदि आपका किसी काम में मन नहीं लगता।
३. यदि आपका मन पढ़ाई में नहीं लगता हो।
४. यदि आप में आत्म विश्वास की कमी है,
५. यदि आपको क्रोध बहुत अधिक आता है।
६. यदि आप में किसी प्रकार की कोई हीन भावना है या
७. किसी अन्य प्रकार का मनो रोग है, तो इन सभी का उपाय है **आत्म सम्मोहन।**

25-11-2002 सोमवार साबर धनदा प्रयोग

अन्य साधनाओं की अपेक्षा साबर साधनाओं के बारे में मान्यता है, कि वे शीघ्रता से सफल हो जाती है। इसका मूल कारण यह होता है कि उनमें अधिक विधि विधान, कर्मकाण्ड की जटिलता न होकर मंत्र की तेजस्विता ही मूल तत्व है। व्याकरण की दृष्टि से देखा जाए, तो साबर मंत्र बड़े ही अजीब और बेसिर पैर के लगते हैं, परंतु उन मंत्रों के एक-एक अक्षर में इतनी तीव्रता होती है, कि उनके प्रभाव को देखकर साधक स्वयं भी हैरान रह जाता है। साबर पद्धति से प्रयोग किए जाने के पश्चात साधक के दुर्भाग्य को पीछे हटना ही पड़ता है। नाथ सम्प्रदाय के योगियों की यह परम्परा रही है, कि वे किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते हैं, वे अपनी आवश्कताओं को अपने साधनात्मक बल से प्राप्त करने में विश्वास करते हैं। यह साबर धनदा प्रयोग ऐसे ही नाथ योगियों की एक पद्धति है, जिसके माध्यम से लक्ष्मी और अटूट लक्ष्मी साधक को उपलब्ध होती है। ऐसा नाथ योगियों का प्रत्यक्ष अनुभव है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं है, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि परम्परा की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्योछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन दिवसों की साधनात्मक प्रयोगों की शृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन ३ दिनों के लिये -23-24-25 नवम्बर

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- जमाकर के या उपरोक्त राशि का बैंक ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो नियोजित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

[illegible]

शक्तिपात युक्त दीक्षाएं

सामान्य महालक्ष्मी दीक्षा

प्रत्येक मनुष्य का यह स्वप्न होता है कि वह अल्प समय में ही धनवान बन जाए, कम परिश्रम में ही उसे अधिक लाभ प्राप्त हो जाए, उसका परिवार समस्त प्रकार के सुख सुविधाओं का काम कर सके और ऐसा सोचना कोई गलत कार्य भी नहीं है।

यदि आप श्रेष्ठ कार्य करना चाहते हैं, वह आध्यात्मिक हो अथवा भौतिक अर्थाभाव में दोनों ही सम्भव नहीं है। अर्थ शक्ति ऐसी शक्ति है, जिससे मनुष्य की ९० प्रतिशत समस्याओं का हल स्वतः ही सम्भव हो जाता है। यह भी कहना निरर्थक होगा कि आज के इस अर्थ प्रधान युग में यदि कोई ज्ञानी तो है परंतु निर्धन है तो उसकी कोई कद्र नहीं है। फिर शास्त्रों में कहीं ऐसा वर्णन नहीं मिलता कि दीन हीन निर्धन बन कर जीना सज्जनता के लक्षण है। **'सामान्य महालक्ष्मी दीक्षा'** मस्तक पर लिखी दुर्भाग्य की लकीरों को मिटा देने का आज के युग में उपाय है, निर्धनता समाप्त कर देने की क्रिया है। प्रत्येक साधना के भौतिक जीवन का आधार यह दीक्षा है।

सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, फोकल पॉइंट, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, टेली फैक्स : 011-7196700

स्तोत्र शक्ति

दिवस का प्रारंभ गुरु पूजन और गणपति पूजन से ही होना चाहिए, विघ्नविनाशक गणपति को देवताओं का अधिपति एवं प्रथम पूज्य माना जाता है, जिन्हों ने भगवान शंकर और माता पार्वती की परिक्रमा कर संसार में आदर्श स्थापित किया, उन गणेश का ध्यान, वंदन जीवन में निरन्तर कल्याण कारी होता है, जिन के बारे में यह कहा जाता है कि –

विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नतस्य न जायते ॥

अर्थात् विद्या प्रारंभ करते समय, विवाह के समय, गृह प्रवेश के समय, घर से बाहर जाते समय, यात्रा प्रारंभ करने से पहेले, युद्ध में जाने से पहेले, संकट के समय जो विघ्नविनाशक, वरदायक भगवान गणपति की वंदना करता है उसकी संदैव विजय होती है। क्योंकि जहां गणपति है वहां आदि देव शिव और महादेवी पार्वती भी है, वहां ऋद्धि और सिद्धि है, शुभ और लाभ है, अर्थात् जीवन का सम्पूर्ण आनन्द है। प्रस्तुत स्तोत्र गणेश वंदना का महान स्तोत्र है, जिसका नित्य प्रति और विशेष कर बुधवार को तथा प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को अवश्य ही करना चाहिए।

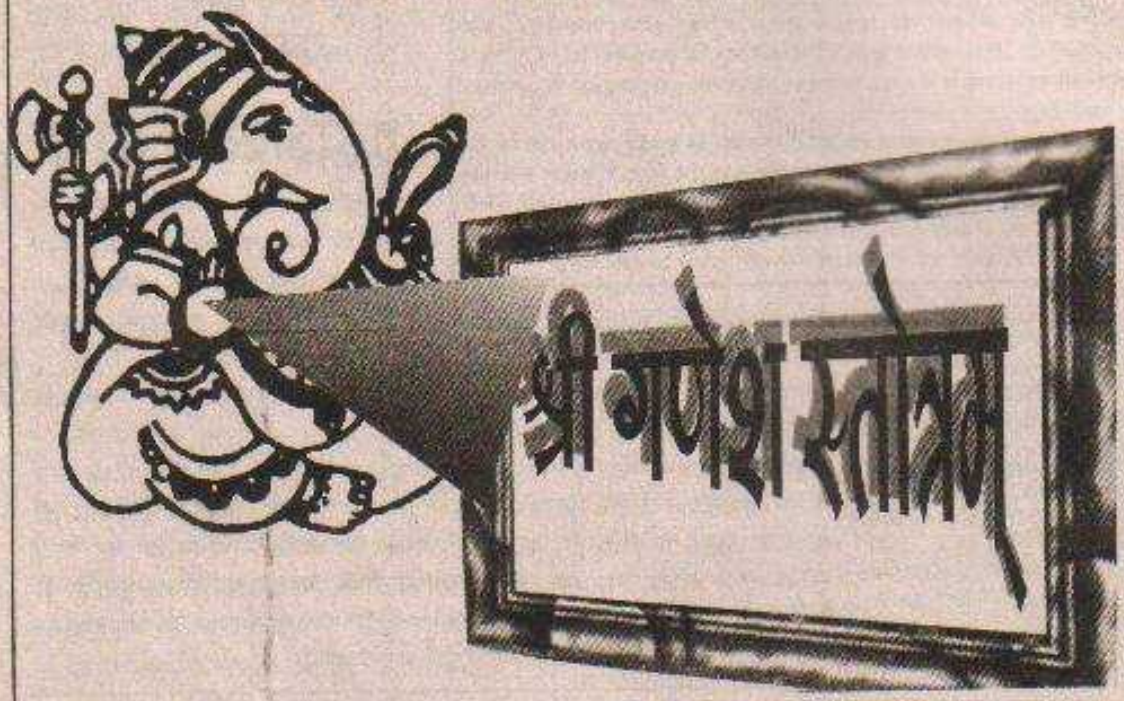

श्री गणेश स्तोत्रम्

ॐकारमाद्यं प्रवदन्ति सन्तो वाचः श्रुतीनामपि ये गुणन्ति ।
गजाननं देव- गणानतांघ्रिं भजेऽहमर्धेन्दु - कृतावतंसम् ॥१
पादारविन्दार्चन तत्पराणां संसार - दावानल भङ्ग-दक्षम् ।
निरन्तरं निर्गत-दान-तोयैस्तं नौमि विघ्नेश्वरमम्बुजाभम् ॥२
कृताङ्ग- रागं नव-कुंकुमेन, मत्तालि - मालां मद- पङ्क-लग्नाम्।
निवारयन्तं निज-कर्ण-तालैः, को विस्मरेत् पुत्रमनङ्ग-शत्रोः ॥3
शम्भोर्जटा- जूट-निवासि-गङ्गा-जलं समानीय कराम्बुजेन।
लीलाभिराराच्छिवमर्चयन्तं, गजाननं भक्ति- युता भजन्ति॥४
कुमार-भुक्तौ पुनरात्म-हेतोः, पयोधरौ पर्वत-राज-पुत्र्याः।
प्रक्षालयन्तं कर-शीकरेण, मौग्ध्येन तं नाग- मुखं भजामि॥५
त्वया समुद्धृत्य गजास्य-हस्तं, शीकराः पुष्कर-रन्ध्र-मुक्ताः।
व्योमाङ्गने ते विचरन्ति ताराः, कालात्मना मौक्तिक-तुल्य-भासः॥६
क्रीडा-रते वारि-निधौ गजास्ये, वेलामतिक्रामति वारि-पूरे।
कल्पावसानं परिचिन्त्य देवाः, कैलास-नाथं श्रुतिभिः स्तुवन्ति॥७
नागानने नाग-कृतोत्तरीये, क्रीडा-रते देव-कुमार-सङ्घैः।
त्वयि क्षणं काल-गतिं विहाय, तौ प्रापतुः कन्दुकतामिनेन्दु॥८
मदोल्लसत्-पञ्च- मुखैरजस्रमध्यापयन्तं सकलागमार्थान्।
देवान् ऋषीन् भक्त-जनैक-मित्रं, हेरम्बमर्कारुणमाश्रयामि॥९
पादाम्बुजाभ्यामति-कोमलाभ्यां, कृतार्थयन्तं कृपया धरित्रीम्।
अकारणं कारणमाद्य-वाचां, तद्नाग-वक्त्रं न जहाति चेतः॥१०
येनापितं सत्यवती-सुताय, पुराणमालिख्य विषाण-कोटया।
तं चन्द्र-मौलेस्तनयं तपोभिराराध्यमानन्द-घनं भजामि॥११
पदं श्रुती-नामपदं स्तुतीनां, लीलावतारं परमात्म-मूर्तेः।
नागात्मको वा पुरुषात्मको वेत्यभेद्यमाद्यं भज विघ्न-राजम्॥१२
पाशांकुशौ भग्नरदं त्वभीष्टं, करैर्दधानं कर-रन्ध्र-मुक्तैः।
मुक्ता -फलाभैः पृथु-शीकरौघैः, सिञ्चन्तमङ्गं शिवयोर्भजामि॥१३
अनेकमेकं गजमेक -दन्तं, चैतन्य-रूपं जगदादि-बीजम्।
ब्रह्मेति यं ब्रह्म-विदो वदन्ति, तं शम्भु-सूनुं सततं भजामि॥१४
अङ्के स्थिताया निज-वल्लभाया, मुखाम्बुजालोकन-लोल-नेत्रम्।
स्मेराननाब्जं मद-वैभवेन, रुद्धं भजे विश्व- विमोहनं तम्॥१५
ये पूर्वमाराध्य गजानन! त्वां, सर्वाणि शास्त्राणि पठन्ति तेषाम्।
त्वत्तो न चान्यत् प्रतिपाद्यमस्ति, तदस्ति चेत सत्यमसत्य-कल्पम्॥१६
हिरण्य वर्णं जगदीशितारं, कवि पुराणं रवि- मण्डलस्थं।
गजाननं यं प्रवदन्ति सन्तस्तत् काल- योगैस्तमहं प्रपद्ये॥१७
वेदान्त गीतं पुरुषं भजेऽहमात्मानमानन्द- घनं हृदिस्थम्।
गजाननं यन्महसा जनानां, विघ्नान्धकारो विलयं प्रयाति॥१८
शम्भोः समालोक्य जटा-कलापे, शशाङ्क-खण्डं निज-पुष्करेण।
स्व-भग्न-दन्तं प्रविचिन्त्य मौग्ध्यादाकर्ष-कामः श्रियमातनोतु॥१९
विघ्नार्गलानां विनिपातनार्थं, यं नारिकेलैः कदली-फलाद्यैः।
प्रभावयन्तो मद-वारणास्यं, प्रभुं सदाऽभीष्टमहं भजेतम्॥२०
यज्ञैरनेकैर्बहुभिस्तपोभिराराध्यमाद्यं गज राज वक्त्रम्।
स्तुत्याऽनया ये विधिना स्तुवन्ति, ते सर्व-लक्ष्मी-निधयो भवन्ति॥२१

॥ श्री गणेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अर्थ :-

१. सभी शास्त्र, वचन जो भगवान द्वारा रचे गये तथा श्रवण के योग्य है, वे वचन तथा सिद्ध वचन जिन्हें **'आद्य ॐकार'** कहते है। देवता छंद वंदना करते है, तथा मस्तक पर अर्ध चन्द्र आभूषण के समान शोभायमान है, उन गजानन का मैं वंदन करता हूं।

२.आपके शरीर में मद् द्रव्य निरन्तर प्रवाहित होता रहता है, और यह मद् द्रव्य संसारिक व्यक्तियों की दाह, अग्नि को नष्ट करने में समर्थ है, ऐसे महान रक्त कमल के समान आभा वाले विघ्नेश्वर को मैं प्रणाम करता हूं।

३.आपके स्वरुप में नित्य नवीन कुमकुम का लेपन किया जाता है, तथा अपने दोनों कर्ण को हिलाकर मद् में डूबे हुए भंवरों को हटाते रहते है। आप कामदेव को हीन करने वाले भगवान शिव के पुत्र है, आपका मैं निरन्तर स्मरण करता हूं।

४.भगवान गणपति अपने करकमलों द्वारा भगवान महेश्वर के जटाजूट से गंगा जल लेकर उसे क्रीडा करने के बहाने से भगवान शंकर को विराजमान रखते है, जिससे गंगा निरन्तर बहती रहे, उन श्री गजानन की मैं पूर्ण भक्ति सहित वंदना करता हूं।

५.जो अपनी सूंड मे जल भरकर आदि शक्ति मां पार्वती का अभिषेक करते है, और उसे निरन्तर प्रसन्न करते है, उन भगवान गणपति का मैं सदैव पूजन वंदन करता हूं।

६.हे दिव्य देव गजानन ! आप द्वारा अपनी सूंड में उठाकर जो जल बिन्दु आकाश की ओर फैलाये जाते है वही ही जल बिन्दु काल क्रम में तारे बनकर प्रकाशित होकर गगन मंडल मे घूमते है, मैं आपका वंदन करता हूं।

७.आपकी महिमा विशाल है, जब सागर में जल क्रीड़ा करते है तो जल राशि उछल-उछल कर किनारे तोड़ने लगती है, और देवता यह सोचने लगते है की प्रलय आ गया है, वे भगवान शंकर का आह्वान करने लगते है। उन भगवान गणपति की मैं निरन्तर वंदना करता हूं।

८.आप अपने बाल रूप में जब उत्तरीय धारण कर देवताओं के साथ क्रीड़ा करते है, तब यह महान लीला देखकर सूर्य और चन्द्र भी अपनी काल गति भूलकर आपके सन्मुख क्रीड़ा कन्दूक अर्थात आपके सन्मुख गेंद बनकर उपस्थित हो जाते है। ऐसे भगवान गणपति की मैं वंदना करता हूं।

९.आप अपने पंचमुखी द्वारा सदैव देवों और ऋषियों को गूढ़तम आगम शास्त्रों का अर्थ बताते है, और उगते हुए सूर्य के समान रक्त वर्ण के कारण आपका नाम 'हेरम्ब' है तथा भक्तो के एक मात्र मित्र है। उन भगवान गणपति की शरण में आकर मैं अपने धन्य धन्य अनुभव करता हूं।

१०.जो अपने चरण कमलों के स्पर्श द्वारा इस पृथ्वी को धन्य करते है, तथा अपनी सिद्ध वाणी के कारण जगत के सभी कार्यों के कारण है, और चेतना सदैव आपके पास विद्यमान रहती है, उन भगवान गजानन का मैं वंदन करता हूं।

११.आपकी महिमा तो उतनी विशाल है कि आपने विशाल दांतो के अग्रभाग से पुराण और श्रीमद् भागवत को लिपि बद्ध कर दिया और जो आनन्द मय **'चन्द्रमौली भगवान शंकर'** के पुत्र है ऐसे ज्ञान के प्रकाश गजानन की मैं वंदना करता हूं।

१२.श्रुति, पुराण, स्मृति के द्वारा भी आपका स्तवन पूर्णरूप से नहीं किया जा सकता और परमात्मा मूर्ति के लीलारुपी अवतार है, जो गजमूर्ति स्वरुप है या पुरुष मूर्ति स्वरुप है यह समझ के परे है उन आदि देव विघ्नहर्ता गजानन की मैं वंदना करता हूं।

१३.आपके स्वरुप में चार हाथों में पाश, अंकुश, भग्नदंत, और वरमुद्रा धारण किये हुए है तथा अपने सूंड के छिद्र से निकलती हुई मोती कणों जैसी जलधारा से भगवान शिव और भवानी के साक्षात शरीर का अभिषेक करते है, उन भगवान गजानन की मैं वंदना करता हूं।

१४.जो एक होकर भी अनेक रुप अर्थात् द्वादश नामों से शोभा पाते है, जो चैतन्य रुप है, जो जगत के आदि बीज है, ब्रह्मविद्या के जानकार, जिन्हें ब्रह्म कहते है, उन शम्भुपुत्र श्रीगणेश की मैं वंदना करता हूं।

१५.जिनके दांये और बांये ऋद्धि और सिद्धि विराजमान है, जिनके मुख कमल पर सदा कोमल मुस्कान रहती है, तथा अपने मस्तक से निकलने वाली मदमाल से सदैव प्रसन्न रहते है, उन जगत मोहक गणपति की मैं वंदना करता हूं।

१६.हे देवाधिदेव गजानन ! जो सर्वप्रथम आपकी पूजाकर शास्त्रों का अध्ययन करते है, उन्हें आपके स्वरुप

का दृश्य प्राप्त होता है, संसार के अन्य दृश्य सामान्य प्रतीक होते है, उन गजानन की मैं वंदना करता हूं।

१७.आपके शरीर की शोभा स्वर्ण के समान है, और गगन मंडल, आदित्यमंडल में स्थित देवता, सप्तऋषि, साधु 'गजानन' कहते है, मेरी यही इच्छा है कि उन भगवान गणेश को मैं निरन्तर स्मरण कर प्राप्त करूं।

१८.जिनके तेज से विघ्नरुपी अंधकार का नाश हो जाता है, वेदांत, शास्त्र जिन्हें आनन्दघन परमात्मा के नाम से जाना जाता है, उन्हीं गजानन को मैं अपने हृदय में स्थापित होने कि प्रार्थना करता हुए वंदना करता हूं।

१९. जो गणपति अपने बाल स्वरुप में भगवान शंकर के जटा में स्थित चंद्रखण्ड को अपना टूटा हुआ दांत समझकर खींचने का प्रयास करते है, और शंकर प्रसन्न होते है, ऐसे भगवान गणेश मेरे ऐश्वर्य की वृद्धि करें, उनकी मैं वंदना करता हूं।

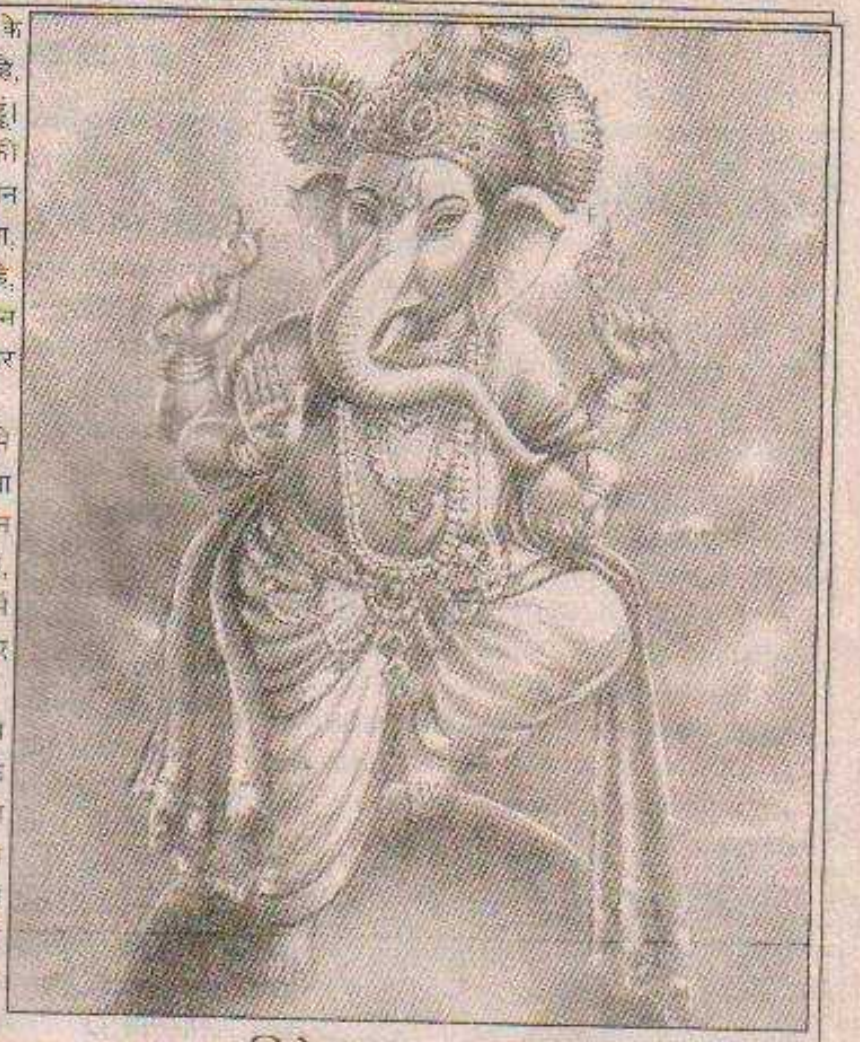

२०.अपने जीवन में बाधाओं को हटाने के लिए भगवान गजानन का ध्यान करते हुए सभी लोग नारियल, कदली फल, केला आदि से पूजा अर्चना करते है, और जो अपने भक्तों को अभिष्टफल प्रदान करते है, ऐसे भगवान गणपति का मैं वंदन करता हूं।

फलश्रुति

२१.इस स्तोत्र के अंतिम श्लोक में लिखा है कि अनेक प्रकार के यज्ञो और तप के द्वारा जिन महादेव पुत्र की उपासना की जाती है और जो गजराज मुख भगवान गणपति के स्तोत्र का पाठ करते है, उन्हें जीवन में विघ्नों से मुक्ति मिलती है, और भगवती लक्ष्मी की कृपा निरन्तर प्राप्त होती रहती है।

विशेष

अपने पूजा स्थान में गुरु चित्र, गुरुविग्रह, गुरु यंत्र के साथ पारदेश्वर अर्थात भगवान शंकर के रस से निर्मित **पारद गणपति** की स्थापना कर उन्हें नित्य कुमकुम का तिलक लगाकर जो व्यक्ति, साधक गणेश स्तोत्र, गणेश मंत्र **'ॐ गं गणपतयै नमः'** तथा गणेश स्तुति का पाठ करता है उसे जीवन के सभी विघ्नो में विजय प्राप्त होती है, क्योंकि गणपति का पारदेश्वर स्वरूप पूर्ण विघ्नहर्ता और विजय प्राप्ति स्वरूप माना गया है, यदि आपके पूजा स्थान में पारदेश्वर गुरुपादुका, पारदेश्वर गुरु यंत्र, और पारदेश्वर शिवलिंग तथा पारदेश्वर गणपति नहीं है तो वह पूजा स्थान पूर्ण नहीं है, आपके पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठयुक्त ये चारों स्वरूप अवश्य ही स्थापित होने चाहिए।

11-12 अक्टूबर-2002

शिविर स्थल : सावरकर बाल विहार, रेलवे स्टेशन के पास विदिशा (म.प्र.)

दस महाविद्या साधना शिविर

आयोजक : ई. एन.के. श्रीवास्तव-35121, 982629152 ❍ ठाकुर सिंह बघेला-42404,9827218717 ❍ श्री बी.पी. दुबे-36652 ❍ कुमार निखिल श्रीमाली ❍ सुश्री उषा ❍ श्री बी.एल. सुमन ❍श्री आर.सी. चौरसिया-32658 ❍ श्री सत्येन्द्र कुमार-65847 ❍श्री एम.एल. परस्ते ❍अमृत लाल प्रजापति ❍ डालचन्द अहिरवार ❍नारायण चंदेरिया-35130 ❍ श्री बी.एल. अहिरवार ❍ रामयज्ञ यादव ❍ श्री उदय चौहान ❍ ई.नी. आनन्द राव ढोके ❍रजा राम प्रजापति (गुना)-07542- ❍ श्री अशोक सोनी-66126, 9826291873 ❍ श्री ठाकुर प्रसाद लोधी -50816 ❍ई. एम.एल. ठाकुर-34404 ❍ श्रीमती शोभा चौहान-35615 ❍श्री पी.एल. प्रजापति-30665 ❍श्री हमरतसिंह मीना-3694 ❍ श्री के.एल. अहिरवार ❍ श्री जे.पी. शर्मा-51286 ❍ लेखराजसिंह बघेल, (सिरोंज), धर्मेन्द्र जोशी, (सागर) ❍ श्री एस.एल. धुर्वे (बैतूल) ❍ बाबूलाल-07375-45925 ❍ मनोज ताम्रकार ❍राजेन्द्र कुमार सक्सेना ❍ आरिफ खान निखिल -0755-771996

19-20 नवम्बर 2002

सर्वसिद्धि सन्यास दिवस महोत्सव, रायपुर (छत्तीसगढ़)

शिविर स्थल– स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स, रायपुर

आयोजक : सर्वश्री. आर.सी. सिंह, बिलासपुर (07818–33343) ❍ के.के. तिवारी, रायपुर (0771–242680) ❍ दिनेश सैनी, रायपुर (0771–652028) ❍ उमेद शाह, रायपुर (0771–225158) ❍ विमलकांत अवस्थी, रायपुर (0771–573010) ❍ सुरेन्द्र साहू, रायपुर (0771–254230) ❍ बी.सी. साहू, रायपुर (0771–262892) ❍ आर.एस मिश्रा, रायपुर (0771–573191) ❍ टी.एस. चतुर्वेदी, रायपुर (0771–411692) ❍ अशोक अग्रवाल, रायपुर (98261–20975) ❍ सेवाराम वर्मा, सिलतरा (07721–64348) ❍ एन.के.नायक, सिलयारी, ❍ जागेश्वर साहू, फिरोश्वर, ❍ नरेन्द्र साव, सरायचाली, ❍ महेन्द्र पटेल, बसना, ❍ भगवती साहू, महासमुन्द, ❍ जी.आर.घाटेगे, गरियाबंद, ❍ अमृतलाल साहू, फरसिया, (नगरी) ❍ गंगाराम साहू, परतेवा (07701–60106) ❍ श्रीमति के.डी. चन्द्रवंशी, धमतरी (07722–32384) ❍ श्रीमति सुनिता शर्मा, धमतरी (07722–38030) ❍ संजय सोम, कांकेर (07868–22777) ❍ जगमोहन वर्मा, कोण्डागांव (07786–42772) ❍ राधाकृष्ण कुशवाहा, जगदलपुर (07782–21388) ❍ एस. आर. कल्याणी, निपानी (दुर्ग) ❍ तुकाराम गिलोरकर, डोंगरगांव ❍ आर.के. मरकाम, गयानगर, दुर्ग (0788–326286), ध्रुव चन्द्राकर (0788–333718) ❍ श्रीमति लक्ष्मी रानू, भिलाई, (0788–222298) ए.रंगारी, भिलाई ❍ लोकेश राठौर, बिलासपुर, (07752–44995) ❍ संतोष सोनी, चांपा (07819–45845) ❍ विनोद साहू, तनौद ❍ आर.के.सोनी अखिल डेस, कोरबा (07749–21636) ❍ सुदामा चन्द्रा, सक्ति ❍ बूंदरामजी पटेल, रायगढ़ (07762–21603)

आप गुरु भाई अपने स्थान पर जो भी कार्यक्रम करते हैं, उस संबंध में विवरण गुरुदेव के पास दिल्ली पते पर अवश्य भेजें यदि कोई शिविर आयोजन करना चाहते हैं तो पूर्ण विवरण सहित पत्र गुरुदेव के नाम दिल्ली पते पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81
With Registrar Newspapers of India
Posting Date 14-15 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2002
Licence to Post without Pre Payment
Licence No. RJ/WR/PP/44/2002

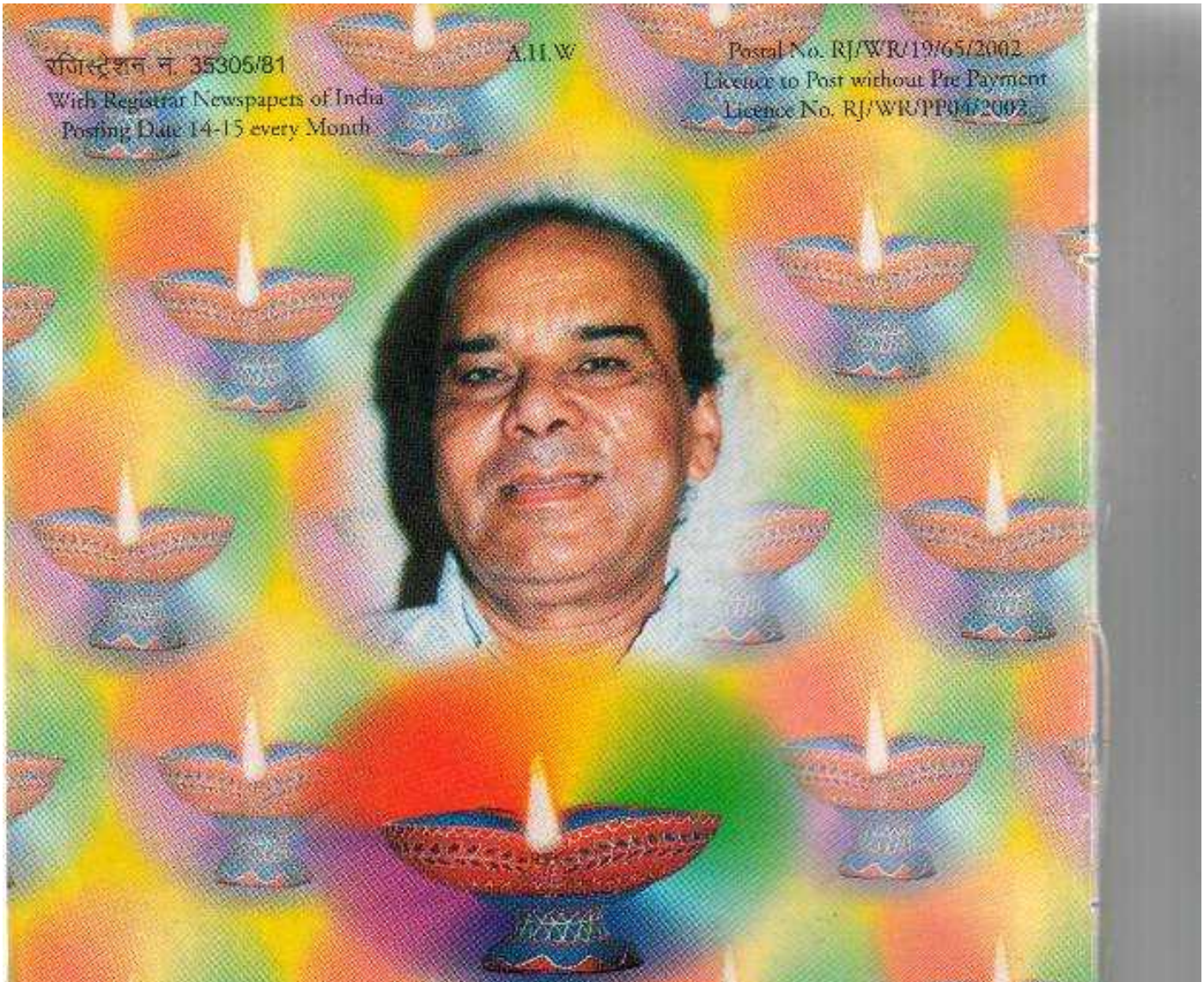

माह : नवम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे।
इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 बजे से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

दिनांक
1-2-3 नवम्बर
स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
23-24-25 नवम्बर
स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

वर्ष - 22

अंक - 10

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-432209,433623, टेलीफैक्स-0291-432010
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, टेली फैक्स 11-7196700

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of hinduism server]
KAPWING